

श्री बेनालीस दशा हुम्मड दिगंबर जैन चोखला पंच मुमुक्षु समाज ट्रस्ट के उपलक्ष्य में
पूज्य श्री कुन्दकुन्द कहान धर्मरत्न पं. श्री वाबुभाई महेता
दिगम्बर जैन सत् समागम पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट, धणप (गुजरात) संचालित
अध्यात्म साधना तीर्थ "चैतन्यधाम" अंतर्गत
संघपति श्रीमती चेतनाबेन सुभाषचंद्र कोटडीया-वापी के सानिध्य में

श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली मंगलयात्रा

"कहान चैतन्य एक्सप्रेस २०२२" चैतन्यधाम

(पूजन- स्वाध्याय -भक्ति)

प्रभु की शांतछवि को निरखें,
परमतत्त्व को अब हम परखें।
शाश्वत ज्ञायक प्रभु अविकारी,
तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥



श्री बेतालीस दशा हुम्मड दिगंबर जैन चोखला पंच मुमुक्षु समाज ट्रस्ट के उपलक्ष्य में

पूज्य श्री कुन्दकुन्द कहान धर्मरत्न पं. श्री बाबुभाई महेता दिगम्बर जैन सत् समागम पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट, धणप (गुजरात) संचालित

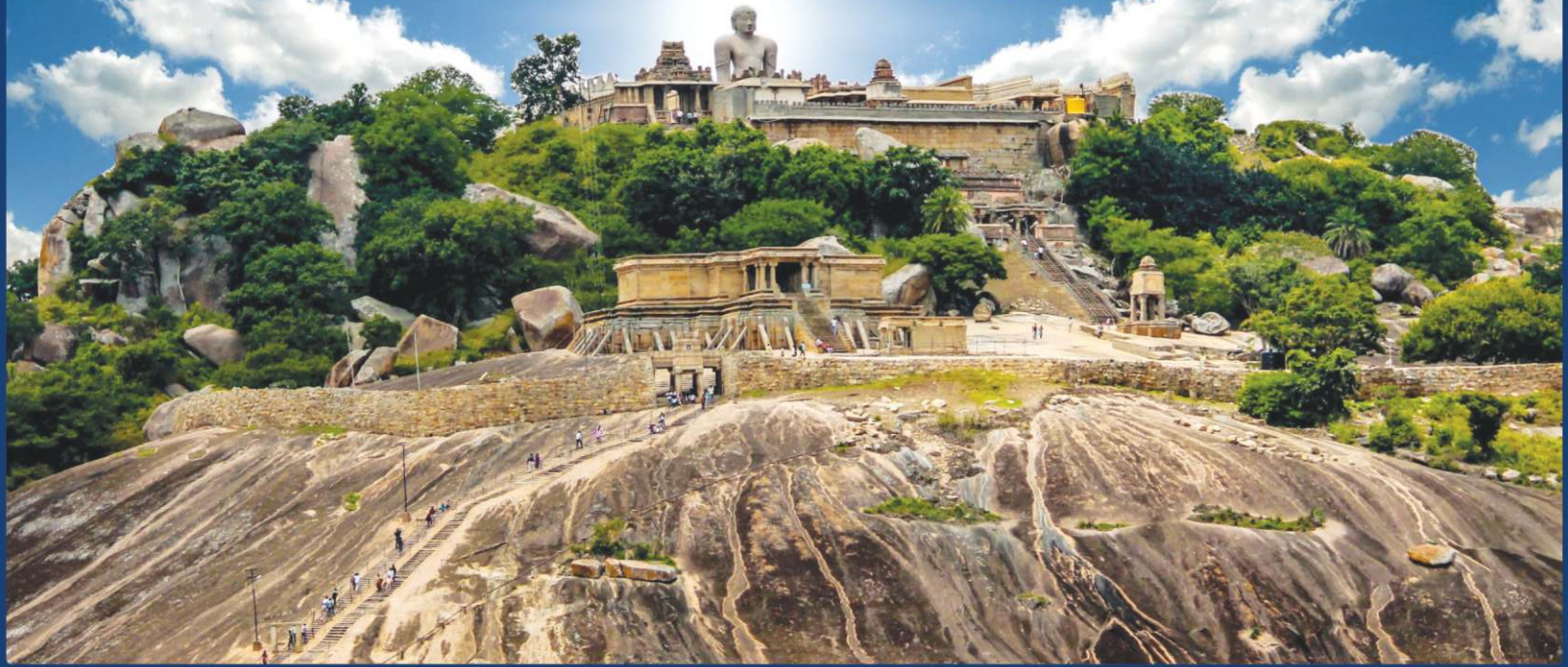
अध्यात्म साधना तीर्थ "चैतन्यधाम" अंतर्गत

संघपति श्रीमती चेतनाबेन सुभाषचंद्र कोटडीया-वापी के सानिध्य में

स्पेशीयल ट्रेन "कहान चैतन्य एक्सप्रेस २०२२ " चैतन्यधाम आयोजीत

श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली मंगलयात्रा

वीर संवत २५४९ विक्रम संवत २०७९ मार्गशीर्ष कृष्ण ९ शनिवार दिनांक १७-१२-२०२२ से पौष शुक्ल ६ बुधवार दिनांक २८-१२-२०२२



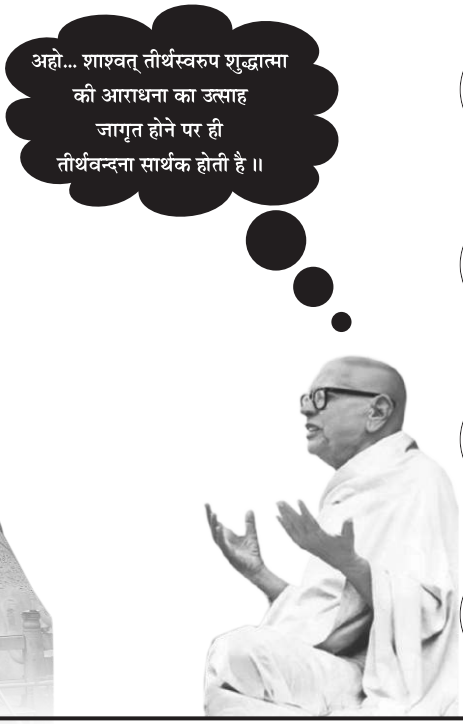
अध्यात्म साधना तीर्थ ''चैतन्यधाम'' अंतर्गत

संघपति श्रीमती चेतनाबेन सुभाषचंद्र कोटडीया -वापी के सानिध्य में

श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली मंगलयात्रा

''कहान चैतन्य एक्सप्रेस २०२२ ''





प्रकाशक

पूज्य श्री कुन्दकुन्द कहान धर्मरत्न

पं.श्री बाबुभाई महेता दिगम्बर जैन सत् समागम पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट

चैतन्यधाम, धणप (गुज.)

सौजन्य : सीमाबेन हितेषकुमार गांधी - सलाल, बोरीवली

पारुलबेन दिलीपकुमार शाह - सलाल, भायंदर

"चैतन्य धाम"

चिलोडा-हिंमतनगर नेशनल हाईवे नं.48, मु,पो. धणप, जि. गांधीनगर-382355.

Mo.9409274139 | Email.chaitanyadham@gmail.com | Website: www.chaitanyadham.com

॥ अनुक्रमणिका ॥

क्रम	विषय (पूजन, विधान, स्वाध्याय,संस्मरण)	पृष्ठ संख्या
1	श्रावक क्या करे ? (पुज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी)	01
2	प्रकाशकीय	02
3	चैतन्यधाम परिचय	03
4	श्री प्रतिमा प्रक्षाल पाठ (पं. अभयकुमारजी कृत)	10
5	श्री विनय पाठ (ब्र.रविन्द्रजी आत्मन)	14
6	पूजा पीठिका (हिन्दी)	15
7	श्री देव-शास्त्र-गुरु पुजन (बाबु युगलजी कृत)	18
8	श्री बाहुबली पूजन (कविवर राजमलजी पवैया कृत)	23
9	श्री सरस्वती पूजन (पंडित द्यानतरायजी कृत)	27
10	श्री बाहुबली पूजन (ब्र.रविन्द्रजी आत्मन)	30
11	श्री गोम्मटेश्वर तीर्थ पूजन (पं.श्री राजेन्द्रकुमारजी-जबलपुर कृत)	33
12	श्री गोम्मटेश्वर पूजन (कविवर राजमलजी पवैया कृत)	37
13	श्री मुड बिद्री अतिशयक्षेत्र पूजन (कविवर राजमलजी पवैया कृत)	41
14	श्री चन्द्रप्रभु पूजन (ब्र.रविन्द्रजी आत्मन)	47
15	श्री बाहुबली भगवान विधान (पं.श्री राजेन्द्रकुमारजी-जबलपुर कृत)	50
16	अर्घ्यावली	69
17	महाअर्घ्य	74
18	शांति पाठ	75
19	क्षमापना	75
20	निर्वाण काण्ड (भाषा)	77
21	श्री समयसार (पूर्वरंग अधिकार-गाथा 31,32,33 कलश 27,28)	79
22	पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के यात्रा संस्मरण	89
23	श्री श्रुत स्कन्ध विधान (कविवर राजमलजी पवैया कृत)	103

॥ अनुक्रमणिका ॥

क्रम	विषय (भक्ति, वंदना, स्तुति, पाठ खण्ड)	पृष्ठ संख्या
1	तीर्थवंदना	09
2	महावीर वंदना	09
3	जिनेन्द्र स्तुति	13
4	यह धर्म है आतम ज्ञानी का..	13
5	ऊँचे-ऊँचे शिखरो वाला है...	22
6	निर्ग्रन्थो का मार्ग हमको प्राणो से भी प्यारा है...	29
7	निरखत जिन चंद्र वदन...	36
8	श्री चोबीस तीर्थंकर स्तुति...	46
9	जिनवर दरबार तुम्हारा...	68
10	श्री बाहुबली स्तुति	76
11	निर्वाणकाण्ड (भाषा)	77
12	वीतरागी देव तुम्हारे जेसा...	83
13	अमूल्य तत्त्व विचार	85
14	अपूर्व अवसर	86
15	श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ स्तुति	100
16	निर्ग्रन्थ भावना	101
17	हमको भी बुलवालो स्वामी...	101
18	जीयरा... जीयरा... जीयरा...	102
19	समाधि भावना	131
20	कैसी सुन्दर जिन प्रतिमा	132
21	स्वर्ग से सुन्दर अनुपम	132
22	आत्म-कीर्तन	133
23	आज हम जिनराज	133

।। श्रावक क्या करे ? ।।

श्रावक तो हमेशा देवपूजा करे, देव अर्थात् सर्वज्ञदेव, उनका स्वरुप पहचानकर अनके प्रति बहुमान पूर्वक रोज रोज दर्शन-पूजन करे । पहले ही सर्वज्ञकी पहचानकी बात कही थी । स्वयं ने सर्वज्ञको पहचान लिया है और स्वयं सर्वज्ञ होना चाहता है वहाँ निमित्तरुपमे सर्वज्ञताको प्राप्त अरहंत भगवान के पूजन बहुमानका उत्साह धर्मीको आता है।

जिनमंदिर बनवाना, उसमे जिनप्रतिमा स्थापन करवाना, उनके पंचकल्याणक पूजा-अभिषेक आदि उत्सव करना, ऐसे कार्यो का उल्लास श्रावकको आता है, ऐसी इसकी भूमिका है; इसलिये उसे श्रावक का कर्तव्य कहा है। जो उसका निषेध करे तो मिथ्यात्व है और मात्र इतने शुभराग को ही धर्म समझे तो उसको भी सच्चा श्रावकपना होता नही ऐसा जानो। सच्चे श्रावकको तो प्रत्येक क्षण पूर्ण शुद्धात्माके श्रद्धानरुप सम्यकत्व वर्तता है और उनके आधार से जितनी शुद्धता प्रगट हुई उसे ही धर्म जानता है। ऐसी दृष्टिपूर्वक वह देवपूजा आदि कार्यो में प्रवर्तता है।

श्री समंतभद्रस्वामी, श्रीमानतुंगस्वामी आदि महान मुनियोंने भी सर्वज्ञदेवकी नम्रता पूर्वक महान स्तुति की है: एक भवावतारी इन्द्र भी रोम रोम उल्लसित हो जाये ऐसी अद्‌भूत भक्ति करता है।।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

"ચૈતન્ય ધામ"

चिलोडा-हिंमतनगर नेशनल हाईवे नं.48, मु,पो. धणप, जि. गांधीनगर-382355.

Mo.9409274139 | Email.chaitanyadham@gmail.com | Website: www.chaitanyadham.com

।। प्रकाशकीय ।।

तीर्थ हमारी सांस्कृतिक धरोहर एवं धार्मिक उर्जा के केन्द्र है। अत्यंत प्राचिन काल से श्रावकगण तीर्थंकरों के कल्याणकों से विभूषित पावन क्षेत्रों (जन्म भूमि, दीक्षास्थली, तपस्थली, निर्वाण भूमि आदि) की वंदना कर स्वयं को कृत्य-कृत्य अनुभव करते रहे हैं। महान आत्माओं की मोक्षभूमी, सिद्धक्षेत्रों, अतिशयक्षेत्रों एवं श्रमण संस्कृति से संबंद्ध अन्य क्षेत्रोंकी वंदन करने की अभिलाषा प्रत्येक श्रावक के मन में अवश्य रहती हैं। इन क्षेत्रों की वंदना ओर अर्चना के मध्य उपजे प्रशस्त भावों से अनुप्राणित होकर श्रावकगण आत्मसाधना हेतु तीर्थो की वंदना करते हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की प्रेरणा स्वरुप नर भव को सफल करने तथा अपने परिणामों की विशुद्धि हेतु श्री कहान चैतन्य एक्सप्रेस-२०२२, चैतन्यधाम का आयोजन निश्चित ही सार्थक सिद्ध होगा। श्रावक के षट्आवश्यकों का पालन एवं तीर्थो की विशेष महिमा स्वरुप अतिशय क्षेत्रों की पूजन एवं स्वाध्याय में निमित्तभूत संकलन को प्रकाशित करते हुए कहान चैतन्य एक्सप्रेस-२०२२, चैतन्यधाम परिवार अत्यंत हर्ष का अनुभव कर रहा है।

इस पुस्तक को वर्तमान सुंदर / आकर्षक रुप में संकलन और प्रकाशित करने हेतु वसंतभाई शाह, पं.श्री सचिनजी शास्त्री, सुनीलभाई शाह एवं सभी सहयोगियों को धन्यवाद देते है एवं आशा करते है की भविष्य में भी इसी प्रकार की समाजोपयोगी कृतियो को सम्पादित /प्रकाशित करते रहेगें।

विश्वास है कि सभी भावि सिद्ध आगम-अध्यात्म एवं भक्ति रुपी त्रिवेणी के झरनों में स्नान कर निश्चित ही कर्मो का प्रक्षालन करेंगें।

सुभाषभाई कोटडीया
चेरमेन, कहान चैतन्य एक्सप्रेस २०२२

अनिलकुमार ताराचंद गांधी
उप प्रमुख

अमृतलाल चुनीलाल महेता
प्रमुख

प्रतिक चंद्रकान्तभाई शाह
मंत्री

राजुभाई वाडीलाल शाह
मंत्री

वसंतकुमार मीठालाल शाह
सहमंत्री

चैतन्यधाम-धणप

ભારતનું ગૌરવવંતુ તીર્થ સ્થાન

"ચૈતન્ય ધામ"

ચૈતન્યની ચેતનાને ચેતનવંતુ રાખવાનું ધામ

।। परिचय ।।

चैतन्यार्थी साधर्मी बन्धुवर !

सादर चैतन्य वन्दन!

कालातीत समय के परम पुनीत शलाका पुरुषों में अन्तिम कुलकर नाभिराय के पौत्र एवं श्री ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती के भारत देश का कण-कण पावन था। भगवान श्री महावीर स्वामी, गौतम गणधर एवं भगवत् कुन्दकुन्द देव आदि आचार्यों द्वारा इस धरा को ओर भी दिव्यध्वनि (तत्त्वज्ञान) द्वारा सींचा गया। ऐसी सुगन्धमय धरा के गुजरात प्रांत में एक और सूर्य के रुप में पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी का उदय हुआ।

इसी सूर्य की दैदीप्यमान आभा से बेतालीस दशा हुम्मड दिगम्बर जैन चोखला पंच मुमुक्षु समाज ट्रस्ट के अन्तर्गत पूज्य श्री कुन्दकुन्द-कहान धर्मरत्न पण्डित श्री बाबुभाई महेता दिगम्बर जैन सत्समागम पब्लिक चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित अध्यात्मसाधना तीर्थ चैतन्यधाम रुपी पुष्प खिला। यह तीर्थधाम न केवल मुमुक्षु समाज को, अपितु जैन धर्मकी यशोगाथा को ओर भी गौरन्वान्वित करता है।

आनन्द की खलबली मचा देनेवाला चैतन्यधाम का प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक 28.11.2008 से 03.12.2008 तक अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक देश-विदेश से पधारे विद्वानों एवं मुमुक्षु साधर्मीजनों के सहयोग से ऐतिहासिक रुप में सानन्द सम्पन्न हुआ।

कार्यालय, विश्राम-गृह और आरोग्य-भवन

संकुल में प्रवेश करते ही सुन्दर चैतन्य-वाटिका में यातायात आवागमन हेतु विशाल पार्किंग है; साथ ही साधर्मी भव्य जीवों का आत्मा की आराधना करने के लिए स्वागत करता हुआ विशाल मुख्य प्रवेशद्वार सुशोभित है, जो कि प्राचीन एवं आधुनिक कला का उत्कृष्ट निदर्शन है।

संकुल के सरल, न्यायिक और तटस्थ संचालन हेतु कार्यालय, साधर्मियों की विश्रान्ति हेतु विश्राम-गृह, निकटवर्ती गाँवों के जरुरतमंद लोगों के शारीरिक रोगों के उपचार हेतु आरोग्य-भवन का निर्माण भी किया गया है।

इन सबके मध्य सीमन्धर स्वामी की दिव्य देशना और श्रीमद् भगवत् कुन्दकुन्दाचार्य देव के पंच परमागमों के रहस्यों को प्रकट करने वाले, युगसृष्टा पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी की धवल पाषाण से निर्मित 101 इंच की प्रतिकृति का दर्शन होता है।

आनंद के सागर में झूलते यह संत मानो यह कह रहे है कि हें भव्यो ! पर-वैभव में तो अनन्तों बार विश्राम किया, रोगी-मलिन शरीर को भी निरोग-सुन्दर बनाने का पुरुषार्थ किया । अब इस चैतन्यधाम में आकर अपने चैतन्यनाथ की प्राप्ति हेतु

स्वाध्याय भवन-स्वाध्यायःपरमं तपः ।

इस पंचमकाल में तीर्थंकरो के विरह को भी जो भुला दे, ऐसी तीर्थंकरों की साक्षात् वाणी, जिनवाणी के स्वाध्याय हेतु श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन का निर्माण किया गया है, जिसका क्षेत्रफल 10,000 वर्गफूट है। इसमें 2000 स्वाध्यायी साधर्मी जिनवाणी का श्रवण-पठन कर सकते हैं। आधुनिक तकनीक से निर्मित हॉल में प्रथमानुयोग के सुन्दर चित्र, रत्न जड़ित जिनवाणी और महान जिनशासन के रहस्य को उद्घाटित करने वाले आचार्यों, महापुरुषों एवं हमारे लिए प्रेरणास्त्रोत विद्वजनों के चित्र देखकर साधर्मियों के रोम-रोम पुलकित हो जाते हैं । यही स्वाध्याय-भवन की अदभूत शोभा है।

उक्त पंक्ति को सार्थक करता हुआ, भव्य एवं विशाल 1008 श्री महावीर स्वामी दिगम्बर जिनमन्दिर है। इसका क्षेत्रफल 8000 वर्गफुट है। सम्पूर्ण भारत में पहली बार पंचधातु से निर्मित पद्मासन श्री महावीर भगवान की 71 इंच की, श्री सीमन्धर भगवान एवं श्री पार्श्वनाथ भगवान की 61 इंच की; इसके साथ ही श्री नेमिनाथ भगवान, श्री शान्तिनाथ भगवान की 65 इंच की एवं 9 इंच की श्री आदिनाथ भगवान और श्री चन्द्रप्रभ भगवान की पद्मासनस्थ जिन प्रतिमाएँ धवल पाषाण से निर्मित विशाल वेदी पर विराजमान है।

मन्दिर में विशाल धुम्मट में रचित काँच की दर्शनीय कला आचार्यों की प्रतिकृति, उनके चरण एवं मोक्षमार्ग का निरुपण करनेवाली जिनवाणी विराजमान है, जो इसकी सुन्दरता की परिचायक है। मन्दिर के ऊपरी भाग में सुन्दर शिल्प-कला से युक्त बंसी पहाड़पुर पत्थर की वेदी पर धवलपाषाण से निर्मित वर्तमान चौबीसी भव्यजीवो के निजदर्शन के निमित्त विराजमान है।

मानो यह जिन-वैभव संकेत कर रहा है कि-

हे चेतन्यमूर्ति जीवो! अहोभाग्य है हम सबका, चैतन्य में चेतन पाने का।

विद्वत-निवासः न धर्मो धार्मिकैःविना

उपर्युक्त उक्त्यनुसार विद्वानों का सतत समागम बना रहे - इस प्रयोजन हेतु उनके आवास के लिए विद्वत्-निवास का निर्माण किया गया है। इसमें आठ कमरें है, जिनका क्षेत्रफल 4000 वर्गफूट है। प्रतिवर्ष आयोजित होनेवाले शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों में धार्मिक शिक्षण हेतू यहाँ चार बडे हॉल है, जिनका क्षेत्रफल 4000 वर्गफूट है।

साधर्मी निवास

चैतन्यार्थी मुमुक्षुओं और देश-विदेश से पधारने वाले साधर्मियों के निवास हेतु 110 कमरें है जिसमे 25 ए.सी. रुम बनाये गये है। आधुनिक सुख-सुविधाओं को त्याग कर आये हुए यात्रीगण, प्रकृति की गोद में अध्यात्म-वैभव एवं चैतन्य-वाटिका से सुगन्धित मनोहर वातावरण में शान्ति का अनुभव करते हैं।

विशाल भोजनालय

अध्यात्म पियासुओं की क्षुधा-तृप्ति हेतु शुद्ध, सात्त्विक एवं मर्यादा युक्त भोजन की उपलब्धता हेतु विशाल भोजनालय का निर्माण भी यहाँ किया गया है। इसका क्षेत्रफल 11000 वर्गफूट है, जहाँ एक साथ **500** साधर्मी बैठकर भोजन कर सकते है।

बाहर से पधारे यात्रा-संघ के आवास हेतु दो बड़े भवनों और चार छोटे भवनों का निर्माण किया गया है। भोजनालय के समीप ही एक लाख लीटर क्षमता की पानी की टंकी का भी निर्माण किया गया है, जहाँ से पूरे संकुल में शुद्ध पानी का प्रवाह होता है।

चैतन्य विद्या निकेतन: ज्ञानं सर्वसमाधान-कारणम्!

''घर-घर शिक्षा घर-घर ज्ञान,
चैतन्य धाम का यह अभियान ''

बालकों में धार्मिक संस्कारों के बीजारोपण हेतु, आधुनिक युग में उच्च लौकिक शिक्षा के साथ-साथ जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों से उन्हें परिचित कराने हेतु, यहाँ चैतन्य विद्यानिकेतन का शुभारम्भ सन् 2012 में हुआ। यहाँ बालकों को लौकिक शिक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड अंग्रेजी एवं गुजराती माध्यम से दी जाती है।

बालकों के चतुर्मुखी विकास हेतु धार्मिक शिक्षा में- प्रार्थना, अभिषेक, पूजन, स्वाध्याय, भक्ति, तात्त्विक गोष्ठी, भाषण, काव्य -पाठ, वाद-विवाद, कण्ठ-पाठ, निबन्ध, धार्मिक प्रोजेक्ट ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि गतिविधियाँ आयोजित होती हैं तथा लौकिक शिक्षा हेतु स्कूली पाठ्यक्रम के अतिरिक्त योग, कम्प्युटर, संगीत, नृत्य क्रिकेट, इंग्लिश स्पीकिंग इत्यादि का ज्ञान कराया जाता है।

विद्यानिकेतन में छात्रों के लिए अत्यानुधिक छात्रावास, भोजन एवं विद्यालय-आवागमन की सुविधा की व्यवस्था चैतन्यधाम की ओर से निः शुल्क की गई है।

हमारे उद्देश्य

- चैतन्य की चेतना को चेतनवन्त रखने के लिए चैतन्य विद्यानिकेतन द्वारा जिनशासन का प्रचार कर एवं निजात्मा की प्रभावना करना।
- सुन्दर चैतन्यधाम के दर्शन करा कर, त्रैकालिक निज चैतन्यधाम के दर्शन कराना।
- भगवान महावीर से लेकर अनेक आचार्यों द्वारा जिस दिव्य देशना का निरुपण किया गया है, उसे यहाँ से प्रसारित करना।
- स्वानुभव साक्षात्कार और वीरशासन को पुनःप्राणवन्त करने वाले आध्यात्मिक सत्यपुरुष श्री कानजी स्वामी द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान एवं अनके सी.डी. प्रवचनों का लाभ प्राप्त कराना।
- आत्मसाधना हेतु पधारे विद्वान एवं साधर्मी भाई-बहिनों के लिए सुन्दर सुविधा प्राप्त कराना।
- अति दुर्लभ मनुष्यभव को कृतार्थ करने वाला यह दिव्य अध्यात्म सदैव जीवन्त रहे और आनेवाली पीढ़ियों द्वारा 18500 वर्षों तक सुरुक्षित रह सके- ऐसे संस्कारों को जन्म देना।
- प्रतिवर्ष होनेवाले बाल, युवा, प्रौढ़, सामूहिक, महिला, कपल (युगल), शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन हो सके एवं दशलक्षण, अष्टानिका महापर्व एवं समय-समय पर होनेवाले प्रासंगिक पूजन- विधानों का आयोजन निर्बाध एवं सुचारु रुप सें हो सके और सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन सके-ऐसी व्यवस्था उपलब्ध कराना।

चैतन्यधाम पहुँचने का मार्ग

अहमदावाद-हिम्मतनगर-उदयपुर नेशनल हाइवे नं. 48 पर अहमदावाद से 35 कि.मी. और मोटा (बड़ा) चिलोड़ा से 7 कि.मी. की दूरी पर तीर्थधाम चैतन्यधाम शान्त वातावरण एवं नयन-रम्य प्रकृति की गोद में बना हुआ है।

अन्य समीपस्थ धार्मिक स्थान

छाला, वस्त्रापुर, उमता, देरोल, भिलोडा, चिन्तामणि पार्श्वनाथ, तारंगाजी, गिरनारजी, सोनगठ, पालिताना, उमराला, पावागढ़, महुआ आदि।

प्रमुख/मन्त्री
चैतन्यधाम, अहमदाबाद (गुजरात)

चैतन्यविद्या निकेतन की विशेष गतिविधियो में समय-समय पर चैतन्यार्थियो द्वारा समाज में भक्ति- प्रवचनों का आयोजन कर, वालकों एवं युवाओं में धर्म के प्रति रुचि जाग्रत करने एवं धार्मिक गतिविधियों से जोड़ने हेतु सदैव प्रयत्नशील रहता है।

शुद्धि सदन

श्रावक के षट् आवश्यकों में से एक देवपूजा के अन्तर्गत जिनागमानुसार शुद्धि के प्रकरण को ध्यान में रखते हुए आदर्श शुद्धि सदन का निर्माण किया गया हैं, जहाँ से श्रावणगण स्नानकर, विशेष शुद्धिपूर्वक प्रतिमा-प्रक्षालन हेतु मन्दिरजी में पहुँचते हैं।

श्रुत सदन

अनन्त तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी को जीवन्त रखने तथा आत्मकल्याण के निमित्तभूत वर्तमानकाल में भव्य जीवों को धर्म के प्रति उत्साहित करने एवं उनके परिणामों को उज्ज्वल करने के लिए ''श्रुत सदन'' (जिनवाणी भवन) का निर्माण किया गया हैं, वहाँ बेठकर कि साधर्मीजन शान्तचित होकर श्रुत का श्रवण, पठन एवं चिन्तन-मनन करके निज चैतन्य पद को प्राप्त कर सकें।

हमारी भावि योजनाएँ

- चैतन्य विद्यानिकेतन का संचालन 2012 सें निरंतर हो रहा है। यहाँ अध्ययनरत चैतन्यार्थियों द्वारा जैनधर्म का प्रचार-प्रसार विभन्न शिविरों द्वारा कराना।
- आरोग्य-भवन को प्रारंभ कर जरुरतमंद लोगों के शारीरिक रोगों का नि:शुल्क उपचार करना।
- मासिक पत्रिका एवं विभिन्न शास्त्रों का प्रकाशन प्रारंभ करना।

ॐ

अपनी उन्नति में इतना समय लगाओ कि,
दूसरो की निन्दा करने की फुरसत ही न मिले।

तीर्थ वंदना

तीर्थ-वन्दना मंगलकारी, तीर्थ-वन्दना आनन्दकारी ॥ टेक ॥
महाभाग्य से हो जिनदर्शन, महाभाग्य से चरण-स्पर्शन ।
भाव-विशुद्धि हो सुखकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥१॥
प्रभु की शांत छवि को निरखें, परमतत्त्व को अब हम परखें ।
शाश्वत ज्ञायक प्रभु अविकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥२॥
आत्म साधना की यह भूमि, धर्मआराधन की यह भूमि ।
भायें तत्त्व-भावना प्यारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥३॥
यहाँ संतों की याद सु-आये, मुक्तिमार्ग में मन ललचायें ।
छूटें जग प्रपंच दुखकारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥४॥
अहो ! जिनेश्वर क्या कहते हैं, सदा सहज निज में रहते हैं ।
हम भी होवें शिवमगचारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥५॥
हो सम्यक् श्रद्धान हमारा, हो निर्मल सद्ज्ञान हमारा ।
होवें सम्यक् चारित्रधारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥६॥
नहीं कामना भोगों की हों, नहीं याचना वैभव की हों ।
प्रभु सम प्रभुता होय हमारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥७॥
भक्ति भाव से प्रभु गुण गावें, प्रभु को हृदय माँहि बसावें ।
सफल वन्दना होय हमारी, तीर्थ-वन्दना मंगलकारी ॥८॥

महावीर वंदना

जय महावीर जिनेश्वरम्, जय वर्धमान महेश्वरम् ।
जय वीतरागी परम हितकारी महा मंगलकरम् ॥
जय वीर सन्मति धीर प्रभु अतिवीर जिन तीर्थंकरम् ।
जय जगत वन्दन दुख निकन्दन हरण भवभय दारुणम् ॥
जय जयति त्रिभुवन पति परम यति भव्य जन सुख कारणम् ।
जय ज्ञान रवि चैतन्य चिन्तामणि श्री जगदीश्वरम् ॥
महिमामयम् महितोदयम् वदताम्बरम् वागीश्वरम् ।
योगीश्वरार्चित धर्मपति देवाधिदेव जयेश्वरम् ॥
जय जयति जिन परमेश्वरम्, जयमहावीर जिनेश्वरम् ।
जय जयति प्रभु मंगलमयम्, मंगलमयम् मंगलमयम् ॥

प्रतिमा प्रक्षाल पाठ

(पं. अभयकुमारजी कृत)

(दोहो)

परिणामों की स्वच्छता, के निमित्त जिनबिम्ब ।
इसीलिए मैं निरखता, इनमें निज प्रतिबिम्ब ॥
पंच प्रभु के चरण में, वन्दन करुँ त्रिकाल ।
निर्मल जल से कर रहा,प्रतिमा का प्रक्षाल ॥

अथ पौर्वाह्निकदेववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्मक्षयार्थ भावपूजास्तवनवन्दनासमेतं श्री पंचमहागुरुभक्तिपूर्वक कायोत्सर्ग करोम्यहम् ।

(नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़े)

(छप्पय)

तीन लोक के कृत्रिम और अकृत्रिम सारे ।
जिनबिम्बों को नित प्रति अगणित नमन हमारे ॥
श्री जिनवर की अन्तर्मुख छवि उर में धारुँ ।
जिन में निज का, निज में जिन-प्रतिबिम्ब निहारुँ ॥
मै करुँ आज संकल्प शुभ, जिन प्रतिमा प्रक्षाल का ।
यह भाव सुमन अर्पण करुँ, फल चाहूँ गुणमाल का ॥

ॐ ह्रीं प्रक्षाल प्रतिज्ञायै पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ।

(प्रक्षाल की प्रतिज्ञा हेतु पुष्पं क्षेपण करें)

(रोला)

अन्तरंग बहिरंग सुलक्ष्मी से जो शोभित ।
जिनकी मंगलवाणी पर है त्रिभुवन मोहित ॥
श्री जिनवर सेवा से क्षय मोहादि विपत्ति ।
हे जिन ! श्री लिख पाउँगा निज-गुण सम्पत्ति ॥

(थाली की चौकी पर केशर से श्री लिखें)

(दोहा)

अन्तर्मुख मुद्रा सहित, शोभित श्री जिनराज ।
प्रतिमा प्रक्षालन करुँ, धरुँ पीठ यह आज ॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थापनं करोमि ।

(प्रक्षाल हेतु थाली स्थापित करें)

(दोहा)

भक्ति रत्न जड़ित आज मंगल सिंहासन ।
भेद-ज्ञान जल से क्षालित भावों का आसन ॥
स्वागत है ! जिनराज तुम्हारा सिंहासन पर ।
हे ! जिनदेव पधारो श्रद्धा के आसन पर ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ ।
(थाली में जिनबिम्ब विराजमान करें)

क्षीरोदधि के जल से भरे कलश ले आया ।
दृग-सुख-वीरज ज्ञान स्वरुपी आतम पाया ॥
मंगल कलश विराजित करता हूँ जिनराजा ।
परिणामों के प्रक्षालन से सुधरें काजा ॥

ॐ ह्रीं अर्हं कलश स्थापनं करोमि ।
(चारों कोनों में निर्मल जल से भरें कलश स्थापित करें)

जल फल आठों द्रव्य मिलाकर अर्घ्य बनाया ।
अष्ट अंग युत मानो सम्यगदर्शन पाया ॥
श्री जिनवर के चरणों में यह अर्घ्य समर्पित ।
करुँ आज रागादि विकारी भाव विसर्जित ॥

ॐ ह्रीं श्री स्नपनपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
(पीठ स्थित जिनप्रतिमा को अर्घ्य चढायें)

मैं रागादि विभावों से कलुषित हे जिनवर ।
और आप परिपूर्ण वीतरागी हो प्रभुवर ॥
कैसे हो प्रक्षाल, जगत के अघ-क्षालक का ।
क्या दरिद्र होगा पालक ? त्रिभुवन पालक का ॥
भक्ति भाव के निर्मल जल से अघ-मल धोता ।
है किसका अभिषेक भ्रान्त चित् खाता गोता ॥
नाथ ! भक्तिवश जिन बिम्बों का करुँ न्हवन मैं ।
आज करुँ साक्षात् जिनेश्वर का स्पर्शन मैं ॥

(निम्न छन्द बोलकर अर्घ्य चढ़ाये ।)

(दोहा)

क्षीरोदधि सम नीर से, करुँ बिम्ब प्रक्षाल ।
श्री जिनवर की भक्ति से, जानूँ निज पर चाल ॥
तीर्थंकर का न्हवन शुभ, सुरपति करें महान ।
पंचमेरु भी हो गये, महातीर्थ सुखदान ॥
करता हूँ शुभ भाव से, प्रतिमा का अभिषेक ।
बचूँ शुभाशुभ भाव से, यही, कामना एक ॥

दुरावनम्रसुरनाथकिरीटकोटी संलग्नरत्नकिरणच्छविधूसरांघ्रिं ।
प्रखेवतापमलमुक्तमपि प्रकृष्टै र्भकत्या जलैर्जिनपति बहुधभिषिंचे ।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादिमहावीरपर्यन्तं चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवमाद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे....गुजरात प्रांते चैतन्यधाम नगरे मासानो..मासे...पक्षे... दिने मुन्यार्यिकाश्रावकश्राविकाणां सकलकमक्षयार्थं पवित्रतर-जलेन जिनमभिषेचयामि ।
(चारों कलशों से अभिषेक करें तथा वाजित्र नाद करायें एवं जय-जय शब्दोच्चारण करें ।)

(दोहा)

जिन संस्पर्शित नीर यह, गन्धोदक गुण खान ।
मस्तत पर धारुँ सदा, बनूँ स्वयं भगवान ॥

(मस्तक पर गन्धोदक लगायें । अन्य किसी अंग से गन्धोदक का स्पर्श वर्जित है ।)

जल-फलादि वसु द्रव्य ले, मैं पूजूँ जिनराज ।
हुआ बिम्ब अभिषेक अब, पाऊँ निज पदराज ॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिनवर का धवल यश, त्रिभुवन में है व्याप्त ।
शान्ति करें मम चित्त में, हे परमेश्वर आप्त ।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(रोला)

जिन प्रतिमा पर अमृत सम जल-कण अति शोभित ।
आत्म-गगन में गुण अनन्त तारे, भवि मोहित ॥
हो अभेद का लक्ष्य, भेद का करता वर्जन ।
शुद्ध वस्त्र से जल-कण का करता परिमार्जन ॥

(प्रतिमा को शुद्ध वस्त्र से पोंछें)

(दोहा)

श्री जिनवर की भक्ति से , दूर होय भव-भार ।
उर-सिंहासन थापिये, प्रिय चैतन्यकुमार ॥

(जिनप्रतिमा को सिंहासन पर विराजमान करें)
(निम्न छन्द बोलकर अर्घ्य चढ़ाये ।)

जल-गन्धादिक द्रव्य से, पूजूँ श्री जिनराज ।
पूर्ण अर्घ्यं अर्पित करुँ, पाऊँ चेतनराज ॥

ॐ ह्रीं श्री पीठस्थितजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रक्षाल पाठ

मैं परम पूज्य जिनेन्द्र प्रभु को, भाव से वन्दन करुँ ।
मन-वचन-काय त्रियोग पूर्वक, शीश चरणों में धरुँ ॥१॥
सर्वज्ञ केवलज्ञानधारी, की सुछवि उर में धरुँ ।
निर्ग्रन्थ पावन वीतराग, महान की जय उच्चरुँ ॥२॥
उज्ज्वल दिगम्बर वेश दर्शन, कर हृदय आनन्द भरुँ ।
अतिविनय पूर्वक नमन करके, सफल यह नरभव करुँ ॥३॥
मै शुद्ध जल के कलश प्रभु के, पूज्य मस्तक पर करुँ ।
जल धार देकर हर्ष से, अभिषेक प्रभुजी का करुँ ॥४॥
मै न्हवन प्रभु का भाव से, कर सफल भवपातक हरुँ ।
प्रभु चरण कमल पखारकर, सम्यक्त्व की सम्पति वरुँ ॥५॥

जिनेन्द्र स्तुति

मैंने प्रभुजी के चरण पखारे ॥ टेक ॥
जनम-जनम के संचित पातक, तत्क्षण ही निरवारे ॥१॥
प्रासुक जल के कलश, श्री जिनप्रतिमा उपर ढ़ारे ।
वीतराग अरिहंत देव के, गूँजे जय-जयकारे ॥२॥
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही, छाये हर्ष अपारे ।
पावन तन-मन-नयन भये सब, दूर भये अंधियारे ॥३॥

भक्ति

यह धर्म है आतम ज्ञानी का, सीमंधर महावीर स्वामी का ।
इस धर्म का भैया, क्या कहना ये धर्म है वीरों का गहना ॥ टेक।

यहाँ समयसार का चिन्तन है, यहाँ नियमसार का मंथन हैं ।
यहाँ रहते है ज्ञानी मस्ती में मस्ती है स्व की अस्ती में ॥
अस्ती में मस्ती ज्ञानी की ये बात है भेद विज्ञान की ।
यहाँ झरते है झरनें, आनन्द के, आनन्द ही आनन्द आतम मे ॥
यहाँ बाहुबली से ध्यानी हुए, यहाँ कुन्दकुन्द से ज्ञानी हुए ।
यहाँ कहानगुरु ने ये बोला, मेरा जैन धरम हे अनमोला ॥

विनय पाठ

(दोहा)

सफल जन्म मेरा हुआ, प्रभु दर्शन से आज ।
भव समुद्र नहिं दीखता, पूर्ण हुए सब काज ॥१॥
दुर्निवार सब कर्म अरु, मोहादिक परिणाम ।
स्वयं दूर मुझसे हुए, देखत तुम्हें ललाम ॥२॥
संवर कर्मों का हुआ, शान्त हुए गृह जाल ।
हुआ सुखी सम्पन्न मैं नहिं आये मम काल ॥३॥
भव कारण मिथ्यात्व का, नाशक ज्ञान सुभानु ।
उदित हुआ मुझमें प्रभो, दीखें आप समान ॥४॥
मेरा आत्म स्वरुप जो, ज्ञानादिक गुण-खान ।
आज हुआ प्रत्यक्ष सम, दर्शन से भगवान ॥५॥
दीन भावना मिट गई, चिन्ता मिटी अशेष ।
निज प्रभुता पाई प्रभो, रहा न दुःख का लेश ॥६॥
शरण रहा था खोजता, इस संसार मँझार ।
शीखा जिनवर आपसे, आत्म शरण सुखकार ॥७॥
निज स्वरुप में मगन हो, पाऊँ शिव अभिराम ।
इसी हेतु मैं आपको, करता कोटि प्रणाम ॥८॥
मैं वन्दौं जिनराज को, धर उर समता भाव ।
तन-धन-जन जगजाल से, धरि विरागता भाव ॥९॥
यही भावना है प्रभो, मेरी परिणति माँहिं ।
राग-द्वेष की कल्पना, किंचित् उपजे नाहिं ॥ १०॥

पूजा पीठिका (हिन्दी)

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
अरिहंतो को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वन्दन ।
आचार्यो को नमस्कार है, उपाध्याय को है वन्दन ॥
और लोक के सर्वसाधुओं को, है विनय सहित वन्दन ।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को, बार-बार मेरा वन्दन ॥

ॐ ह्रीं श्री अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

(वीरछन्द)

मंगल चार, चार हैं उत्तम, चार शरण में जाऊँ मैं ।
मन-वच-काय त्रियोगपूर्वक, शुद्ध भावना भाऊँ मैं ॥
श्री अरिहंत देव मंगल हैं, श्री सिद्ध प्रभु हैं मंगल ।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, है केवलि कथित धर्म मंगल ॥
श्री अरिहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में हैं उत्तम ।
साधु लोक में उत्तम हैं, है केवलि कथित धर्म उत्तम ॥
श्री अरहंत शरण में जाऊँ, सिद्धशरण में मैं जाऊँ ।
साधु शरण में जाऊँ, केवलि कथित धर्म शरणा जाऊँ ॥

॥ ॐ नमोऽर्हते स्वाहा । पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

मंगल विधान

अपवित्र हो या पवित्र, जो णमोकार को ध्याता है ।
चाहे सुस्थित हो या दुस्थित, पाप-मुक्त हो जाता हैं ॥ १॥
हो पवित्र-अपवित्र दशा, कैसी भी क्यों नहिं हो जन की ।
परमातम का ध्यान किये, हों अन्तर-बाहर शुचि उनकी ॥ २॥
हैं अजेय विघ्नों का हर्ता, णमोकार यह मंत्र महा ।
सब मंगल में प्रथम सुमंगल, श्री जिनवर ने एम कहा ॥३॥
सब पापों का हैं क्षयकारक, मंगल में सबसे पहला ।
नमस्कार या णमोकार यह, मन्त्र जिनागम में पहला ॥४॥
अर्हं ऐसे परं ब्रह्म-वाचक, अक्षर का ध्यान करुँ।
सिद्धचक्र का सद्बीजाक्षर, मन-वच-काय प्रणाम करुँ ॥५॥

अष्टकर्म से रहित मुक्ति-लक्ष्मी के घर श्री सिद्ध नमूँ ।
सम्यक्त्वादि गुणों से संयुत, तिन्हें ध्यान धर कर्म वमूँ ॥६॥
जिनवर की भक्ति से होते, विघ्न समूह अन्त जानो ।
भूत शाकिनी सर्प शांत हो, विष निर्विष होता मानो ॥७॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

मैं प्रशस्त मंगल गानों से, युक्त जिनालय माँहि यजूँ ।
जल चंदन अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ्य सजूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

(ताटंक)

स्याद्वाद वाणी के नायक, श्री जिन को मैं नमन कराय ।
चार अनंत चतुष्टयधारी, तीन जगत के ईश मनाय ॥
मूलसंघ के सम्यग्दृष्टि, उनके पुण्य कमावन काज ।
करुँ जिनेश्वर की यह पूजा, धन्य भाग्य है मेरा आज ॥१॥
तीन लोक के गुरु जिन-पुंगव, महिमा सुन्दर उदित हुई ।
सहज प्रकाशमयी दृग-ज्योति, जग-जन के हित मुदित हुई ।
समवशरण का अद्भुत वैभव, ललित प्रसन्न करी शोभा ।
जग-जन का कल्याण करे अरु, क्षेम कुशल हो मन लोभा ॥२॥
निर्मल बोध सुधा सम प्रकटा, स्व-पर विवेक करावनहार ।
तीन लोक में प्रथित हुआ जो, वस्तु त्रिजग प्रकटावनहार ॥
ऐसा केवलज्ञान करे, कल्याण सभी जगतीतल का ।
उसकी पूजा रचूँ आज मैं, कर्म बोझ करने हलका ॥३॥
द्रव्य-शुद्धि अरु भाव-शुद्धि, दोनों विधि का अवलंबन कर ।
करुँ यथार्थ पुरुष की पूजा, मन-वच-तन एकत्रित कर ॥
पुरुष-पुराण जिनेश्वर अर्हन्, एकमात्र वस्तु का स्थान ।
उसकी केवलज्ञान वह्नि में, करुँ समस्त पुण्य आह्वान ॥४॥

॥ ॐ यज्ञविधिप्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

ऋषभदेव कल्याणकराय, अजित जिनेश्वर निर्मल थाय ।
स्वस्ति करें संभव जिनराय, अभिनंदन के पूजों पाय ।।१।।
स्वस्ति करें श्री सुमति जिनेश, पद्मप्रभ पद-पद्म विशेष ।
श्री सुपार्श्व स्वस्ति के हेतु, चन्द्रप्रभ जन तारन सेतु ।।२।।
पुष्पदंत कल्याण सहाय, शीतल शीतलता प्रकटाय ।
श्री श्रेयांस स्वस्ति के श्वेत, वासुपूज्य शिवसाधन हेत ।।३।।
विमलनाथ पद विमल कराय, श्री अनंत आनंद बताय ।
धर्मनाथ शिव शर्म कराय, शांति विश्व में शांति कराय ।।४।।
कुंथु और अर जिन सुखरास, शिवमग में मंगलमय आश ।
मल्लि और मुनिसुव्रत देव, सकल कर्मक्षय कारण एव ।।५।।
श्री नमि और नेमि जिनराज, करें सुमंगलमय सब काज ।
पार्श्वनाथ तेवीसम ईश, महावीर वंदो जगदीश ।।६।।
ये सब चौबीसों महाराज, करें भव्यजन मंगल काज ।
मैं आयो पूजन के काज, राखो श्री जिन मेरी लाज ।।७।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

'आध्यात्मिक लोरी'

अर्हंत बनो, तुम सिद्ध बनो, निर्ग्रन्थ दिगम्बर संत बनो ।
चिर मंगल-मुक्ति विधान करो, चैतन्य सुधारस पान करो ।।

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजन

(श्री युगलजी कृत)

केवल रवि-किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अन्तर ।
उस श्री जिन-वाणी में होता, तत्त्वों का सुन्दरतम दर्शन ॥
सद्दर्शन-बोध-चरण-पथ पर, अविरल जो बढ़ते हैं मुनिगण ।
उन देव परम-आगम, गुरु को शत-शत वन्दन शत-शत वन्दन ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम् ।

इन्द्रिय के भोग मधुर विष-सम, लावण्यमयी कंचन काया ।
यह सब कुछ जड़ की क्रीडा हैं, मैं अबतक जान नहीं पाया ॥
मैं भूल स्वयं निज वैभव को, पर-ममता में अटकाया हूँ ।
अब निर्मल सम्यक्-नीर लिये, मिथ्यामल धोनें आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जड़-चेतन की सब परिणति प्रभु ! अपने-अपने मे होती है ।
अनुकूल कहें प्रतिकूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ती है ॥
प्रतिकूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाया है ।
सन्तप्त हृदय प्रभु ! चन्दन सम, शीतलता पाने आया है ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

उज्ज्वल हूँ कुन्द-धवल हूँ प्रभु ! पर से न लगा हूँ किञ्चित् भी ।
फिर भी अनुकूल लगें उन पर, करता अभिमान निरन्तर ही ॥
जड़ पर झुक-झुक जाता चेतन, की मार्दव की खण्डित काया ।
निज शाश्वत अक्षत-निधि पाने, अब दास चरण-रज में आया ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

यह पुष्प सुकोमल कितना है, तन में माया कुछ शेष नहीं ।
निज अन्तर का प्रभु ! भेद कहूँ, उसमें ऋजुता का लेश नहीं ॥
चिंतन कुछ फिर संभाषण कुछ, वृत्ति कुछ की कुछ होती है ।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ, जो अन्तर का कालुष धोती है ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाणविधवंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अब तक अगणित जड़ द्रव्यों सें प्रभु ! भूख न मेरी शान्त हुई ।
तृष्णा की खाई खूब भरी , पर रिक्त रही वह रिक्त रही ॥
युग-युग से इच्छा सागर में, प्रभु ! गोते खाता आया हूँ ।
चरणों में व्यंजन अर्पित कर, अनुपम रस पीने आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मेरे चैतन्य सदन में प्रभु ! चिर व्याप्त भयंकर अंधियारा ।
श्रुत-दीप बुझा हे करुणानिधि ! बीती नहिं कष्टों की कारा ॥
अत एव प्रभो ! यह ज्ञान-प्रतीक, समर्पित करने आया हूँ ।
तेरी अन्तर लौ से निज अन्तर-दीप जलाने आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र गुरुभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जड़ कर्म धुमाता है मुझको, यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी ।
मैं रागी-द्वेषी हो लेता, जब परिणिति होती है जड़ की ॥
यों भाव-करम या भाव-मरण, सदियों से करता आया हूँ ।
निज अनुपम गंध-अनल से प्रभु, पर-गंध जलाने आया हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र गुरुभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता है ।
मैं आकुल-व्याकुल हो लेता, व्याकुल का फल व्याकुलता है ॥
मैं शान्त निराकुल चेतन हूँ, है मुक्ति-रमा सहचर मेरी ।
यह मोह तड़क कर टूट पड़े, प्रभु ! सार्थक फल पूजा तेरी ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षण भर निज-रस को पी चेतन, मिथ्या-मल को धो देता है ।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है ॥
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल-रवि जगमग करता है ।
दर्शन बल पूर्ण प्रकट होता, यह ही अरहन्त अवस्था है ॥
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु ! निज गुण का अर्घ्य बनाऊँगा ।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु ! अरहन्त अवस्था पाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

भव वन में जी भर धूम चुका, कण-कण को जी भर-भर देखा ।
मृग-सम मृग-तृष्णा के पीछे, मुझको न मिलि सुख की रेखा ॥

(बारब भावना)

झूँठे जग के सपने सारे, झूँठी मन की सब आशायें ।
तन-जीवन-यौवन अस्थिर है, क्षण-भंगुर पल में मुरझायें ॥
सम्राट महाबल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या ?
अशरण मृत-काया में हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या ?
संसार महा दुःख सागर के, प्रभु दुखमय सुख-आभासों में ।
मुझको न मिला सुख क्षण भर भी, कंचन-कामिनी प्रासादों में ॥
मैं एकाकी एकत्व लिये, एकत्व लिये सब ही आते ।
तन-धन को साथी समझा था, पर ये भी छोड़ चले जाते ॥
मेरे न हुए ये, मैं इनसे, अति भिन्न अखण्ड निराला हूँ ।
निज में पर से अन्यत्व लिये, निज समरस पीनेवाल हूँ ॥
जिसके श्रृंगारों में मेरा, यह मँहगा जीवन धुल जाता ।
अत्यन्त अशुचि जड़-काया से, इस चेतन का कैसा नाता ॥
दिन-रात शुभाशुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता ।
मानस वाणी और काया से, आस्त्रव का द्वार खुला रहता ॥
शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अन्तस्तल ।
शीतल समकित किरणें फूटें संवर से जागे अन्तर्बल ॥
फिर तप की शौधक वह्नि जगें, कर्मो की कड़ियाँ टूट पड़े ।
सर्वांग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़ें ।
हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकान्त विराजें क्षण में जा ।
निज लोक हमारा वासा हो, शोकान्त बनें फिर हमको क्या ॥
जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो ! दुर्नय-तम सत्वर टल जावे ।
बस ज्ञाता दृष्टा रह जाऊँ, मद-मत्सर-मोह विनश जावे ॥

चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी ।
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी ॥

(देव-स्तवन)

चरणों में आया हूँ प्रभुवर ! शीतलता मुझको मिल जावे ।
मुरझाई ज्ञान-लता मेरी, निज अन्तर्बल से खिल जावे ॥
सोचा करता हूँ भोगों से, बुझ जावेगी इच्छा-ज्वाला ।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावक में घी डाला ॥
तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय सुख को ही अभिलाषा ।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु! सच्चे सुख की भी परिभाषा ॥
तुम तो अविकारी हो प्रभुवर ! जग में रहते जग से न्यारे ।
अतएव झुके तव चरणों में, जग के माणिक-मोती सारे ॥

(शास्त्र-स्तवन)

स्याद्वादमयी तेरी वाणी, शुभनय के झरने झरते हैं ।
उस पावन नौका पर लाखों, प्राणी भव-वारिधि तिरते हैं ॥

(गुरु-स्तवन)

हे गुरुवर ! शाश्वत सुखदर्शक, यह नग्न स्वरुप तुम्हारा है ।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्शन करनेवाला है ॥
जब जग विषयों में रच-पच-कर, गाफिल निद्रा में सोता हो ।
अथवा वह शिव के निष्कंटक, पथ में विषकंटक बोता हो ॥
हो अर्द्ध-निशा का सन्नाटा, वन में वनचारी चरते हो ।
तब शान्त निराकुल मानस तुम, तत्त्वों का चिंतन करते हो ॥
करते तप शैल-नदी-तट पर, तरु-तल-वर्षा की झड़ियों में ।
समता-रस-पान किया करते, सुख-दुःख दोनों की घड़ियों में ॥
अन्तर्ज्वाला हरती वाणी, मानों झड़ती हो फुलझड़ियाँ ।
भव-बन्धन तड़-तड़ टूट पड़ें, खिल जावें अन्तर की कलियाँ ॥
तुम-सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दी जग की निधियाँ ।
दिन-रात लुटाया करते हो, सम-शम की अविनश्वर मणियाँ ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे निर्मल देव ! तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान-दीप आगम ! प्रणाम ।
हे शान्ति-त्याग के मूर्तिमान, शिव-पथ-पंथी गुरुवर ! प्रणाम ।

(इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

અરે ! મોટા મોટા મુનિઓ પણ જિનેન્દ્ર દેવના દર્શન અને સ્તુતિ કરે છે ને તને જો એવા ભાવ નથી આવતા અને એકલા પાપમાં જ રચ્યોપચ્યો રહે છે તો તું ભવસમુદ્રમાં ડુબી જઈશ. ભાઈ! માટે તારે આ ભવદુઃખના દરિયામાં ન ડુબવું હોય અને એનાથી તરવું હોયતો સંસાર તરફનું તારું વલણ બદલીને વીતરાગી દેવ-ગુરુ તરફ તારા પરિણામને વાળ, તેઓ ધર્મનું સ્વરૂપ શું કહે છે તે સમજ, તેમણે કહેલા આત્મસ્વરૂપને રુચિમાં લે; તો ભવસમુદ્રમાંથી તારો છુટકારો થશે.

भक्ति

ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है, जिनमंदिर हमारा ।
मंदिर हमारा, हमें लागे है प्यारा ।।टेक।।
श्री जिनवर से भेंट करावें, जग को मुक्ति मार्ग दिखावें ।
मोह का नाश करावें रे, यह मंदिर हमारा ।।१।।
शुद्धातम् से प्रीति लगावे, जड़ चेतन को भिन्न बतावे ।
भेद-विज्ञान करावे रे, यह मंदिर हमारा ।।२।।
वीर प्रभु के दर्शन करावे, सीमन्धरसे भेंट करावें ।
विदेहक्षेत्रकी याद दिलावे, कुन्दकुन्द को प्यारा है परमागम हमारा ।।३।।
धरसेनस्वामीकी याद करावें, भूतबलि की महिमा आवें ।
आगम ज्ञान करावे रे, यह मंदिर हमारा ।।४।।
सिद्ध प्रभु का स्वरुप बतावें, सिद्धों से बातें करवावें ।
सिद्धालय पहुँचाये रे, ये मंदिर हमारा ।।५।।

श्री बाहुबली पूजन

[कविवर श्री राजमलजी पवैया]

(वीर-छन्द)

जयति बाहुबली स्वामी, जय जय करुँ वंदना बारम्बार ।
निज स्वरुप का आश्रय लेकर, आप हुए भवसागर पार ॥
हे त्रैलोक्यनाथ त्रिभुवन में, छाई महिमा अपरम्पार ।
सिद्धस्वपद की प्राप्ति हो गई, हुआ जगत में जय-जयकार ॥
पूजन करने मैं आया हूँ अष्ट द्रव्य का ले आधार ।
यही विनय हैं चारों गति के, दुःख से मेरा हो उद्धार ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिन् ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिन् ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिन् ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

उज्ज्वल निर्मल जल प्रभु, पद-पंकज में आज चढ़ाता हूँ ।
जन्म-मरण का नाश करुँ, आनन्दकन्द गुण गाता हूँ ॥
श्री बाहुबली स्वामी प्रभुवर, चरणों में शीष झुकाता हूँ ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शीतल मलय सुगन्धित पावन, चन्दन भेंट चढ़ाता हूँ ।
भव आताप नाश हो मेरा, ध्यान आपका ध्याता हूँ ॥ श्री बाहुबली॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।

उत्तम शुभ्र अखण्डित तन्दुल, हर्षित चरण चढाता हूँ ।
अक्षयपद की सहज प्राप्ति हो, यही भावना भाता हूँ ॥ श्री बाहुबली...॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।

काम शत्रु के कारण अपना, शील स्वभाव न पाता हूँ ।
काम भाव का नाश करुँ मैं, सुन्दर पुष्प चढ़ाता हूँ ॥ श्री बाहुबली...॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।

तृष्णा की भीषण ज्वाला में, प्रभु प्रतिपल जलता जाता हूँ।
क्षुधा रोग से रहित बनूं मैं, शुभ नैवेद्य चढ़ाता हूँ ॥
श्री बाहुबली स्वामि प्रभुवर, चरणों में शीष झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मोह ममत्व आदि के कारण, सम्यक् मार्ग न पाता हूँ।
यह मिथ्यात्व तिमिर मिट जाए, प्रभुवर दीप चढ़ाता हूँ ॥
श्री बाहुबली स्वामि प्रभुवर, चरणों में शीष झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

है अनादि से कर्म बन्ध दुःखमय, न पृथक कर पाता हूँ ।
अष्टकर्म विध्वंस करुँ, अतएव सु-धूप चढ़ाता हूँ ॥
श्री बाहुबली स्वामि प्रभुवर, चरणों में शीष झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सहज भाव सम्पदा युक्त होकर, भी भव दुःख पाता हूँ।
परम मोक्ष फल शीघ्र मिले, उत्तम फल चरण चढ़ाता हूँ ॥
श्री बाहुबली स्वामि प्रभुवर, चरणों में शीष झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

पुण्य भाव से स्वर्गादिक पद, बार-बार पा जाता हूँ ।
निज अनर्घ्य पद मिला न अब तक, इससे अर्घ्य चढ़ाता हूँ॥
श्री बाहुबली स्वामि प्रभुवर, चरणों में शीष झुकाता हूँ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को, नाथ शरण में आता हूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जयमाला

आदिनाथ सुत बाहुबली प्रभु, मात सुनंदा के नन्दन ।
चरम शरीरी कामदेव तुम, पोदनपुर पति अभिनन्दन ॥

छह खण्ड़ों पर विजय प्राप्त कर, भरत चढ़े वृषभाचल पर ।
अगणित चक्री हुए नाम लिखने को मिला न थल तिल भर ।।
मैं ही चक्री हुआ, अहं का मान धूल हो गया तभी ।
एक प्रशस्ति मिटाकर अपनी, लिखी प्रशस्ति स्वहस्त जभी ।।
चले अयोध्या किन्तु नगर में, चक्र प्रवेश न कर पाया ।
ज्ञात हुआ लघु भ्रात बाहुबली, सेवा में न अभी आया ।।
भरत चक्रवर्ती ने चाहा, बाहुबली आधीन रहे ।
ठुकराया आदेश भरत का, तुम स्वतंत्र स्वाधीन रहे ।।
भीषण युद्ध छिड़ा दोनों भाई के, मन संताप हुए ।
दृष्टि-मल्ल-जल युद्ध भरत से, करके विजयी आप हुए ।।
क्रोधित होकर भरत चक्रवर्ती, ने चक्र चलाया है ।
तीन प्रदक्षिणा देकर कर में, चक्र आपके आया है ।।
विजय चक्रवर्ती पर पाकर, उर वैराग्य जगा तत्क्षण ।
राज्यपाट तज ऋषभदेव के, समवशरण को किया गमन ।।
धिक्-धिक् यह संसार और, इसकी असारता को धिक्कार ।
तृष्णा की अनन्त ज्वाला में, जलता आया है संसार ।।
जग की नश्वरता का तुमने, किया चिंतवन बारम्बार ।
देह भोग संसार आदि से, हुई विरक्ति पूर्ण साकार ।।
आदिनाथ प्रभु से दीक्षा ले, व्रत संयम को किया ग्रहण ।
चले तपस्या करने वन में, रत्नत्रय को कर धारण ।।
एक वर्ष तक किया कठिन तप, कायोत्सर्ग मौन पावन ।
किन्तु शल्य थी एक हृदय में, भरत भूमि पर है आसन ।।
केवलज्ञान नहीं हो पाया, एक शल्य ही के कारण ।
परिषह शीत, ग्रीष्म, वर्षादिक, जय करके भी अटका मन ।।
भरत चक्रवर्ती ने आकर, श्री चरणों में किया नमन ।
कहा कि वसुधा नहीं किसी की, मान त्याग दो हे भगवन् ।।
तत्क्षण शल्य विलीन हुई, तुम शुक्ल ध्यान में लीन हुए ।

फिर अन्तर्मुहूर्त में स्वामी, मोह क्षीण स्वाधीन हुए ॥
चार धातिया कर्म नष्ट कर, आप हुए केवलज्ञानी ।
जय जयकार विश्व में गूँजा, सारी जगती मुसकानी ॥
झलका लोकालोक ज्ञान में, सर्व द्रव्य गुण पर्यायें ।
एक समय में भूत भविष्यत्, वर्तमान सब दर्शायें ॥
फिर अघातिया कर्म विनाशे, सिद्ध लोक में गमन किया ।
अष्टापद से मुक्ति हुई, तीनों लोकों ने नमन किया ॥
महा मोक्ष फल पाया तुमने, ले स्वभाव का अवलंबन ।
हे ! भगवान बाहुबली स्वामी, कोटि-कोटि शत-शत वंदन ॥
आज आपका दर्शन करने, चरण-शरण में आया हूँ ।
शुद्ध स्वभाव प्राप्त हो मुझको, यही भाव भर लाया हूँ ॥
भाव शुभा-शुभ भव निर्माता, शुद्ध भाव का दो प्रभु दान ।
निज परिणति में रमण करुँ, प्रभु हो जाऊँ मैं आप समान ॥
समकित दीप जले अन्तर में, तो अनादि मिथ्यात्व गले ।
राग-द्वेष परिणति हट जाये, पुण्य पाप सन्ताप टले ॥
त्रैकालिक ज्ञायक स्वभाव का, आश्रय लेकर बढ़ जाऊँ ।
शुद्धात्मानुभूति के द्वारा, मुक्ति शिखर पर चढ़ जाऊँ ॥
मोक्ष-लक्ष्मी को पाकर भी, निजानन्द रस लीन रहूँ ।
सादि अनन्त सिद्ध पद पाऊँ, सदा सुखी स्वाधीन रहूँ ॥
आज आपका रुप निरख कर, निज स्वरुप का भान हुआ ।
तुम-सम बने भविष्यत् मेरा, यह दृढ़ निश्चय ज्ञान हुआ ॥
हर्ष विभोर भक्ति से पुलकित, होकर की है यह पूजन ।
प्रभु पूजन का सम्यक् फल हो, कटें हमारे भव बंधन ॥
चक्रवर्ती इन्द्रादिक पद की, नहीं कामना है स्वामी ।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य परम पद, पाएं है ! अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।।

घर-घर मंगल छाए जग में वस्तु स्वभाव धर्म जानें ।
वीतराग विज्ञान ज्ञान से, शुद्धातम को पहिचानें ॥

(पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री सरस्वती पूजन

(पं. द्यानतरायजी कृत)

[स्थापना दोहा]

जनम-जरा-मृतु छय करैं, हरै कुनय जड़रीति ।
भवसागरसों ले तिरैं, पूजैं जिन वच प्रीति ॥

ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री श्रीजिनमुखोद्भवसरस्वतिवाग्वादिनि! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

(त्रिभंगी)

छीरोदधिगंगा, विमल तरंगा, सलित अभंगा सुखसंगा ।
भरि कंचन झारी, धार निकारी, तृषा निवारी हितचंगा ॥
तीर्थंकर की धुनि गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

करपूर मंगाया, चंदन आया, केशर लाया रंग भरी ।
शारदपद वंदो, मन अभिनंदों, पाप निकंदो दाह हरी ॥ तीर्थंकर..

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।

सुखदास कमोदं, धारकमोदं, अति अनुमोदं चंदसमं ।
बहुभक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई मात ममं ॥ तीर्थंकर..

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।

बहुफुल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनन्दरासं, लाय धरे ।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो दोष हरे ॥ तीर्थंकर..

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।

पकवान बनाया, बहुघृत लाया, सब विधि भाया मिष्ट महा ।
पूजूँ थुति गाऊँ, प्रीति बढ़ाऊँ, क्षुधा नशाऊं हर्ष लहा ॥ तीर्थंकर..

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

करि दीपक ज्योतं, तमछय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै ।
तुम हो परकाशक, भरमविनाशक, हम घट भासक ज्ञान बढ़ै ॥ तीर्थंकर..

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुभगंध दशोंकर, पावक में धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाप जलावैं, पुण्य कमावैं, दास कहावैं सेवत हैं ॥ तीर्थंकर..

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

बादाम छुहारी, लोंग सुपारी, श्रीफल भारी, ल्यावत हैं ।
मनवांछित दाता, मेट असाता, तुम गुन माता गावत हैं ॥ तीर्थंकर... ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

नयनन सुखकारी, मृदुगुणधारी, उज्ज्वल भारी, मोल धरैं ।
शुभगंध सम्हारा, वसन निहारा, तुम तन धारा ज्ञान करैं ॥ तीर्थंकर... ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै दिव्यज्ञानप्राप्तये वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जल चंदन अच्छत, फूल चरु चत, दीप धूप फल अति लावै ।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं ॥ तीर्थंकर... ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जयमाला

(सोरठा)

ओंकार धुनिसार, द्वादशांगवाणी विमल ।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करै जड़ता हरैं ॥

(चौपाई)

पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो ।
दूजो सूत्रकृतं अभिलाषं, पद छत्तीस सहस गुरु भाषं ॥
तीजो ठाना अंग सु जानं, सहस बियालिस पद सरधानं ।
चौथो समवायांग निहारं, चौंसठ सहस लाख इक धारं ॥
पंचम-व्याख्या प्रज्ञप्ति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं ।
छट्ठो ज्ञातृकथा विस्तारं, पाँच लाख छप्पन हज्जारं ॥
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यार लख भंगं ।
अष्टम अन्तकृत दश ईसं, सहस अट्ठाइस लाख तेईसं ॥
नवम अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं ।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानवै सोल हजारं ॥
ग्यारम सूत्रविपाक सु भाखं, एक कोड़ चौरासी लाखं ।
चार कोड़ि अरु पन्द्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरु भाखं ॥
द्वादश दृष्टिवाद पनभेदं, इकसौ आठ कोड़िपनवेदं ।
अड़सठ लाख सहस छप्पन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं ॥

इकसौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो ।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने ॥
कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं ।
साढ़े इक्कीस श्लोक बताये, एक-एक पद के ये गाये ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भूतसरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।।

(दोहा)

जा वाणी के ज्ञान तै, सूझै लोक- अलोक ।
'द्यानत' जग जयवन्त हो, सदा देत हों धोक ॥

(पुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्)

भक्ति

निर्ग्रन्थो का मार्ग हमको प्राणों से भी प्यारा है ।२।
दिगम्बर वेश न्यारा है... निर्ग्रन्थो का मार्ग ।टेक॥
शुद्धात्मा में ही, जब लीन होने को, किसी का मन मचलता है ।
तीन कषायों का, तब राग परिणति, से सहज ही टल जाता हैं ॥
वस्त्र का धागा...वस्त्र का धागा, नहीं फिर उनने तन पर धारा है ।२।
दिगम्बर वेश न्यारा है... निर्ग्रन्थो का मार्ग ॥१॥
पंच-इन्द्रिय का, विस्तार नहीं जिसमे, वह देह ही परिग्रह हैं ।
तन में नही तन्मय, है दृष्टि में चिन्मय, शुद्धात्मा ही गृह हैं ॥
पर्यायो से पार... पर्यासो से पार, त्रिकाली ध्रुव का सदा सहारा है ।२।
दिगम्बर वेश न्यारा है... निर्ग्रन्थो का मार्ग ॥२॥
मूलगुण पालन, जिनका सहज जीवन, निरन्तर स्वसंवेदन ।
एक ध्रुव सामान्य, में ही सदा रमते, रत्नत्रय आभूषण ॥
निर्विकल्प अनुभव...निर्विकल्प अनुभव से ही, जिनने निज को श्रृंगारा है ।
दिगम्बर वेश न्यारा है... निर्ग्रन्थो का मार्ग ॥३॥
आनन्द के झरने झरते प्रदेशो-में, निज ध्यान जब धरते है ।
मोह रिपु क्षण में, तब भस्म हो जाता, श्रेणी जब चढ़ते है ॥
अन्तर्मुर्हत में...अन्तर्मुर्हत में ही, जिनने अनन्त चतुष्ट धारा है ।२।
दिगम्बर वेश न्यारा है... निर्ग्रन्थो का मार्ग ॥

श्री बाहुबली जिन पूजन

[हरिगीतिका]

हे बाहुबली ! अद्‌भुत अलौकिक, ध्यानमुद्रा राजती ।
प्रत्यक्ष दिखती आत्मप्रभुता, शीलमहिमा जागती ॥
तुम भक्तिवश वाचाल हो, गुणगान प्रभुवर मैं करुँ ।
निरपेक्ष हो पर से सहज, पूजूँ स्वपद दृष्टि धरुँ ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वानम् ।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबलीजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट सन्निधिकरणम् ।

(तर्ज-पार्श्वनाथ देव सेव...)

स्वयंसिद्ध सुख निधान, आत्मदृष्टि लायके।
जन्म-मरण नाशि हों, मोह को नशायके ॥
बाहुबली जिनेन्द्र भक्ति, से करुँ सु अर्चना ।
तृप्त स्वयं में ही रहूँ, अन्य हो विकल्प ना ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

कल्पना, अनिष्ट-इष्ट, की तजूँ अज्ञानमय ।
परिणति प्रवाहरुप, होय शान्ति ज्ञानमय ॥ बाहुबली...॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।

पराभिमान त्याग के, सु भेदज्ञान भायके ।
लहूँ विभव सु अक्षयं, निजात्म में रमाय के ॥ बाहुबली...॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।

छोड़ भोग रोग सम, सु ब्रह्मरुप ध्याऊँगा ।
काम हो समूल नष्ट, सुख-अनंत पाऊँगा ॥ बाहुबली...॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।

तोष सुधा पान करुँ, आशा तृष्णा त्याग के ।
मग्न स्वयं में ही रहूँ, चित्स्वरुप भाय के॥ बाहुबली...॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

चेतना प्रकाश में, चित् स्वरुप अनुभवूँ ।
पाऊँगा कैवल्य ज्योति, कर्म घातिया दलूँ ॥
बाहुबली जिनेन्द्र भक्ति, से करुँ सु अर्चना ।
तृप्त स्वयं में ही रहूँ अन्य हो विकल्प ना ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

आत्म ध्यान अग्नि में विभाव सर्व जारिहों ।
देव आपके समान सिद्धरुप धारि हों ॥ बाहुबली.॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

इन्द्र चक्रवर्ती के भी पद अपद नहीं चहुँ ।
त्रिकालमुक्त पद अराध मुक्ति पद लहूँ लहूँ ॥ बाहुबली ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

अनर्घ्य प्रभुता आपकी सु आप में निहारिके ।
नाथ भावमाहिं मैं, अनर्घ्य-अर्घ्य धारिके ॥ बाहुबली ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जयमाला

दोहा - मोहजयी इन्द्रियजयी, कर्मजयी जिनराज ।
भावसहित गुण गावहूँ, भाव विशुद्धि काज ॥

(छन्द-जोगीरासा)

अहो! बाहुबली स्वामी पाऊँ, सहज आत्मबल ऐसा ।
निर्मम होकर साधुँ निजपद, नाथ आप ही जैसा ॥
धन्य सुनन्दा के नन्दन प्रभु, स्वाभिमान उर धारा ।
चक्री को नहिं शीश झुकाया, यद्यपि अग्रज प्यारा ॥
कर्मोदय की अद्भुत लीला, युद्ध प्रसंग पसारा ।
युद्ध क्षेत्र में ही विरक्त हो, तुम वैराग्य विचारा ॥
कामदेव होकर भी प्रभु, निष्काम तत्त्व आराधा ।
प्रचुर विभव, रमणीय भोग भी, कर न सके कुछ बाधा ॥
विस्मय से सब रहे देखते, क्षमा भाव उर धारे ।
जिन दीक्षा ले शिवपद पाने, वन में आप पधारे ॥
वस्त्राभूषण त्यागे लख निस्सार, हुए अविकारी ।

केशलौंच कर आत्म-मग्न हो, सहज साधुव्रत धारी ॥
हुए आत्म-योगीश्वर अद्भुत आसन अचल लगाया ।
नहिं आहार-विहार सम्बन्धी, कुछ विकल्प उपजाया ॥
चरणों में बन गई वाँमि, चढ़ गई सु तन पर बेलें ।
तदपि मुनीश्वर आनन्दित हो, मुक्तिमार्ग में खेलें ॥
नित्यमुक्त निर्ग्रन्थ ज्ञान-आनन्दमयी शुद्धातम ।
अखिल विश्व में ध्येय एक ही, निज शाश्वत परमातम ॥
निजानन्द ही भोग नित्य, अविनाशी वैभव अपना ।
सारभूत है, व्यर्थ ही मोही, देखे झूठा सपना ॥
यों ही चिन्तन चले हृदय में, आप वर्तते ज्ञाता ।
क्षण-क्षण बढ़ती भाव-विशुद्धि, उपशमरस छलकाता ॥
एक वर्ष छद्मस्थ रहे प्रभु, हुआ न श्रेणी रोहण ।
चक्री शीश नवाया तत्क्षण, हुआ सहज आरोहण ॥
नष्ट हुआ अवशेष राग भी, केवल-लक्ष्मी पाई ।
अहो अलौकिक प्रभुता निज की, सब जग को दरशाई ॥
हुए अयोगी अल्प समय में, शेष कर्म विनशाए ।
ऋषभदेव से पहले ही प्रभु, सिद्ध शिला तिष्ठाए ॥
आप समान आत्मदृष्टि धर, हम अपना पद पावें ।
भाव नमन कर प्रभु चरणों में, आवागमन मिटावें ॥

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा ।।

(सोरठा)

बाहुबली भगवान, दर्शाया जग स्वार्थमय ।
जागे आतमज्ञान, शिवानन्द मैं भी लहूं ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अयोग्य कार्य हुए हों तो लज्जित होकर उनको भविष्य में नहीं करने की प्रतिज्ञा करना ।

श्री गोम्मटेश्वर तीर्थ -पूजन

(पद्धरि)

हे बाहुबली, हे आत्मबली, हे ! मोहजयी जिनवर महान ।
हे वज्र तपस्वी महाऋषि, निजब्रह्मलीन आनंद धाम ॥
लिपटे भुजंग तन अंग अंग, लिपटी बेलें ज्यों तन मचान ।
फिर भी थिर रहे महामुनिवर, कितना गाऊँ मैं गुरु यशगान ॥

(दोहा)

घोर परीषहजयी प्रभू, पोदनपुर के ईश ।
गोम्मटेश हृदय बसो, जयवंतो जगदीश ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट ।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

(छन्द-अवतार)

दर्शन अति महामनोज्ञ, प्रतिमा मनहारी ।
अन्तर्मुख दृष्टि होय, दर्शत सुखकारी ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबली भगवान, जल चरणन अर्पण ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

संताप रहित निज भाव, महिमा प्रगटायी ।
भवताप नशावन हेतु, जिन शरणा भायी ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबली भगवान, तपसी जग वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अक्षत अखंड चिद्रूप, पद प्रभु दर्शाया ।
पाऊँ अक्षत पद नाथ, दर्शत हर्षाया ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन
जय बाहुबलि भगवान, तपसी प्रभु वंदन

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

चैतन्य ब्रह्म शिवरुप, ध्याऊँ अविकारी ।
दुर्दांत काम की पीर, मेटो भवहारी ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबली भगवान, तपसी प्रभु वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वापामीति स्वाहा ।।

प्रभु क्षुधा व्याधि को जीत, इन्द्रिय जय पायी ।
वर्षो तप किया महान, अचरज अति भारी ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरी पावन ।
जय बाहुबली भगवान, तपसी प्रभु वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवद्य निर्वापामीति स्वाहा ।।

ले ज्ञान दीप तप तेल, शोधा ध्रुव सारा ।
संसार समझ निःसार, तृणवत ही त्यागा ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरी पावन ।
जय बाहुबली भगवान, तपसी प्रभु वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वापामीति स्वाहा ।।

प्रभु आर्त-रौद्र दुर्ध्यान, तज निज ध्यान धरुँ ।
उत्तम क्षमादि दशधर्म, लक्षण प्रगट करुँ ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबली भगवान, तपसी प्रभु वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय सकल कर्म विनाशनाय धूपं निर्वापामीति स्वाहा ।।

प्रभु पुण्य पाप फल मांहि, दुःख ही दुःख पाया ।
भव-तरु का मूल मिथ्यात्व, क्षय हो जिनराया ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबली भगवान, तपसी प्रभु वंदन ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वापामीति स्वाहा ।।

भरतेश प्रथम चक्रेश, चरणन शिरनावे ।
हे प्रथम रतिपति नाथ, प्रथम मुक्ति पाये ॥
प्रतिमा अति महा मनोज्ञ, लख मन हर्षावे ।
इकटक निरखे भवि जीव, सुध बुध खो जावे ॥
जयवन्ते तीर्थ महान, गोम्मटगिरि पावन ।
जय बाहुबली भगवान, अर्घ्य करुँ अर्पण ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वापामीति स्वाहा ।।

जयमाला

(दोहा)

आत्म ध्यान में मगन हो, पाया केवलज्ञान ।
भक्ति भाव पूरित हृदय, करुँ सहज गुणगान ॥

(पद्धरि)

हे महा तपस्वी बाहुबली, हे आत्मबली महिमा महान ।
जयवंत रहे प्रभु जिनशासन, तुम सम जीतें रागादि थान ॥
प्रभु कामदेव पद पाकर भी, विषयों में तृप्ति नहीं पायी ।
संसार असार सहज लखकर, वैराग्य भावना उमड़ाई ॥
जब भरत चक्रवर्ती ने प्रभु, षट् खंड विजयश्री पायी थी ।
लेकिन बाहुबलि के सम्मुख, वह विजयी स्वयं शर्मायी थी ॥
तीनों युद्धों में आप हुये विजयी, इतिहास बताता है ।
तत्काल दिगम्बर दीक्षा ली, गाता जग गौरव गाथा है ॥
पोदनपुर के सम्राट तुम्हें, महिमा न कभी जड़ की आयी ।
सब राज-पाट तृण-सम छोड़ा, पाने शिवपुर की ठकुरायी ॥
चैतन्य महासागर में प्रभु, नित आप मग्न ही रहते थे ।
जयवंत रहे, जयवंत रहे, मुनि यती भव्य गुण गाते थे ॥
हे वज्र तपस्वी बाहुबली, तुमने तप को अपनाया था ।
बेलें लिपटी प्रभुवर तन पर, पर ध्यान न विचलित हो पाया ॥
सर्पों की बांबी बनी प्रभु, तन पर भुजंग तब लिपट गये ।
मानो प्रभु के अभिनंदन में, वो अपने में ही सिमट गये ॥
तीनों ऋतुयें बीती फिर भी, प्रभु ध्यान न पलभर भंग किया ।
आहार विहार विकल्प नहीं, आनंद रसामृत पान किया ॥
चक्री ने नमन किया आकर, कैवल्य ज्ञान तब प्रकट हुआ ।
अल्पज्ञ दशा का हुआ अंत, आनंद-आनंद भरपूर हुआ ॥
प्रभु शान्त सौम्य मुद्रा तेरी, गिरिविंध्याचल पर शोभ रही ।
सारे जग की सुन्दरता को, यह अपने में ही गोप रहीं ॥
अति सुन्दर विश्व विभूति थे, प्रतिमा भी मनहर लगती है ।
जो एक बार दर्शन करता, छवि चित्त से नहीं उतरती है ॥

पक्षी उपसर्ग नहीं करते, छाया भी कभी न पड़ती है ।
तन-मन सब सुध खो जाती है, इतनी प्यारी छबि लगती है ॥
वह धन्य हुये श्री नेमीचंद, जिन मुद्रा दर्शन करवाया ।
वे धन्य-धन्य चामुंडराय, प्रभु गोम्मटेश को पधराया ॥
प्रभु शरण आपकी आया हूँ, भव-सागर से कब तिर जाऊँ ।
हे महातपस्वी बाहुबली, तुम जैसा ही शिवपद पाऊँ ॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेश्वराय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(दोहा)

बाहुबली दर्शन हुये, महाभाग्य से आज ।
आतम दर्शन प्राप्त कर, पाऊँ शीघ्र स्वराज ॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ॥

निरखत जिनचन्द्र- वदन, स्व-पद सुरुचि आई ।
प्रकटी निज आन की पिछान ज्ञान भान की ।
कला उद्योत होत काम- जामनी पलाई ॥ निरखत ॥
शाश्वत आनन्द स्वाद, पायो विनस्यो विषाद ।
आन में अनिष्ट-इष्ट कल्पना नसाई ॥ निरखत ॥
साधी निज साध की समाधि मोह-व्याधि की ।
उपाधि को विराधि कैं आराधना सुहाई ॥ निरखत ॥
धन दिन छिन आज सुगुनि चिन्ते जिनराज अबै ।
सुधरो सब काज 'दौल' अचल रिद्धि पाई ॥ निरखत ॥

हे भव्य ! जिनरूप ही देखने योग्य है ।
जिन वचन ही सुनने योग्य हैं ।
जिन भावना ही भाने योग्य है ।
अहो...! जिन मंदिर संसाररूपी मरुस्थल का कल्पवृक्ष है ।

श्री गोम्मटेश्वर पूजन

जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र में, है सुन्दर कर्नाटक प्रांत ।
श्रवण बेलगुलपुरी मनोहर, बहु जिन मंदिर शोभित शांत ।।
चन्द्रगिरि की भव्य पहाडी पर, मंदिर है अति प्राचीन ।
विंध्यगिरि पर गोम्मटेश्वर प्रतिमा, आत्मध्यान में लीन ।।
अखिल विश्व में नही दूसरी, ऐसी कहीं श्रेष्ठ प्रतिमा ।
दशों दिशा में गूंज रही है, श्री बाहुबली की महिमा ।।
पूज्य गोम्मटेश्वर दर्शन से, हर्षित हृदय अनन्य हुआ ।
भक्ति भाव से प्रभु पूजन का, अवसर पा मैं धन्य हुआ ।।

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर अत्र अवतर-अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

(छन्दः गितिका)

मैं शुद्ध प्रासुक नीर की, त्रय धार चरणों में करुँ ।
यह जन्म मरण अभाव करके, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ।।
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ।।

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मैं सलिल शीतल मलय चंदन, प्रभु चरण आगे धरुँ ।
संसारताप अभाव करके, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ।।
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ।।

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मैं श्वेत उज्ज्वल धवल तंदुल, पूंज प्रभुपद मैं धरुँ ।
अक्षय अनूप अखण्ड़ पद पा, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ।।
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ।।

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुभ भाव पुष्प मनोज्ञ अनुपम, सुरभिमय अर्पण करुँ ।
यह कामरोग अभाव करके, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ॥
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ॥

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुचिमय सुरम्य स्वभावमय, नैवेद्य उर अंतर धरुँ ।
यह क्षुधाव्याधि अभाव करके, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ॥
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ॥

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मिथ्यात्व मोह अभावकर, उर ज्ञान का दीपक धरुँ ।
मैं भेदज्ञान अपूर्व पाकर, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ॥
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ॥

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

निज ध्यान अग्नि समूह में, वसु कर्म का ईंधन धरुँ ।
मैं राग द्वेष अभाव करके, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ॥
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ॥

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय अष्ट कर्मदहनाय धूंप निर्वपामीति स्वाहा ।।

मैं परम पावन सिद्ध पद की, भावना प्रति फल करुँ ।
मैं सहज शिवपद प्राप्त करके, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ॥
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ॥

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जल आदि अष्ट प्रकार निर्मित, अर्घ्य चरणों में धरुँ ॥
शाश्वत अनर्घ्य अनंत पद पा, मोक्षलक्ष्मी को वरुँ ॥

श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली के, चरण का पूजन करुँ ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित, शुद्धात्म का चिंतन करुँ ।।

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय अनर्घ्यपद पाप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जयमाला

गोम्मटेश्वर नाथ को, बारम्बार प्रणाम ।
भक्ति भाव से मैं जपूँ, प्रभु को आठों याम ।।

हे गोम्मटेश्वर परम देव, मेरा वंदन स्वीकार करो ।
हे ऋषभदेव सुत बाहुबली, मेरा अर्चन स्वीकार करो ।।
हे मात सुनंदा के नंदन, मेरा प्रणाम स्वीकार करो ।
हे अनुज भरत चक्रेश्वर के, मेरी पूजन स्वीकार करो ।।
तुम राज संपदा को ठुकरा, चल पड़े तपस्या करने को ।
प्रभु आदिनाथ से दीक्षा ले, चल पड़े कर्म वसु हरने को ।।
भीषण उपसर्गों पर जय पा, प्रभु आत्मध्यान में हुये लीन ।
शुभ अशुभ विभावों को क्षयकर, पाया शाश्वत पद निजाधीन ।।
तुम राग द्वेष पर जय पाकर, हो गये वीतरागी महान ।
केवलज्ञानी बनकर तुमने, पाया सर्वज्ञ स्वपद महान ।।
घातिया कर्म चारों हर कर, अर्हंतदेव भगवंत हुये ।
फिर क्षय करके अघातिया भी, तुम मुक्ति कामिनी कंत हुये ।।
तीनों लोकों में गूँज उठी, प्रभु विमल कीर्ति की जय गाथा ।
युग कोटि-कोटि बीते, चरणों में विश्व झुकाता है माथा ।।
यह श्रवणबेलगुल क्षेत्र सातिशय, चंद्र विंध्यगिरि मन भावन ।
है त्याग तपस्या का प्रतीक, विचरण करते निर्ग्रन्थ श्रमण ।।
अंतिम श्रुत केवलि, भद्रबाहु स्वामी की तपोभूमि पावन ।
हो गये दिगंबर चन्द्रगुप्त, सम्राट यहाँ तज सिंहासन ।।
चामुंडराय की माता ने, सपने में किये देव दर्शन ।
तब नेमिचन्द्र आचार्य देव ने, किया अपूर्व मार्गदर्शन ।।

गोम्मट चामुंडराय ने फिर, गुरु आज्ञा का बहुमान किया ।
भारत के श्रेष्ठ कलाकारों ने, प्रतिमा का निर्माण किया ॥
श्री नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती ने, बिम्ब प्रतिष्ठा की ।
तब लक्ष-लक्ष जनता ने आ, चरणों में भव्य वंदना की ॥
आश्चर्य चकित हो गये सभी, जय जय मंगलध्वनि गूंज उठी ।
सारी जगती प्रभु चरणों का, पूजन वंदन कर झूम उठी ॥
हो गई प्रतिष्ठा तो जल-थल-नभ ने, प्रभु जय जयकार हुआ ।
मंगल वाद्यों की ध्वनि गूंजी, माँ का सपना साकार हुआ ॥
यह विंध्यगिरि के पर्वत की ही, एक शिला से है निर्मित ।
ऊँची विशाल सत्तावन फिट, दर्शनकर होता विश्व चकित ॥
नासाग्र द्रष्टि निज ध्यान मयी, कायोत्सर्ग मुद्रा महान ।
पुलकित हो जाते भव्य जीव, सुरगण भी गाते मधुर गान ॥
हैं एक हजार वर्ष बीते, प्रभु प्रतिमा का निर्माण हुए ।
मंगल अभिषेक महोत्सव के, घर-घर में मंगल गान हुये ॥
श्री बाहुबली की प्रतिष्ठापना, सहस्त्राब्दि उत्सव महान ।
संदेश दे रहा जगती को, है वीतरागता ही प्रधान ॥
यह राग द्वेष अरु क्षोभ क्रोधादि, कषायें नाशवान ।
जो इन्हें नष्ट कर देता है, वह हो जाता मानव महान ॥
हे ! गोम्मटेश्वर महादेव, मैं भी शिव पथ पर आ जाऊँ ।
सम्यकत्व शक्ति को पाकर, मैं वैराग्य भावना ही भाऊँ ॥
रत्नत्रय धारी जिन मुनि बन, मैं निज स्वरुप में रम जाऊँ ।
शुद्धात्म तत्त्व का आश्रय ले, निज शाश्वत सिद्ध स्वपद पाऊँ ॥
मैं शरण आपकी आया हूँ, मेरा दुःखमय संसार हरो ।
चारों गतियों के संकट से, है गोम्मटेश उद्धार करो ॥

ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

गोम्मटेश्वर के चरण भाव सहित उर धार ।
निज आतम का ध्यान धर हो जाऊँ भव पार ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर बाहुबलीजिनाय नमः

श्री मूडबिद्री अतिशयक्षेत्र पूजन

दक्षिण भारत कर्नाटक में, दक्षिण कन्नड भाग प्रसिद्ध ।
अतिशय क्षेत्र मूडबिद्री है, कथित जैन काशी सुप्रसिद्ध ॥
क्षेत्र मूल नायक जिन स्वामी, पार्श्वनाथ को करुँ नमन ।
त्रिभुवन तिलक शीर्ष चूडामणि, चंद्रनाथ को है वंदन ॥
वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर, तीर्थंकर सब करुँ नमन ।
रत्नमयी जिनवर प्रतिमाओं को, मैं करता हूँ वंदन ॥
धवल-जय धवल-महाधवल, प्राचीन शास्त्रों के दर्शन ।
परम पवित्र भावना पूर्वक, करता हूँ जिनवर पूजन ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमासमूह अत्र अवतर-अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमासमूह अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमासमूह अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् ।

शुद्धभाव समरस जल पीकर, पर भावों का करुँ विनाश ।
त्रिविध ताप की पीड़ा नाशूँ, केवलज्ञान प्रकाश ॥
अतिशय क्षेत्र मूडबिद्री को, भाव सहित मेरा वंदन ।
जिन प्रतिमाओं के दर्शनकर, पाऊँ में सम्यक् दर्शन ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुद्ध भाव चंदन चर्चित कर, भव आताप का करुँ विनाश ।
निजस्वभाव साधन के द्वारा, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश ॥ अतिशय... ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुद्ध भाव अक्षत अर्पित कर, अक्षय पद का करुँ विकास ।
तत्त्वों का सम्यक् निर्णयकर, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश ॥ अतिशय... ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुद्ध भाव पुष्पांजलि द्वारा, काम भाव का करुँ विनाश ।
सहज स्वभाव साधन करके, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश ॥ अतिशय... ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुद्ध भाव नैवेद्य सरस पा, क्षुधा व्याधि का करुँ विनाश ।
एक मात्र निज का दर्शन कर, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश ॥ अतिशय... ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुद्ध भाव की ज्ञान ज्योति ले, मिथ्यातम का करुँ विनाश ।
दर्शमोह-चारित्र मोह हर, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश ॥ अतिशय... ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडविद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुद्ध भाव की ज्ञान धुप ले, अष्टकर्म का करुँ विनाश ।
सादि अनंत सिद्ध पद पाऊँ, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश ॥ अतिशय... ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडविद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूंप निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुद्ध भाव वैभव फल पाऊँ, भव बंधन का करुँ विनाश ।
शिवमय परम मोक्षफल पाऊँ, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश ॥ अतिशय... ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडविद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो मोक्षफल पाप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

शुद्ध भाव के अर्घ्य चढाऊँ, नाश करुँ इस भव का त्रास ।
पद अनर्घ्य प्रभु प्राप्त करुँ मैं पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश ॥ अतिशय... ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडविद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ्य पद पाप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

विशेष अर्घ्य

हीरा माणिक मरकत नीलम, मोती मूंगा दुर्लभ रुप ।
पुष्पराज वैडूर्य स्फटिक, नव रत्नों के बिम्ब अनूप ॥
महाभाग्य से दर्शन पाये, दूर शोक दुःख द्वन्द हुआ ।
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य, अर्पित कर अति सान्नद हुआ ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री मूडविद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ्य पद पाप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

षट्खंडागम-धवल-जय धवल-महाधवल जिन शास्त्र महान ।
द्वादशांग श्रुत श्री जिनवाणी, भाव सहित वन्दूँ धर ध्यान ॥
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य ले, जिन शास्त्रों को नमन करुँ ।
भेदज्ञान की प्राप्ति हेतु मैं, निज श्रद्धा के सुमन धरुँ ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री मूडविद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ्य पद पाप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जयमाला

अतिशय क्षेत्र महान को, वन्दूँ बारम्बार ।
निज स्वभाव की शक्ति से, करुँ आत्म उद्धार ॥

श्री मूडबिद्री की महिमा, भारत भर में है बहुख्यात ।
अति प्राचीन दिगम्बर, जिन चैत्यों की यह नगरी विख्यात ॥

परम पूज्य शुभ तीर्थक्षेत्र, यह अष्टादश मंदिर सुन्दर ।
कलापूर्ण प्राचीन कला का, इसमें है दर्शन सुखकार ॥
प्रथम नमूं " गुरु वसदि" मनोहर, पार्श्वनाथ प्रभु का मंदिर ।
संवत् सात शतक के लगभग, निर्मित भव्य चैत्य सुन्दर ॥
कृष्ण शिला निर्मित अति ही, प्राचीन मूर्ति जिनस्वामी की ।
यही मूलनायक प्रभु प्रतिमा, पार्श्वनाथ जगनामी की ॥
नव रत्नों के दुर्लभ अनुपम, अति प्राचीन बिम्ब पावन ।
आधे अंगुल से नौ अंगुल, की प्रतिमायें मन भावन ॥
हीरा मोती माणिक पन्ना, नीलम पुष्पराज वैडूर्य ।
मूंगा स्फटिक रत्न प्रतिमायें, स्वयं प्रकाशित हैं ज्यों सूर्य ॥
धवल-जय धवल-महाधवल, सिद्धांत ग्रन्थ अति ही प्राचीन ।
यहाँ सुरक्षित परमागम के, दर्शन से होते अघ क्षीण ॥
इसीलिए "गुरु वसदि" कहाता, है मंदिर सिद्धांत महान ।
जिन शास्त्रों के भाव ग्रहण से, कट जाता अनादि अज्ञान ॥
"होस वसदि" यात्रि भुवन तिलक, चुडामणि मंदिर सुविशाल ।
एक सहस विशाल स्तम्भों का, मंदिर नगरी का भाल ॥
चंद्रनाथ जिन प्रभु की प्रतिमा, पंच धातुमय महा मनोज्ञ ।
और अनेक वेदियों पर भी, है अलभ्य जिन मूर्ति मनोज्ञ ॥
संवत् पंद्रहसौ का निर्मित, तीन खण्ड का यह मंदिर ।
ऊँचा मान स्तंभ सुशोभित, प्रांगण में उन्नत सुन्दर ॥
शिल्पकला नैपुण्य शिल्पियों का, अदभुत पुरुषार्थ सफल ।
तीर्थंकर आदिक छह मंडप, भव्य चित्र शोमित उज्जवल ॥
"वडग वसदि" में चंद्रनाथ स्वामी की, है प्रतिमा प्राचीन ।
ऊँचा मान स्तम्भ जहाँ भी, दर्शनीय जो अर्वाचीन ॥
"शेट्ट वसदि"श्री जिन स्वामी, महावीर प्रभु की प्रतिमा ।
चौबीसों तीर्थंकर प्रभु की, प्रतिमाओं की है महिमा ॥
"हिरे वसदि " में शांतिनाथ स्वामी का, श्रेष्ठ मूल विग्रह ।
चौबीसों जिनवर प्रतिमाएँ, बार-बार वन्दूँ जिनगृह ॥
"वसदि वेटकेरी" में, नेमिनाथ प्रभु की प्रतिमा है अभिरामी ।

''कोटि वसदि''मे, नेमिनाथ प्रभु की प्रतिमा है अभिरामी ॥
''विक्रम शेट्टि वसदि'' में, पर्यकासन आदिनाथ भगवान ।
चौबीसों जिनराज मूर्तियाँ, उन्नत मान स्तम्भ महान ॥
''कल्लु वसदि'' में, चन्द्रनाथ अरु शीतलनाथ विराजित है ।
''लेप्प वसदि'' में, चंदा प्रभु हैं मान स्तंभ सुशोभित है ॥
''देरम शेट्टि वसदि'' में, जिनवर अरह मल्लि मुनिसुव्रतनाथ ।
श्वेत शिलामय चौबीसों जिन, ऊपर मल्लिनाथ जगनाथ ॥
''चोल शेट्टि वसदि'' में जिन प्रभु, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश ।
पर्यकासन तीर्थंकर, चौबीसों की हैं मूर्ति विशेष ॥
''महादेव शेट्टि वसदि'' में, ऋषभदेव तीर्थंकर मूर्ति ।
कृष्णवर्ण की प्रभावलय में, चौबीसों जिन की अनुमूर्ति ॥
''बेंकि वसदि'' में, श्री अनंत जिन कायोत्सर्ग रुप शोभित ।
प्रभावलय में तीर्थंकर चौबीस, देख मन है मोहित ॥२२॥
''केरे वसदि'' सरोवर तट पर, मल्लिनाथ प्रभु का मंदिर ।
''पड्ड वसदि '' में विमल-अनंत, सुधर्मनाथ जिनबिम्ब प्रवर ॥
श्री जैन मठ में, तीर्थंकर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा ॥
सर्व मंदिरों की सुव्यवस्था से, ही है मठ की गरिमा ॥
''जैन पाठशालेय वसदि '' में, मुनिसुव्रत जिन तीर्थंकर ।
अमृत शिलामयी निर्मित है, अति प्राचीन बिम्ब सुन्दर ॥
यही अठारह जिन मंदिर, कन्नड में वसदि कहाते हैं।
इनके दर्शन करने को प्रति मास सहस्त्रों आते हैं ॥
''रमा शोध संस्थान ''आदि, संस्थाएँ करती कार्य महान ।
ताड़ पत्र पर लिखित सुदुर्लभ, चार सहस्त्र ग्रंथ विज्ञान ॥
संवत् बारह सौ सतहत्तर में, स्थापित गुरुपीठ हुई ।
भट्टारक श्री चारुकीर्ति, नामावलि पीठासीन हुई ॥
रत्नमूर्ति अरु धवल-जयधवल-महाधवल के दर्शनकर ।
भव्य जीव पुलकित होते है, पाते हैं आनन्द मधुर ॥
पूरे भारत से यात्रीगण लाखों, आते है प्रतिवर्ष ।

जिन वैभव के साक्षात् दर्शन कर, होता सबको हर्ष ॥
सर्व व्यवस्था चारुकीर्ति, भट्टारक जी करते उत्तम ।
नया सुरक्षा भवन बनाया, अद्वितीय सुन्दर अनुपम ॥
षट्खंड़ागम की जय ध्वनि के, यहाँ गूँजते हैं जयगान ।
जिन अभिषेक-देव पूजन कर, आता हैं निज का बहुमान ॥
यह अनमोल महान सुनिधि, देती हैं उर में शांति अपार ।
हर्ष पूर्ण उल्लास जगाती, श्री जिन धर्म परम सुखकार ॥
धवल-जय धवल-महाधवल का, सार श्रेष्ठ रत्नत्रय धर्म ।
इसे प्राप्तकर हे प्रभु मैं भी, नाश करुँ दुःखमय वसुकर्म ॥
मूडबिद्री के निकट "कार्कल", क्षेत्र सुदर्शनीय प्राचीन ।
श्री बाहुबली की ऊँची प्रतिमा, पर्वत पर है आसीन ॥
संवत् पंद्रहसौ के लगभग, निर्मित बहु वैभवशाली ।
अष्टादश जिन मंदिर अनुपम, नीचे हैं शोभाशाली ॥
है "वरांग " में तीन जिनालय, बाहुबली का बिम्ब महान ।
सलिल सरोवर में जिन मंदिर, जिसकी अलग निरालीशान ॥
है "वेणूर" क्षेत्र में, स्वामी बाहुबली की मूर्ति प्रधान ।
श्री जिनवर के आठ जिनालय, जिनमें होते मंगल गान ॥
"धर्मस्थल" में, चंद्रनाथ आदिक के दो मंदिर पावन ।
नूतन विग्रह बाहुबली का, लघु पर्वत पर मन भावन ॥
श्री हेगडे जी के द्वारा, दिव्य मूर्ति निर्मापित है ।
बाहुबली विहार मनोरम, लख जन मन आकर्षित है ।
"हुमचा"अतिशय क्षेत्र मनोहर, छोटा सा पर्वत सुन्दर ।
ऊपर नीचे आठ जिनालय, हैं शोभायमान सुखकार ॥
"श्रवण वेलगुल" चंद्रगिरि पर, हैं जिन मंदिर अति सुविशाल ।
शिलालेख हैं चंद्रगुप्त के, भद्रबाहु के चरण विशाल ॥
" विन्ध्यगिरि" पर गोम्मटेश्वर की, प्रतिमा संसार प्रसिद्ध ।
हैं बत्तीस जिनालय अद्भूत, नाम जैनबिद्री सुप्रसिद्ध ॥
दक्षिण में शत-शत जिन मंदिर, दिव्य पुरातन मन भावन ।
"गिरिकुन्द्रादि" "हलेविडुं" "गोम्मटगिरि", आदिक हैं अतिपावन ॥

''पोन्नुर हिल'' कुन्दकुन्द की, भव्य की भव्य तपस्या भूमि प्रधान ।
इन सबके दर्शन पूजन से, होता अतिशय पुण्य महान ॥
भाव सहित दर्शन पूजन कर, जीवन सफल करुँ स्वामी ।
तत्त्व भावना पूर्वक निज, का ध्यान करुँ अन्तर्यामी ॥
जब तक नहीं स्वभाव दष्टि हैं, तब तक नहीं स्वरुप विकास ।
शांत धर्म मय होने को प्रभु, प्रतिदिन करुँ तत्त्व अभ्यास ॥
जब तक पर्यायों में मोहित, तब तक ही मैं मिथ्याद्रष्टि ।
पर से आत्मबुद्धि हटते ही, हो जाऊँगा सम्यक्द्रष्टि ॥
मूडबिद्री के श्री जिन मंदिर, जिन प्रतिमा-जिन शास्त्र महान ।
सबको अर्घ्य समर्पण करके, मैं प्रभु करुँ आत्म कल्याण ॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रिक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ्य पद पाप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

मूडबिद्री के क्षेत्र की, महिमा महा महान ।
जिन पूजन से प्राप्त हो, वीतराग विज्ञान ।।

इत्याशीर्वाद

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्री अतिशय क्षेत्रभ्यो नमः।

श्री चौबीस तीर्थंकर स्तुति

(गीतिका)

जय ऋषभदेव जिनेन्द्र जय जय, अजित प्रभु अभ्यंकरम् ।
जय नाथ सम्भव भव विनाशक, जयतु अभिनंदन परम् ।।१।।
जय सुमतिनाथ सुमति प्रदायक, पदमप्रम प्रणतेश्वरम् ।
जय जय सुपार्श्व स्वपर प्रकाशक, चन्द्रप्रभ चन्द्रेश्वरम् ।।२।।
जय पुष्पदन्त पवित्र पावन, जयति शीतल शीतलम् ।
जयश्रेष्ठ श्री श्रेयांस प्रभुवर वासुपूज्य सु निर्मलम् ।।३।।
जय अमल अविकल विमल प्रभु, जय जय अनन्त आनंदकम् ।
जय धर्मनाथ स्वधर्मरवि जय, शान्ति जग कल्याणकम् ॥
जय कुन्थुनाथ अनाथ रक्षक, अर सुनाथ अरिंजयम् ।
जय मल्लि प्रभु हत दुर्नयम जय, मुनिसुव्रत मृत्युंजयम् ।।५।।
जय मुक्ति दाता नमि जिनोत्तम, नेमि प्रभु लोकेश्वरम् ।
जय पार्श्व विध्नविनाशनम्, जय महावीर महेश्वरम् ।।६।।
जय पापपुण्य निरोधकम्, ज्ञानेश्वरम् क्षेमकरम् ।
जय महामंगल मूर्ति जय, चौबीस जिन तीर्थकरम् ।।७।।

श्री चन्द्रप्रभ पूजन

(छन्द-जोगीरासा)

तज गृहजाल महादुःखकारण, चरण शरण में आया ।
चन्द्र समान शान्त निर्मल छवि, लखि आनन्द उपजाया ॥
तन मन धन है सर्व समर्पण, करुँ अर्चना स्वामी ।
चंचल परिणति थिर हो निज में, तुम सम त्रिभुवननामी ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्राननम् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(छन्द-भुजंगप्रयात् तर्ज : मै हूँ पूर्ण ज्ञायक ....)

चढ़ाऊँ क्षमाभाव मय नीर सुखकर ।
नशें जन्म मरणादि कारण सु दुखकर ॥
अहो ! चन्द्रप्रभजी की पूजा रचाऊँ ।
सहज ज्ञानमय भावना सहज भाऊँ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

चन्दन चढ़ाऊँ परम शान्तिमय प्रभु ।
भवाताप नाशे जजूँ आपको विभु ॥ अहो...॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।।

अक्षत अमल भाव-मय देव लाऊँ ।
विनाशीक जग के अपद नाहिं चाहूँ ॥ अहो...॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।

अतीन्द्रिय निजानन्द निज माहिं सरसे ।
सतावे नहीं काम जिनवर शरण से ॥ अहो...॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।

चिदानन्द-सुधारस प्रभो पान करके ।
क्षुधादिक महादोष क्षणमाहिं हरके ॥ अहो...॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

प्रकाशित सहज ज्ञान में नाथ ज्ञायक ।
झलकते नशें मोहतम दुःखदायक ॥ अहो...॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।।

जलें कर्म सब आत्म-ध्यानाग्नि माहीं ।
सुविकसित हों निजगुण नहीं अन्त पाहीं ॥ अहो...॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूंप निर्वपामीति स्वाहा ।।

न लौकिक फलों की प्रभो ! कामना है ।
महा मोक्षफल पाऊँ यह भावना है ॥ अहो.॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलपाप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

धरुँ भक्तिमय देव प्रासुक सु अर्घ्यं ।
लहूँ आत्म प्रभुता सु अविचल अनर्घ्यं ॥ अहो.॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्य पद पाप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

चन्द्रप्रभ जिनराज का, गर्भागम सुखकार ।
चैत कृष्ण पंचमी दिवस, पूजों भाव सम्हार ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपंचम्यां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीचन्दप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे श्री जगदीश ।
इन्द्रादिक उत्सव कियो, नह्वन कियो गिरिशीश ॥

ॐ ह्रीं पोषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीचन्दप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भव-तन-भोगविरक्त हों, जिनदीक्षा अविकार ।
धरी पौष वदि ग्यारसी, पूजों करी जयकार ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीचन्दप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

फाल्गुन श्यामा सप्तमी, प्रगट्यो केवलज्ञान ।
आतम महिमा मुक्तिपथ, दर्शायो भगवान ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीचन्दप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सित फाल्गुन सप्तमि गये, मुक्तिमाँहि परमेश ।
पूजत पाप विनष्ट हों, धन्य धन्य सर्वेश ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीचन्दप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(सोरठा)

जयवन्तो शिवभूप, अचिन्त्य महिमा के धनी ।
परमानन्द स्वरुप, गाऊँ जयमाला प्रभो ॥

(तर्ज-हे-दीनबन्धु)

हे चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! सत्य शरण हो तुम्हीं ।
हे वीतराग देव ! तारण तरण हो तुम्हीं ॥
कर दर्श नाथ सहज ही कृतकृत्य हो गया ।
प्रभु ! स्वयं स्वयं में ही सहज तृप्त हो गया ॥

विभु ! तेजपुंज आत्मा को आप जानके ।
होकर उदास लोक से दीक्षा सु धार के ॥
ध्यानाग्नि में चहुँ घाति कर्म सहज जलाएँ ।
अनन्त दर्श-ज्ञान-सुख-वीर्य तब पाएँ ॥
अष्टम हुए तीर्थेश धर्मतीर्थ बताया ।
ध्रुव तीर्थरुप आत्मा प्रत्यक्ष दिखाया ॥
आत्मानुभुतिमय अहो परमार्थ तीर्थ है ।
जिससे तिरें भवसिन्धु वह सत्यार्थ तीर्थ है ॥
निजभाव में रमते सदा तुम ही सु राम हो ।
निष्काम परमब्रह्म हो आनन्दधाम हो ॥
परमार्थ मुक्तिमार्ग के हो आप विधाता ।
विश्वेश विष्णु रुप हो सब विश्व के ज्ञाता ॥
अतिशय तुम्हें जो देखते वे दर्शनीय हों ।
जो भावसहित पूजते वे पूजनीय हों ॥
वाँछा ही मिटे देव तुम्हारे सु ध्यान से ।
हो प्रगट आत्मिकभाव आत्म-ध्यान से ॥
प्रभु ! ध्यानमय मुद्रा सहज वैराग्य जगाती ।
रागांश हों निश्शेष ज्ञान ज्योति जगाती ॥
चैतन्यमय परमार्थ भावना सहज रहे ।
भवनाश हो शिववास हो दुर्भावना दहे ॥
गद्-गद् हुआ बहुमान से, बस मौन ही रहूँ ।
नाथ हो निर्ग्रन्थ तेरा पन्थ में गहूँ ॥
तेरे प्रसाद से सहस समाधि पाऊँगा ।
ज्ञाता हूँ मुक्त ज्ञाता रुप ही रहाऊँगा ॥

(छन्द-धत्ता)

श्रीचन्द्र जिनेशं, जय जगदीशं, धर्मेशं भवसर-तारी ।
अद्भुत प्रभुतामय, हुआ सु निर्भय, पूजत पद मंगलकारी ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

समयसारमय आपकी, प्रभुता तिहूँ जग सार ।
विस्मय उपजावे प्रभो, भुक्ति-मुक्ति दातार ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपत्)

श्री बाहुबली भगवान विधान

चैतन्यधाम तीर्थ

(दिग्पाल)

चैतन्यधाम तीरथ, दुनिया में सबसे न्यारा ।
शुद्धात्म साधना को, साधर्मी प्राण प्यारा ॥
संसार सिन्धु तिरने जिन धर्म ही शरण है ।
शुद्धात्म साधने को ये तीर्थ है नमन है ॥
अनमोल है ये जीवन, मिलना महा है दुर्लभ ।
महा भाग्य मिल गया वो सार्थक करो ये भविजन ॥
महावीर प्रभु का मंदिर दर्शत आनंद आवें ।
पारस प्रभु सीमंधर जी भी यहीं विराजे ॥
श्री शांतिनाथ नेमीश्वर, भवि जीव वंदते है ।
जिनवाणी गूँजती है, गुरुदेव गूँजते हैं ॥
गोम्मटेश तीर्थ यात्रा महा भाग्य आज आयें ।
विषयों में मन ना जाये, निर्ग्रंथ पंथ भाये ॥
ये धर्मी तीर्थ यात्रा आराधना प्रथम हो ।
बस साधना प्रथम हो वात्सल्य हो विनय हो ।
हमें राग जीतना हैं हमें राग टालना हैं ।
इच्छाओं की गुलामी से अब तो छूटना है ॥
जीवन सफल हमारा हो नाथ तुव शरण में ।
आराधना हो मंगल. जिन धर्म की शरण में ॥

मंगलाचरण

मंगलं भगवान वीरो, मंगलम गौतमो गणी । मंगलं कुंद कुंदाद्यो, जैन, धर्मोस्तु मंगलं ॥
सर्व मंगल्य मांगल्यं, सर्व कल्याण कारकम । प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनम् जयतु शासनम् ॥

(रोला)

तीन काल के सब सिद्धो को, नमन हमारा ।
नाम मात्र ही धन्य आपका तारण हारा ।
तीन काल के अरिहंतों से जग उजियारा ।
मोह महातम मेटन समरथ दीप तुम्हारा ॥
तीन काल के गणधर प्रभु जयवंत हमारे ।
दिव्यध्वनि के धर्म मर्म परकाशनहारे ॥

तीन काल के आचार्यों की करुँ वंदना ।
पंचाचार परायण गुरुवर की आराधना ॥
उपाध्याय भगवंत पठन-पाठन करनारे ।
द्वादशांग में उपादेय चैतन्य निहारें ।
तीनकाल के सर्व साधुओं का अभिनंदन ।
चलते फिरते सिद्ध हमारे शत् शत् वंदन ।
सभी अकृत्रिम कृत्रिम चैत्यालय को वन्दू ।
जिन बिम्बों को मन मंदिर में नित अभिनन्दु ॥
जैन बद्री अर मूल बद्री तीरथ को वंदन ।
रत्नो के जिन बिम्ब विराजे प्रभु अभिनंदन ॥
ताड़पत्र पर रची यहीं जिनवाणी राजे ।
धवल जयधवल आदि पूज्य श्रुत यहीं विराजें ॥
धर्मस्थल कुंद्रादि और पोन्नूर मलय है ।
कुंद कुंद विदेह गये यहीं वो स्थल है ॥
बाहुबली प्रभु दर्शन पाये धनि पावन दिन ।
देव-शास्त्र-गुरु पंच नमूं परमेष्ठी वंदन ॥

(परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

तीर्थ वंदना (उद्देश्य)

(रोला छंद)

तीर्थ वास की सहज भावना भविजन भाते ।
मोह जाल से बचने धर्मी भाव जगाते ॥
शुद्धातम ही तीर्थ शाश्वत प्रभु बतलाया ।
रत्नत्रय ही धर्म तीर्थ जिन मुनि सब गाया ॥
विषय वासना से बचने हम तीरथ आये ।
पाप ताप संताप मिटें प्रभु शरणा पाये ॥
दक्षिण में जो सन्त साधु मुनिराज हुए हैं ।
दक्षिण में ही निर्ग्रन्थो ने ग्रंथ रचे हैं ॥
यहीं जिनागम परमागम जी रचे गये हैं ।
यहीं सुरक्षित ताडपत्र भी अभी रखे हैं ॥
संस्कृति की रक्षा में जीवन होम कर गये ।
धन्यधन्य वे श्रावक मंदिर हमें दे गये ॥

शुद्धातम की आओ साधना यही करें हम ।
परमातम हूँ रुचि जगाकर धन्य बनें हम ॥

(परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली पूजन

(छंद-रोला)

जिन शासन की शान, बाहुबली प्रभु हमारे ।
जिन शासन के प्राण तत्त्व दरसावन हारें ॥
नग्न दिगम्बर रुप सहज स्वाभाविक प्यारा ।
ज्ञान ध्यान में मग्न मुनीश्वर रुप तुम्हारा ॥
धिक् धिक् यह संसार स्वार्थ जग वृत्ति निरखकर ।
दीक्षा लेकर मग्न हो गये, विन्ध्य गिरी पर ॥
कामदेव थे प्रथम, मुक्ति भी प्रथमहि पायें ।
हृदय विराजों बाहुबली, भगवान हमारें ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् ।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

(जोगी रासा)

अहो विश्व विजयी होकर भी, राज्य नहीं मन भाया ।
मोह जयी होने दीक्षा ली, सार्थक जन्म तुम्हारा ॥
बाहुबलि जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पायें ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षाये ।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

भवाताप में नही झुलसना, स्वाभिमान उर जागा
स्वारथ का संसार निरखकर दीक्षा ली मुनि नाथा ॥
बाहुबली जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पाये ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षोये ।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीनो ऋतुयें सिर पर बीती, अचल रहे गुरु ज्ञानी ।
अक्षय पद की प्राप्ती हेतु दृढ संकल्पित मुनि ध्यानी॥
बाहुबली जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पाये ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षाये ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कामदेव होकर भी तुमने, वश में काम किया था ।
कंचन और कामनी सुख कों, निजबल जीत लिया था ॥
बाहुबली जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पाये ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षाये ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय कामबाण- विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

अहो! स्वानुभव अमृत रस के स्वादी धन्य मुनीश्वर ।
एक वर्ष तक अनशन तपसे कर्म झराये झर-झर ॥
बाहुबली जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पाये ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षाये ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूर्य-चंद्र-मणि रत्नदीप से, मोह महांध ना जावे ।
आत्म ज्ञान की एक किरण ही मुक्ति यहीं दिखलावे ॥
बाहुबली जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पाये ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षाये ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

तनसे लिपट गई थी बेले लिपटे सर्प भुजंगे ।
आत्म ध्यान धरि कर्म विनाशे अंतर आनंद बरसे ॥
बाहुबली जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पाये ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षाये ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

देख तपस्या बाहुबली की, भरतचक्री सिरनाया ।
उसी समय कैवल्य ज्ञान, प्रकटा फल उत्तम पाया ॥
बाहुबली जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पाये ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षाये ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

धन्य धन्य बाहुबली मुनिवर जिनवर आप सभी हो ।
भरत क्षेत्र अवसर्पिणी काल के प्रथम जिनेश तुम्ही हो ॥
भक्ति भावों के अर्घ्य सजाकर नाथ चढ़ानें आया ।
आप समान बना लो स्वामी जिनवर पद मन भाया ॥
बाहुबली जी परिषह विजयी, प्रथम मुक्ति श्री पाये ।
विश्व विमोही जिन प्रतिमा लख, रोम रोम हर्षाये ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(जयमाला)

(दोहा)

बाहुबली पूजा हुई, हर्षित हृदय अपार ।
महा भाग्य दर्शन हुये अब गाऊ जयकार ॥
अंतर में आनंद छायो, जिनवर दर्शन पायो ।
बाहुबली प्रभु दर्शन पाकर, रोम रोम हर्षायो-हर्षायो ॥
अन्तर में आनंद छायो.... ॥ टेक ॥

कब से थी अभिलाष हमारे, भाई भावना आज पधारे ।
अन्तरमुख प्रभु दर्शन करके, सफल भये है नेत्र हमारे ॥
जीवन धन्य बनायो-बनायो । अन्तर में आनंद छायो .... ॥१॥
प्रतिमा सुंदर अति मनहारी, भक्ति उमडती भव भय हारी ।
इकटक रहूँ निरखता प्रभु को, बंद ना होंते पलक हमारी ॥
भाव यही उमगायो-उमगायो । अन्तर में आनंद छायो .... ॥२॥
नेमिचंद्र मुनिराज हमारे, गोम्मट राजा को समझा ये रहे ।
विन्ध्यगिरी पर्वत पर देखो, वहाँ बाहुबली नाथ विराजे ॥
शिल्पी ने दर्शन पायो रे पायो । अन्तर में आनंद छायो .... ॥३॥
आप बाहुबली नाथ कहाते लेकिन तन बल भिन्न दिखाते ।
ऐसा आतम ध्यान जमाया, बरसों अमृत आनंद पाया ॥
सांचे मुनी हमारे-हमारे। अन्तर में आनंद छायो .... ॥४॥
विजय श्री चक्री ले आये, बाहुबली सिर नही झुकाये ।
युद्ध प्रसंग बना भाई से, तब हृदय वैराग्य जगा रे ॥
स्वारथी जग दिखलायो-दिखलायो । अन्तर में आनंद छायो .... ॥५॥
दीक्षा ले मुनिराज हमारे खडे हुए बरसो तप धारे ।
लिपट गई तन पर बेले रे, बांबीं बनी सर्पो की वहीं रे ॥
ऐसो ध्यान जमायो-जमायो । अन्तर में आनंद छायो .... ॥६॥
श्रवण बेलगोला भू प्यारी, वीरसेन तपथली है न्यारी ।
सौ व्यक्ति को जैन बनाते, तब आहार करन को जातें ॥
सुनकर अचरज आयो जी आयो । अन्तर में आनंद छायो .... ॥७॥
लेने कभी आहार न आयें, नही विहार करने मन भायें ।
ज्ञान-ध्यान व्यवसाय बढ़ाया, केवलज्ञान महाफल पाया ॥
आनंद-आनंद छायो जी छायो । अन्तर में आनंद छायो .... ॥८॥

जैसी दशा आपने धारी, ऐसी दशा होय कब म्हारी ।
विषयों में मन कभी न जावें, इन्द्रादिक पद याद न आवें ॥
आशिष लेने आयो जी आयो । अन्तर में आनंद छायो .... ॥ ९॥

ॐ ह्री श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बाहुबली भगवान दिखलाया जग स्वार्थमय ।
पाऊ आतम ज्ञान, मोह जयी मैं भी बनूं ॥

(परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री नेमीचंद्राचार्य देव पूजन

(रोला छंद)

धन्य मुनिश्वर नेमीचंद्र गुरु नमन हमारा ।
बाहुबली प्रभु दर्श मिले उपकार तुम्हारा ॥१॥
विषयाशा आरंभ रहित मुनि दर्श तुम्हारें ।
जिन-शासन की शान तुम्ही आदर्श हमारे ॥२॥
आप परीषह जयी, अहो ! उपसर्ग जयी हो ।
मोह जयी हो, कर्म जयी, इन्द्रिय विजयी हो ॥३॥
वायु सम निःसंग अवनि सम समता सागर ।
चक्री चरणन शीश नाय निर्मानी गुरुवर ॥४॥
जिन-शासन स्तंभ दर्श ही दुर्लभ थारे ।
हृदय पधारो नाथ तरसते नैन हमारे ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र-आचार्य ! अत्र अवतर अवतर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥
अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् !!! पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

(छंद-वीर)

धन्य धन्य मुनिदशा स्वानुभवमय, जिनका मंगल जीवन है ।
धन्य आप की समता-थिरता, सहज ज्ञान वैराग्य नमन है ॥
भव सागर में पड़े, हुए हम, तुम ही शरण सहारे हो ।
गोम्मटेश दर्शन दाता गुरु, तारो तारण हारे हो ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र- मुनिवरेभ्यो जन्म-जरा- मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भव आताप विनाशनहारी, धन्य आपकी वाणी है ।
अणु-अणु की स्वतंत्रा घोषक, मंगलमय सुखदानी है ॥
अहंकार ममकार गला दे, तुम्हीं जगावनहारे हो ।
गोम्मटसार, रचयिता गुरुवर तारो तारणहारे हो ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र-मुनिवरेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा ॥

पिता झलक ज्यो दिखे पुत्र में, झलक आपमें भगवन् की ।
चौबीसों परिग्रह के त्यागी, शान्त सौम्य छवि मुनिवर की ॥
पर्यय मूढ बना परसमया, तुम्ही बचावनहारे हो ।
षट्खंडागम मर्मी गुरुवर, तारो तारणहारे हो ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र-मुनिवरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा ।

सहज स्वानुभव के झूले में, सदा झूलते रहते हो ।
चिदानंद चैतन्य बाग में, गुरुवर क्रीडा करते हौ ॥
भोग-रोग से पाप ताप से, तुम्ही बचावनहारे हो ।
जिनशासन के मर्मी गुरुवर तारो तारणहारे हो ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र मुनिवरेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

एक बार दिन में आहार गुरु, पाणिपात्र में लेते हो ।
रस विहीन आहार ग्रहण कर सरस दिव्य ध्वनि देते हो ॥
सोने का सूरज ऊंगा ज्यो, लगता जब दर्शन होते ।
षट्खंडागम मर्मी गुरुवर तारो तारणहारे हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिचंद्र मुनिवरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हे चैतन्य प्रदीप आपसे ही धरती पर उजियारा ।
कौन बतावे चेतन राजा, निज निधि आनंद भंडारा ॥
मोहमहामद पियो अनादि, भटक्यो भवदधि खारा हो ।
षट्खंडागम मर्मी गुरुवर तारो तारणहारे हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिचंद्र मुनिवरेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

घोर परिषह उपसर्गो में, तुमने समता भाव धरा ।
ऐसी दशा होय कब मेरी जगे आत्मबल प्रभु मेरा ॥
ध्यान अग्नि से कर्म जलाये, धर्म दशांगी धारे हो ।
षट्खंडागम मर्मी गुरुवर तारो तारणहारे हो ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिचंद्र मुनिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

महा भाग्य से मिला जिन धरम, मर्म समझ में अब आया ।
अपना ही भगवान आत्मा, भूल स्वयं ही दुख पाया ॥

बाहर सुख को फिरा खोजता, निज घर भरे भंडारे हो ।
षट्खंडागम मर्मी गुरुवर तारो तारणहारे हो ।।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिचंद्र मुनिवरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।।

धन्य , मुनिश्वर, आप जिनेश्वर, जिन शासन स्तंभ अहो ।
अहो! तीन कम नौ करोड मुनि जग में नित जयंवत रहो ।।
गुरु बिन मार्ग शुरु कैसे हो, गुरु खेवटिया तारण हार ।
शान्त सौम्य छवि देख आपकी, आनंद होवे अपरम्पार ।।
पद अनर्घ्य पाने हे गुरुवर राह दिखावन हारे हो ।
हे सिद्धान्त चक्रवर्ती गुरु, तारो तारणहारे हो ।।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिचद्र- मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।

जयमाला

मुक्ति वधू वरने चले, धन्य मुनिश्वर संत ।
गाऊँ जयमाला सुखद, भक्ति करे भव अंत ।।
(जोगीरासा)

धन्य-धन्य निर्ग्रन्थ मुनिश्वर, दर्शन तेरा पाया ।
महा भाग्य खिल गया हमारा रोम रोम हर्षाया ।। १।। धन्य...
महा सुखी है ऋषि हमारे ऋद्धि-सिद्धि शिर नाये ।
चक्री चरणन शीश नवाये, रंच मान नहि आये ।।
महा पुण्य से गुरुवर तेरी चरण शरण में आया ।
धन्य-धन्य मुनिदशा देखते, मुनि होने मन आया ।।२।। धन्य..
.विषयों की आशा नहिं जिनके, साम्य भाव धन रखते ।
शुद्ध उपयोगी परम विरागी मगन ध्यान में रहते ।।
धर्म अहिंसा की मूरत हो, आतम राम सुहाया ।। ३।। धन्य...
पंचेन्द्रिय विषयो में फंसकर, कैसे प्राण गंवायें ।
मृग गज मीन अलि अहि आदिक, तड़प-तड़प दुखपाये ।।
चारो गति दयनीय दशा का, कोई न तारणहारा ।। ४ ।। धन्य...
दिव्य देवगति मिली भाग्य से, देखें विषय नजारें ।
भूल गया आतम आराधन, सागर उम्र गुजारें ।।
ढली एक दिन खिली कली अर, थावर मांहि समाया ।।
धन्य-धन्य निर्ग्रंथ मुनिश्वर, सुन वैराग्य समाया ।।५।।

पाप किये फल मिली अधोगति, चीखें साथी सारे ।
घोर वेदना भूखप्यास वहाँ तड़फे प्राण हमारे ।।
अब न करुंगा पाप, लिये संकल्प निकल तो आया ।।६।। धन्य.
मायाचारी के फल मैंने, गति तिर्यंच की पायी ।
क्षुधा वेदनी पिंड न छोडे, वध बंधन दुखदायी ।।
साथी सारे निकल गये, मै अब तक रो रो हारा ।।७।। धन्य.
महाभाग्य मानुष तन पाया, मान न पीछा छोड़े ।
मान महा विष रुप जगत में घोर वेदना जोड़े ।।
कैस हो कल्याण प्रभुजी, अब मैं अति घबराया ।।८।। धन्य.
है चैतन्य शिल्पी बाहुबली, तुमको प्रथम दिखायें ।
तिल में तेल दूध में धृत ज्यों प्रभु पाषाण समायें ।।
नग्न दिगम्बर साधु मुद्रा, ही होती समझाया ।।९।। धन्य.
मुनि दीक्षा ली बार अनंतो, जिन दीक्षा नहिं भायी ।
आतम ज्ञान बिना हे ! गुरुवर, सुख की किरण न आयी ।।
बाह्यांतर निर्ग्रन्थ बनूं मैं, यह संकल्प समाया ।।१०।। धन्य.
कब अपूर्व अवसर यह आवे, चेतन रस में डोलूं ।
शुद्ध उपयोगी सन्त बनूं मैं, ज्ञान सुधारस घोलूं ।
होवे दशा तुम्हारी जैसी, सहज भाव रंग लाया ।।११।।
धन्य-धन्य निर्ग्रंथ मुनिश्वर, दर्शन तेरा पाया ।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिचंद्र- मुनिवरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये महार्घ्यं निर्व. स्वाहा ।।

(दोहा)

श्रवणबेलगोला अहो! तीरथ महा पुनीत ।
वँदु बाहुबली प्रभो जयवन्तो जयईश ।।

(परिपुष्पांञ्जलिं क्षिपेत्)

अर्घ्यावली

सुद्धस्स य णिव्वाणं सोच्चिय सिद्धो णमो तस्स ।
सुद्धस्स य सामण्णं भणियं सुद्धस्स दंसणं णाणं ।।

अन्वयार्थ-शुद्ध (शुद्धोपयोगी) को श्रामण्य कहा है और शुद्ध को दर्शन तथा ज्ञान कहा है और शुद्ध के निर्वाण होता है वही शुद्धोपयोगी ही सिद्ध होता है उसे नमस्कार हो ।
(श्री प्रवचनसार:२७४)

(रोला)

शुध उपयोगी सन्त धन्य मुनिराज हमारे ।
शुध उपयोगी सन्त तुम्ही भवि तारणहारे ॥
रत्नत्रय के धनी धर्म के मर्म बताते ।
खुद रहते निर्भार, जगत निर्भार बनाते ॥
ऐसे साधु मुनिवर के गुण कैसे गाऊँ ।
भक्ति करे वाचाल मौन भी न रह पाऊँ ।

ॐ ह्रीं श्री समस्त शुद्धोपयोगी- मुनिवरेभ्यो नमः अनर्घ्य निर्व. स्वाहा ॥

मुनिवरों का सुख

तत्सुखं न देव राजस्य, न सुखं चक्रवर्तिनः ।
यत्सुखं वीतरागस्य मुनेरेकांत वासिनः ॥

(रोला)

रत्नत्रय के धनी धन्य मुनिराज हमारे ।
सतत स्वानुभव रस पीते आनंद सदा रे ॥
पराधीन सपनेहूँ सुख नाहि, ज्ञान कराते ।
सहज सदा स्वाधीन सौख्य पीते-पिलवाते ॥
बाहर हो अंधियारा भीतर ज्ञान उजारा ।
बाहर दीखे मलिन देह भीतर शुचि धारा ॥
धन्य धन्य मुनिराज, मग्न निज चेतन माहि
आनंद अपरम्पार कह सकें कोऊ नाहि ॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रयधारी समस्त मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

तीन कम नौ करोड मुनिराजो का अर्घ्य

(रोला)

भक्ति भाव से अर्घ्य लिये आया प्रभु द्वारे ।
शत इन्दो से वंदित प्रभुवर धन्य हमारे ॥
नाथ कहुँ क्या कथा आप सब जानत ज्ञानी ।
जग प्रपंच में पडा़ कभी नहिं महिमा जानी ॥

महामोह वश दीन हीन भव-भव भटकाया ।
दिव्य ध्वनि तो सुनी मगर सरधान न लाया ॥
आज आपकी शरण मिली, अति आनंद पाया ।
प्रभो आपने ज्ञायक हुँ भगवान दिखाया ॥
जयवन्तों मुनिराज धन्य पौरुष है थारा ।
महाअर्घ्य से पद अनर्घ पाऊँ शिव द्वारा ॥

ॐ ह्रीं श्री तीन कम नौ करोड मुनिवरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

मुनीश्वर-भक्ति

(तर्ज- जब मुनिवर आते है, वैराग्य जगाते है ...)

जो तीरथ आते है, सौभाग्य जगाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य सजाते हैं ॥
जिन मंदिर में जिनवर, तन मंदिर में मुनिवर ।
बस ज्ञान ध्यान में ही, नित मग्न रहें गुरुवर ॥
बिन बोले मुद्रा से, शिव पंथ दिखाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य जगाते है ॥१॥
हीरा घन चोटों को, हंसते-हंसते सहता ।
जो अग्नि संग करे, वो लोहे संग पिटता ॥
बस भेदविज्ञानी ही, आनंद मनाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य जगाते है ॥२॥
भगवन्तौ की वाणी, भव्यो को सुखदानी ।
जब जो होना निश्चित, कहते केवलज्ञानी ॥
निश्चित मुनीश्वर ही,निश्चित बनाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य जगाते है ॥३॥
षट द्रव्य मयी दुनिया यह अकृत नगरी हैं ।
कर्ता-धर्ता न कोइ, सृष्टि अति संदुर हैं ॥
ज्ञाता-दुष्टा प्राणी, ही शिव सुख पाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य जगाते है ॥४॥
जैसे पर के धन से, कोई धनी नहिं होता ।
वैसे से ही ज्ञेयों से, कोइ ज्ञानी नहिं होता ॥

विषयाभिलाषी प्राणी, भव-भव दुःख पाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य जगाते हैं ॥५॥
लहराता है जिनके, समता सागर सत्वर ।
नहिं शत्रु-मित्र दीखे, समरस झरता निर्झर ॥
चलते फिरते तीरथ, सिद्धों से दिखाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य जगाते हैं ॥६॥
सम्मेदशिखर पावन, चम्पापुर, पावापुर ।
कैलाशशिखर वंदु, गिरनार तीर्थ मनहर ॥
चौबीसो जिनवर को हम शीश झुकाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य जगाते है ॥७॥
यह ढ़ाई दीप सारा, मानो सिद्धालय हैं ।
पर्वत गिरि गुफा समुंद्र मुनि वृंद चैत्यालय हैं ॥
निर्वाण लिया जिनने, सबको सिर नाते हैं ।
यह जीवन धन्य बने, वैराग्य जगाते है ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री समस्त मुनिवरेभ्यो अनर्ध्य पदप्राप्तये जयमाला महाअर्ध्य निर्व. स्वाहा ।

तीर्थ क्षेत्र की वंदना, मन आनंदित होय ।
विषय वासना भी गले, जीवन निर्मल होय ॥

पुष्पांजलि क्षिपेत् ॥

२४ तीर्थंकरों का अर्घ्य

जिन मंदिर समवशरण है, अर वेदी गंध कुटी हैं ।
जहां गूंजे दिव्यध्वनि प्रभु, हो जाये मोह कट्टी हैं ॥
जिन मंदिर शिक्षालय है, भवतरिणी शिक्षा देते ।
जिन मंदिर दीक्षालय है, सारे तनाव हर लेते ॥
जिन मंदिर भव्य बनाते साधर्मी लाभ उठातें ।
स्वाध्याय गहन मिल करते, कोई कुंदकुंद बन जातें ॥
तन मन धन सबसे न्यारा, यह चेतन राम हमारा ।
जहां देह नहीं हो अपनी, वहां होगा कोन हमारा ॥

सर्वज्ञ वीतरागी प्रभु, सांचे आदर्श हमारें ।
कर्ता-धर्ता न कोई है, सुन अहंकार मर जावें ॥
भगवान आत्मा जिन ध्वनि, सुन आतम महिमा आती ।
सब जीव सिद्ध प्रभु सम हैं, परिणति में समता आती ॥
जीव दया धर्म दशलक्षण, भावों में लहराता हैं ।
साधर्मी बंधु जनों लख, वात्सल्य उमड़ पडता हैं ॥
हो प्रेमभाव जीवों में, गुणिजनो में हर्ष प्रभु हो ।
करुणा का स्त्रोत बहे प्रभु बस मुक्ति प्राप्ति की धुन हों ॥
कितनी सुंदर जिन प्रतिमा साक्षात प्रभु आये हैं ।
महाभाग्य जैनियों के है, ऐसे प्रभु हम पाये हैं ॥
वह मूक संदेशा देती, अंतर्मुख प्रभु निहारो ।
भगवान आत्मा हो तुम, अनुभव कर मुक्ति सिधारो ॥

पौन्नुर मलै का अर्घ्य

(रोला)

कुंदकुंद आचार्य श्री को शत शत वंदन ।
गगन विहारी मुनि पुंगव शतगत अभिनंदन ॥
परमागम परमामृत रचना, गजब कर गये ।
आत्म निधि की विधि बताके धन्य कर गये ॥
विरहखला सर्वज्ञ प्रभु हम कहाँ आ गये ।
वीतराग सर्वज्ञ दर्श बिन चैन नहीं रे ॥
सीमंधर सर्वज्ञ प्रभु आशिष मिल गया ।
यही सदेह विदेह गये रे पुण्यफल गया ॥
इसी भुमि पर ग्रंथ रचे श्री समयसार जी ।
प्रवचनसार जी रचा और पंचास्तिकाय जी ॥
भक्ति भाव से सब सन्तों को नमन हमारा ।
अर्घ्य चढाऊँ मुक्ति प्राप्त हो आशिष प्यारा ॥

सीमंधर जिनदेव जिनालय में पधराये ।
कब होगें साक्षात दर्श, यहीं दर्शन पाये ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय कुंदकुंद-आचार्यनमः अर्घ्यं निर्वपामी स्वाहा ।

कृत्रिम अकृत्रिय जिन वंदना अर्घ्य

तीन लोक में जहां जहां, जिन मंदिरजी सुंदर अभिराम ।
कृत्रिम और अकृत्रिम, सबही मन वच तन से करुँ प्रणाम ॥
उनमें जो जिनबिम्व विराजे अन्तर्मुखी सौम्य भगवान ।
आत्म तत्त्व दरसावन हारे सबको बारम्बार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं श्री समस्त कृत्रिम-अकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामी स्वाहा

जैन बद्री-मूड बद्री का अर्घ्य

(चौपाई)

धवल जिनालय, धवल जिनेन्द्र ।
धवल जयधवल- ग्रंथ मुनिन्द्र ॥
धवल हुये परिणाम हमारे, धवल मुक्ति मारग भायारे ।
ताड़ पत्र पर ग्रंथ रचायें, काटों से अक्षर लिखवाये ॥
कितना समय दिया गुरु ज्ञानी, वंदू बार बार जिनवाणी ।
स्वाध्याय प्रति दिवस करुँगा, अपना जीवन धन्य करुंगा ॥

ॐ ह्रीं श्री समस्त जिनबिम्बेभ्यो द्वादशांग-जिनवाणी अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्मस्थल तीर्थ का अर्घ्य

धर्मस्थल भी अजब-गजब का यहाँ नजारा ।
बाहुबली भगवान विराजें अतिशय प्यारा ॥
यहाँ हजारों धर्मी जन दर्शन को आते ।
बिना खर्च के यहाँ ठहरते भोजन पाते ॥
शिक्षा भी निःशुल्क यहाँ का राजा देता ।
औषध भी निःशुल्क व्यवस्था राजा करता ॥
करो गहन स्वाध्याय समाधि लाभ उठाओ ।
रत्नत्रय की प्राप्ति करों, मुनि हो शिव पाओ ॥

जिन प्रतिमाएँ जिन मंदिर सबको है वंदन ।
अर्घ्य समर्पित करुं नाथ मेटो भव बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मस्थलस्थित सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुंदाद्री तीर्थ क्षेत्र का अर्घ्य

(आचार्य कुंदकुंद देवकी समाधि स्थली)

कुंदाद्री पर्वत पर कुंद कुंद मुनि आयें ।
यहीं समाधि धारण की, इतिहास बतायें ॥
नियमसारजी ग्रंथ रचा निज-हित पाने को ।
पाठ किया स्वान्तः सुख भव तिर जाने को ॥
ध्रुव की धुन में जमे रमे, प्रभु धन्य हो गए ।
समयसार दे भरत क्षेत्र निहाल कर गये ॥
भक्ति भाव से अर्घ्य चढाऊँ करुँ वंदना ।
शुद्धातम भगवान आत्म की करुँ साधना ॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य कुंदकुंद देव समाधी स्थलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

'पूजा का स्वरूप'
गुणगान एवं नमनादि करना द्रव्य पूजा है ।
गुणों का चिन्तनादि भाव पूजा है ।
उनके समान निजस्वरूप की आराधना
परमार्थ पूजा है ।

सोनगढ स्थित श्री बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(तर्जः- कुंडलपुर की धुल सिर लगाने आया हूँ)

सोनगढ की साधना भुमि को वंदन है ।
बाहुबली भगवान का शत्-शत् अभिनंदन हैं ॥
सीमंधर भगवान की मुद्रा ही प्यारी है ।
वेदेही भगवान की आत्मा ही न्यारी है ॥
मानस्तंभ देखते ही मान गलता है ।
परमागम मंदिर से प्रभुवर ज्ञान मिलता है ॥
पंचमेरु दर्शन से, निज दर्शन होते हैं ।
नंदीश्वर के अर्चन से आनंद झरते हैं ॥
समवशरण मंदिर में मन शांत होता है ।
कुंदकुंद के दर्शन कर मन नाच उठता है ॥
गूंजती गुरुदेव की जहाँ वाणी प्यारी है ।
आत्म के आराधकों की भुमि न्यारी हैं ॥
बाहुबली भगवान सोनगढ़ में आये हैं ।
साधकों के भाग्य दर्शन देने आये हैं ॥
निर्गन्थों मुनियों की मुद्रा केसी होती हैं ।
देखलो दिगम्बर मुद्रा ऐसी होती है ॥
ऐसी पावन धूल शिर लगाने आया हूँ ।
अपने आतम देव को जगाने आया हूँ ॥
श्रवण बेलगोला हो या सोनगढ तीरथ ।
बाहुबली तो एक ही हैं शांत श्री मूरत ॥
मानो गोम्मटगिरी के बाहुबली ही आये हैं ।
हम तो महा भाग्यशाली दर्शन पाये हैं ॥
सोनगढ की साधना भूमिको वंदन है ।
बाहुबली भगवान का शत्-शत् अभिनंदन हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री सोनगढ तीर्थक्षेत्र स्थित बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महा जयमाला

तीर्थ गोम्मटगिरि तो चालो...२

तीरथ करलो, भाव जगालो कल्मष घो डालो ॥ टेक॥

यहीं भूमि गौरवशाली, गुरु भद्रबाहु आयें ।
चंद्रगुप्त सम्राट मुनिश्वर, पद पा संघ लायें ॥
चंद्रगिरी पर्वत पर दोनों ने समाधि पायी ।
बाहुबली भगवान दर्शकर मुनि महिमा आयी ॥

शांति से मुनिमुद्रा ध्यालो...२

धन्य मुनिश्वर जिन शासन में होते आए हैं ।
नग्न दिगम्बर मुद्रा जिनकी आगम गाये है ॥
गोम्मटेश बाहुबली प्रतिमा सहस्त्र वर्ष प्राचीन ।
निर्विकारी निःस्पृहि परिग्रह बिन होते है मुनि जिन ॥

दिगम्बर मुनिमुद्रा ध्यालो ...२

कंचन काँच बराबर जिनके महल मशान समान ।
शत्रु मित्र की बात कहाँ सब दिखतें है भगवान ॥
जिन्हे कंकडो जैसा ही है मणि मुक्ता का ढ़ेर ।
जिनका समता धन खरीदने को असमर्थ कुबेर ॥

बाहुबली प्रभु से सिख पालो...२

दक्षिण दिशि का महा तीर्थ यह गोमटेश भगवान ।
उत्तर में सब सिद्धक्षेत्र है, सम्मेदादि महान ॥
वात्सल्य साधर्मी जागो भाव समाये हैं ।

साधना सम्यक् मन ध्यालो...२

हे ! चेतन यदि चार गति दुःख से बचना चाहों ।
वीतराग मुनि धर्म ग्रहण कर शुद्धातम ध्यालों ॥
निज चैतन्य गुफा में बसते ऐसे महा मुनिश ।
प्रचुर स्वसंवेदन आनंद मय तारणहार ऋषिश ॥

बाहुबली सा आतम ध्यालो...२

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महाअर्घ्य

पूजों श्री अर्हन्त परम गुरु, दिव्य देशना के दातार ।
पूजों श्री भगवंत सिद्ध सब, साध्य सिद्धि के जो आधार ॥
आचार्यों की करुँ अर्चना, धर्म स्वरुपाचरण धरुँ ।
उपाध्याय पाठक पद पूजूँ, स्वाध्याय बिन नही रहूँ ॥
ज्ञान ध्यान वैराग्य मूर्ति के, धारी सभी साधु भगवान ।
जिनवाणी कल्याणी माता, पढ़ूं अनुभवूं आनंद खान ॥
तीन लोक के सभी अकृत्रिम, कृत्रिम चैत्यालय वंदूँ ।
उनमें जो जिन बिंब विराजे, सबको शत्-शत् अभिनंदूँ ॥
विद्यमान तीर्थंकर बीसों, वंदूँ वैदेही भगवान ।
चौंबीसी तीर्थंकर वंदूँ महामहिम जो धर्म निधान ॥
दशलक्षण रत्नत्रय पूजों, सोलहकारण पर्व महान ।
जल-थल-नभ में जहाँ जहाँ हो, वंदूँ वीतराग भगवान ॥
शाश्वत सिद्ध क्षेत्र सम्मेदाचल, पूजों अतिशय जिन वर क्षेत्र ।
पावापुर, चंपापुर, श्री कैलाश और गिरनार विशेष ॥

(दोहा)

जल-फलादि वसु द्रव्य ले, अनुपम अर्घ्य बनाय ।
सर्व पूज्य पद पूजहों, भक्ति भाव उर लाय ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तसिद्धाचार्यो पाध्यायसर्वसाधुभ्यो, द्वादशांगजिनवाणीभ्यो. उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय, दर्शनविशुद्धियादिषोड़शकारणेभ्यो, सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो, त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो, पंचमेरौ, अशीतिचैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वरद्वीपस्थद्वीपंचाशज्जिनालयेभ्यो, श्री सम्मेदशिखर, गिरनारगिरि, कैलाशगिरि, चम्पापुर, पावापुर आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो, समस्त अतिशयक्षेत्रेभ्यो, विदेहक्षेत्रेस्थित सीमंधरादिविधमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो, ऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो, भगवज्जिन सहस्त्राष्टनामेभ्येश्च अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सबसे पहले तत्वज्ञान कर, स्व-पर भेद-विज्ञान करो ।
निजानन्द का अनुभव करके, भोगों में सुख बुद्धि तजो ॥

शांतिपाठ

पूजन विधान हुआ आज जिनराज, वीतरागी देव पाये जागा मेरा भाग ॥
मन में प्रसन्नता है खुशियाँ अपार, वीतरागी धर्म से ही पाऊँगा उद्धार ॥
नाचे मेरा रोम-रोम नाचे मेरा मोह, श्रद्धा ज्ञान नाचे प्रभु, होवे न बिछोह ॥
माता जिनवाणी दे दो मंगल आशीर्वाद, अर्हन्त देव जैसा पाऊँ आह्लाद ॥
मुनि दशा प्यारी लागे, प्यारा जिनधर्म, चार गति में न रुलूँ पाऊँ शिवशर्म ॥
सभी जीवों से हैं मेरी क्षमा साम्यभाव, सभी जीव सुखी होवें प्रभु यही चाव ॥
महाशांति पाऊँ प्रभो आया तेरे द्वारा, विश्व शांति पाये प्रभु हें शातिदातार ॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

विसर्जन

जान में अनजान में जो हुई भूलें हे प्रभों ।
क्षमा करिये क्षमा के भंडार तुम ही हो अहों ॥
विशुद्धि थोड़ी जगी पूजन भजन में आ गया ।
मन बड़ा चंचल मेरा कहाँ भागता फिर रहा ॥
पूजन विधि जानूँ नहीं आह्वान भी जानूँ नहीं ।
विसर्जन मैं नही जानूँ क्षमा याचूँ हे प्रभों ॥
भक्ति भी बनती नही, और मौन भी नही रह सकूँ ।
वाचाल हूँ करना क्षमा, पथ वीतरागी चल सकूँ ॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

भक्ति

जिनवर दरबार तुम्हारा, स्वर्गो से ज्यादा प्यारा ।
छवि वीतराग मुद्रा से, परिणामो में उजियारा ॥
ऐसे तो हमारे जिनवर है, चरणों में समर्पित जीवन है ।।टेक।।
समवशरण के अंदर, स्वर्ण कमल पर आसन ।
चार चतुष्टय धारी, बैंठे है पद्मासन ।।
परिणामों में निर्मलता, तुमको लखने से आए ।
अरे वीतरागता बढ़ती, जो भी जिनदर्शन पाए...।। ऐसे तो...।।
त्रैलोक्य झलकता भगवन केवल्यज्ञान में ऐसे ।
तीनों ही कालो में कब क्या होगा और कैसे ॥
जग के सारे ज्ञेयों को प्रभु, एक समय में जानों ।
निज में ही तन्मय रहते उनको ना अपना मानो... ॥ ऐसे तो...।।

(अर्घ्यावली)

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

शुचि निरमल नीरं गंध सुअक्षत पुष्प चरु ले मन हरषाप ।
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय ॥
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि-बलि जाऊँ मन-वच काय ।
हे करुणानिधि ! भव-दुःख मेटो, यातैं मैं पूजूँ प्रभु पाय ॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान का अर्घ्य

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों ।
पूजों अष्टम् जिन मीत, अष्टम् अवनि गमों ॥
श्री चंदनाथ दुति चंद, चरनन चंद लगै ।
मन-वच-तन जजत अमंद, आतमजोति जगै ॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री शान्तिनाथ भगवान का अर्घ्य

वसु द्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनन्दकारी दृग प्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातैं थारी शरनारी ॥
श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं, हे गुनधेशं दयामृतेशं मक्रेशं ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

जल-फल आदि साज शुचि लीनें, आठों दरब मिलाय ।
अष्टमथिति के राजकरन कों, जजों अंग वसु नाय ॥
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

नीर गन्ध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिए ।
दीप-धूप-श्रीफलादि अर्घ्य तैं जजीजिये ॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करुँ सदा ।
दीजिए निवास मोक्ष, भूलिए नहीं कदा ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री महावीर भगवान का अर्घ्य

इस अर्घ्य का क्या मूल्य है अन्-अर्घ्य पद के सामने ।
उस परमपद को पा लिया, हे पतित-पावन ! आपने ॥
संतप्त मानस शान्त हों, जिनकें गुणों के गान में ।
वे वर्धमान महान जिन, विचरें हमारें ध्यान में ॥

ॐ ह्रीं श्री महावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्मचक्र विकराल जगतमें बहु विधि जीव भ्रमाया हैं ।
भव भ्रम हरन करन थिरता पद यातैं अर्घ्य चढ़ाया हैं ।
जगजाहर जिनराज सुपारस प्रभुकी पूज रचाते हैं ।
सो नर सुरपति पद लही जगमें मनवांछित पद पाते हैं ।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सीमंधर भगवान का अर्घ्य

निर्मल जल सा प्रभु निज स्वरुप, पहिचान उसी में लीन हुए ।
भव-ताप उतरने लगा तभी, चन्दन-सी उठी हिलोर हियें ॥
अभिराम-भवन प्रभु अक्षत का, सब शक्ति-प्रसून लगें खिलने ।
क्षुत्-तृषा अठारह दोष क्षीण, कैवल्य प्रदीप लगा जलने ॥
मिट चली चपलता योगों की, कर्मो के इंधन ध्वस्त हुए ।
फल हुआ प्रभो ! ऐसा मधुरिम्, तुम धवल निरंजन स्वस्थ हुए ॥

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री चौबीस तीर्थंकर का अर्घ्य

जल फल आठों शुचिसार, ताकों अर्घ्य करों ।
तुमकों अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों ॥
चौबीसों श्री जिनचन्द, आनन्द कन्द सहीं ।
पद जजत हरत भव-फन्द, पावत मोक्ष महीं ॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यों अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री चैतन्यधाम का अर्घ्य

जल फल वसु द्रव्य सजाया प्रभु शरण तिहारी आया ।
अन्तर्मुख शान्त छवीं लख, मेरा रोम-रोम हर्षाया ॥
चैतन्यधाम शुभतीरथ, लगता कितना मनहारा ।
ले अर्घ्य जजूं चरणाम्बुज, मेरा चेतन धाम दिखाया ॥

ॐ ह्रीं श्री चैतन्यधाम स्थित सर्व जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ्य

जल पिया और चन्दन चरचा, मालायें सुरभित सुमनों की ।
पहनी, तन्दुल सेये व्यंजन, दीपावलियों की रत्नों की ॥
सुरभि धूपायन की फैली, शुभ कर्मो का सब फल पाया ।
आकुलता फिर भी बनी रही, क्या कारण जान नहीं पाया ॥
जब दृष्टि पड़ी प्रभुजी तुम पर, मुझको स्वभाव का भान हुआ ।
सुख नहीं विषय-भोगों में है, तुमको लख यह सद्ज्ञान हुआ ॥
जल से फल तक का वैभव यह, मैं आज त्यागने हूँ आया ।
होकर निराश सब जग भर से, अब सिद्ध शरण में मैं आया ॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठीने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री नन्दीश्वर द्वीप का अर्घ्य

यह अरघ कियो निज हेत, तुमको अरपतु हों ।
''द्यानत'' कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपतु हों ॥
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूंज करों ।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों ॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिणे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री दशलक्षण का अर्घ्य

आठों दरव सँवार, ''द्यानत''अधिक उछाहसों ।
भव-आताप निवार, दशलक्षण पूजों सदा ॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्मांगाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री देव-शास्त्र-गुरु का अर्घ्य

क्षण भर निज-रस को पी चेतन, मिथ्या-मल को धो देता है ।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज आनन्द अमृत पीता है ।
अनुपम सुख तब विलसित होता, केवल-रवि जगमग करता है ।
दर्शन बल पूर्ण प्रगट होता, यह ही अरहन्त अवस्था है ॥
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु ! निज गुण का अर्घ्य बनाऊँगा ।
और निश्चित तेरे सदृश प्रभु ! अरहन्त अवस्था पाऊँगा ॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री पंचमेरु का अर्घ्य

आठ दरबमय अरघ बनाय, "द्यानत" पूजौं श्रीजिनराय ।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमाजी को करहूँ प्रणाम ।
महासुख होय, देखें नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु सम्बन्धि अशीतिजिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री सोलहकारण का अर्घ्य

जल फल आठों दरब चढ़ाय, "द्यानत" वरत करों मनलाय ।
परमगुरु हो, जय-जय नाथ परमगुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय ।
परमगुरु हो, जय-जय नाथ परमगुरु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धियादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत, फूल चरु चत, दीप धूप फल अति लावैं ।
पूजा को ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावैं ॥
तीर्थंकर की धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई ।
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवनमानी पूज्य भई ॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री मुनिराज का अर्घ्य

चक्री चरणन शिर नाय, महिमा प्रगट करें ।
लेकर बहुमूल्य सु अर्घ्य, हम भी भक्ति करें ॥
गुण मूल अठाइस युक्त, मुनिवर को ध्यावें ॥
अपना निर्ग्रन्थ स्वरुप, हम भी प्रगटावें ॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालवर्तीसर्वआचार्यउपाध्यायसाधुमुनिवरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री तीर्थक्षेत्र का अर्घ्य

तीर्थ तत्त्वमय है सदा, ज्ञायक शाश्वत तीर्थ ।
अभेद ज्ञायक भावना, है व्यवहार सुतीर्थ ॥
ज्ञायक भावना भावते, संत जहाँ तिष्ठाय ।
ते ही क्षेत्र सुजगतमें, तीर्थक्षेत्र कहलाय ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदादि तीर्थक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य

ले भाव अर्घ्य सुखकार, निज में पागत हों ।
प्रभु सर्व विभाव असार, दुःखमय त्यागत हों ॥
सम्मेद शिखर गिरनार, चम्पा पावापुर ।
कैलाश आदि सुखकार, पूजत हर्षे उर ॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर का अर्घ्य

हे अनादि भव रोग न इसकी औषधि अब तक कर पाया ।
निजअनर्घ्य पद पाने का अब तो अपूर्व अवसर आया ॥
तीर्थराज सम्मेदशिखर की पूजन कर उर हर्षाया ।
बीस तीर्थंकर की यह निर्वाण भूमि लख सुख पाया ॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों ।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों ॥
अरहंत भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी ।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी ॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा ।
जजि भावना षोड़श रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा ।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ ॥
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा ।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ शर्मदा ॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के ।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिव गेह के ॥

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय ।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहन्तसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो, द्वादशांगजिनवाणीभ्यो. उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय, दर्शनविशुद्धियादिषोड़शकारणेभ्यो, सम्यग्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो, त्रिलोकसम्बन्धिकृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यालयेभ्यो, पंचमेरौ, अशीतिचैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वरद्वीपस्थद्वीपंचाशज्जिनालयेभ्यो, श्री सम्मेदशिखर, गिरनारगिरि, कैलाशगिरि, चम्पापुर, पावापुर आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो, समस्त अतिशयक्षेत्रेभ्यो, विदेहक्षेत्रेस्थित सीमंधरादिविधमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो, ऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो, भगवज्जिन सहस्त्राष्टनामेभ्येश्च अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इन्द्रादि शीष नावें, आनन्द बढ़ावें,
अति भक्ति भाव लावें, पूजा रचावें ।
मैं अर्चना करुँ क्या ? है शक्ति थोरी,
पूजन निमित्त परिणति, निज माँहिं जोरी ॥

शान्ति-पाठ

हूँ शान्तिमय ध्रुव ज्ञानमय, ऐसी प्रतीति जब जगें ।
अनुभूति हो आनन्दमय, सारी विकलता तब भगें ॥
निजभाव ही है एक आश्रय, शान्तिदाता सुखमयी ।
भूल स्व दर-दर भटकते, शान्ति कब किसने लही ॥
निज घर बिना विश्राम नाहीं, आज यह निश्चय हुआ ।
मोह की चट्टान टूटी, शान्ति निर्झर बह रहा ॥
यह शान्ति धारा हो अखण्ड, चिरकाल तक बहती रहें ।
होवें निमग्न सुभव्यजन, सुख शान्ति सब पाते रहें ॥
पूजोपरान्त प्रभों यही, इक भावना है हो रहीं ।
लीन निज में ही रहूँ, प्रभु और कुछ वाँछा नहीं ॥

(दोहा)

सहज परम आनन्दमय, निज ज्ञायक अविकार ।
स्व में लीन परिणति विषैं, बहती समरस धार ॥

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः
(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

क्षमापना

(खडे होकर, हाथ जोडकर पढें ।)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय ।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय ॥
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान ।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहूँ भगवान ॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव ।
क्षमा करहूँ राखहूँ मुझे, देहूँ चरण की सेव ॥
तुम चरणन ढिंग आयके, मैं पूजूँ अतिचाव ।
आवागमन रहित करों, मेटो सकल विभाव ॥
आवागमन रहित करों, रमूँ सदा निज भाव ॥

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम् ।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम् ॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च ।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम् ॥
जिवादितत्व-प्रतिपादकाय, सम्यकत्व-मुख्याष्ट-गुणाश्रयाय ।
प्रशांतरुपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमों जिनाय ॥
तुभ्यं नमस्त्रिनभुवनार्तिहराय नाथ ।
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामय-भूषणाय ॥
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय ।
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥

उपकार स्मरण

क्या करें गुणगान प्रभुवर, आप के उपकार का ।
आप ने निज निधि हमें दी, नमन करतें आपका ॥
आप में प्रभु आप से ही, आप सी श्रद्धा जगें ।
दूर होवें भाव विकृत, परिणति निजमें रमें ॥

श्री बाहुबली स्तुति

प्रभु बाहुबली ऐसा बल हो ।टेक ॥
जीतूँ मैं मोह महाभट को, श्रद्धान सहज ही सम्पक् हो ।
निज-पर का भेद-विज्ञान रहे, अन्तर शुद्धातम अनुभव हो ॥
जड़रुप सदा आकुलतामय, भोगों का नहिं आकर्षण हो ।
अध्रुव अशरण दुःखरुप परिग्रह, के प्रति नहिं समर्पण हो ॥
हो ज्ञान सहज वैराग्यमयी, वैराग्य ज्ञानमय जिनवर हो ।
संकल्प सहित निर्ग्रन्थ मार्ग में, विचरण स्वामी सत्वर हो ॥
उपसर्ग परिषह चाहे हों, परिणाम सदा समतामय हो ।
दशलक्षण प्रगट सदा वर्ते, आराधन नित मंगलमय हो ॥
हो ऐसा निश्चल आत्मध्यान, कर्मो का कर्मों में लय हो ।
चैतन्य विभूति ध्रुव अनुपम, प्रगटे भक्ति का प्रभु फल हो ॥
प्रभु का स्वरुप मन को भाया, ऐसी ही परिणति मेरी हो ।
पुरुषार्थ जगे हो सफल भावना, विभुवर सम्यक् वंदन हो ॥

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

[कवि भैया भगवतीदासजी कृत]

(दोहा)

वीतराग वन्दौं सदा, भाव सहित सिर नाय ।
कहूँ काण्ड निर्वाण की, भाषा सुगम बनाय ॥

(चौपाई)

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चम्पापुरि नामि ।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वन्दौं भाव-भगति उर धार ॥
चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामि महावीर ।
शिखर सम्मेद जिनेसुर बीस, भाव-सहित वन्दौं निश-दीस ॥
वरदत्तराय रु इन्द्र मुनिन्द, सायरदत्त आदि गुणवृन्द ।
नगर तारवर मुनि उठकोडि, वन्दौं भावसहित कर जोड़ि ॥
श्री गिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात ।
शम्भु प्रद्युम्न कुमार द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय ॥
रामचंद्र के सुत द्वय वीर, लाड़नरिन्द आदि गुणधीर ।
पाँच कोड़ि मुनि मुक्ति मँझार, पावागिरि वन्दौं निरधार ॥
पाण्डव तीन द्रविड-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान ।
श्री शत्रुंजयगिरि के सीस, भावसहित वन्दौं निश-दीस ॥
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहूँ भये ।
श्री गजपन्थ शिखर सुविशाल, तिनकें चरण नमूँ तिहूँकाल ॥
राम हणू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील ।
कोड़ि निन्याणवे मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वन्दौं धरि ध्यान ॥
नंग-अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़िं अरु अर्ध प्रमान ।
मुक्ति गये सोनागिरि-शीश, ते वन्दौं त्रिभुवनपति ईस ॥
रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार ।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वन्दौं धरि परम हुलास ॥

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहँ छूट ।
द्वय चक्री दश काम कुमार, उठकोडि वन्दौं भव पार ॥
बड़वानी बड़नगर सुचंग दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग ।
इन्द्रजीत अरु कुम्भ जु कर्ण, ते वन्दौं भव-सागर-तर्ण ॥
सुवरणभद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर शिखर मँझार ।
चेलना नदी तीर के पास, मुक्ति गये वन्दौं नित तास ॥
फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पश्चिम दिशा द्रोणगिरि रुप ।
गुरुदत्तादि मुनीश्वर जहाँ, मुक्ति गये वन्दौं नित तहाँ ॥
बालि महाबालि मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय ।
श्री अष्टापद मक्ति मँझार, ते वन्दौं नित सुरत संभार ॥
अचलापुर की दिश ईशान तहाँ मेंढ़गिरि नाम प्रधान ।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय ॥
वंसस्थल वनकें ढिंग होय, पश्चिम दिशा कुन्थुगिरि सोय ।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनकें चरणनि करुँ प्रणाम ॥
जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँचसौ लहें ।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वन्दन करुँ जोरि जुग पान ॥
समवशरण श्री पार्श्व-जिनन्द, रेसिन्दीगिरि नयनानन्द ।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वन्दौं नित धरम-जिहाज ॥
सेठ सुदर्शन पटना जान, मथुरा से जम्बू निर्वाण ।
चरम केवली पंचम काल, ते वन्दौं नित दीन दयाल ॥
तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजैं तहाँ ।
मन वच काय सहित सिरनाय, वन्दन करहिं भविक गुण गाय ॥
संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।
''भैया'' वन्दन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥

સમયસાર (પૂર્વરંગ અધિકાર)

હવે, (તીર્થકર-કેવળીની) નિશ્ચયસ્તુતિ કહે છે. તેમાં પહેલાં જ્ઞેય-જ્ઞાયકના સંકરદોષનો પરિહાર કરી (નિશ્ચય) સ્તુતિ કહે છે :-

जो इंदिये जिणित्ता णाणसहावाधियं मुणदि आदं ।
तं खलु जिदिंदियं ते भणंति जे णिच्छिदा साहु ॥३१॥
य इन्द्रियाणि जित्वा ज्ञानस्वभावाधिकं जानात्यात्मानम् ।
तं खलु जितेन्द्रियं ते भणन्ति ये निश्चिताः साधव : ॥३१॥

જીતી ઇંદ્રિયો જ્ઞાનસ્વભાવે અધિક જાણે આત્મને,
નિશ્ચય વિષે સ્થિત સાધુઓ ભાખે જિતેન્દ્રિય તેહને. ૩૧.

ગાથાર્થ – [यः] જે [इन्द्रियाणि] ઇંદ્રિયોને [जित्वा] જીતીને [ज्ञानस्वभावाधिकं] જ્ઞાનસ્વભાવ વડે અન્યદ્રવ્યથી અધિક [आत्मानम्] આત્માને [जानाति] જાણે છે [तं] તેને, [ये निश्चिताः साधवः] જે નિશ્ચયનયમાં સ્થિતિ સાધુઓ છે [ते] તેઓ, [खलु] ખરેખર [जितेन्द्रियं] જિતેંદ્રિય [भणन्ति] કહે છે.

ટીકાઃ- (જે મુનિ દ્રવ્યેન્દ્રિયો, ભાવેન્દ્રિયો તથા ઇંદ્રિયોના વિષયભૂત પદાર્થો - એ ત્રણેયને પોતાનાથી જુદાં કરીને સર્વ અન્યદ્રવ્યોથી ભિન્ન પોતાના આત્માને અનુભવે છે તે મુનિ નિશ્ચયથી જિતેન્દ્રિય છે.) અનાદિ અમર્યાદરૂપ બંધપર્યાયના વશે જેમાં સમસ્ત સ્વપરનો વિભાગ અસ્ત થઈ ગયો છે (અર્થાત્ જેઓ આત્માની સાથે એવી એક થઈ રહી છે કે ભેદ દેખાતો નથી) એવી શરીરપરિણામને પ્રાપ્ત જે દ્રવ્યેન્દ્રિયો તેમને તો નિર્મળ ભેદ-અભ્યાસની પ્રવીણતાથી પ્રાપ્ત જે અંતરંગમાં પ્રગટ અતિસૂક્ષ્મ ચૈતન્યસ્વભાવ તેના અવલંબનના બળ વડે સર્વથા પોતાથી જુદી કરી; એ. દ્રવ્યેન્દ્રિયોનું જીતવું થયું. જુદા જુદા પોતપોતાના વિષયોમાં વ્યાપારપણાથી જેઓ વિષયોને ખંડખંડ ગ્રહણ કરે છે (અર્થાત્ જ્ઞાનને ખંડખંડરૂપ જણાવે છે) એવી ભાવેન્દ્રિયોને, પ્રતીતિમાં આવતા અખંડ એક ચૈતન્યશક્તિપણા વડે સર્વથા પોતાથી જુદી જાણી; એ, ભાવેન્દ્રિયોનું જીતવું થયું. ગ્રાહ્યગ્રાહકલક્ષણવાળા સંબધની નિકટતાને લીધે જેઓ પોતાના સંવેદન (જ્ઞાન) સાથે પરસ્પર એક જેવા થઈ ગયેલા દેખાય છે એવા, ભાવેન્દ્રિયો વડે ગ્રહવામાં આવતા જે ઇંદ્રિયોના વિષયભૂત સ્પર્શાદિ પદાર્થો તેમને, પોતાની ચૈતન્યશક્તિનું સ્વમેવ

અનુભવમાં આવતું જે અસંગપણું તે વડે સર્વથા પોતાથી જુદા કર્યા; એ, ઇંદ્રિયોના વિષયભૂત પદાર્થોનું જીતવું થયું. આમ જે (મુનિ) દ્રવ્યેન્દ્રિયો, ભાવેન્દ્રિયો તથા ઇંદ્રિયોના વિષયભૂત પદાર્થો–એ ત્રણેને જીતીને, જ્ઞેયજ્ઞાયક–સંકર નામનો દોષ આવતો હતો તે સઘળો દૂર થવાથી એકત્વમાં ટંકોત્કીર્ણ (પથ્થરમાં ટાંકણાથી કોરેલી મૂર્તિની જેમ એકાકાર જેવો ને તેવો સ્થિત) અને જ્ઞાનસ્વભાવ વડે સર્વ અન્યદ્રવ્યોથી પરમાર્થે જુદા એવા પોતાના આત્માને અનુભવે છે તે નિશ્ચયથી "જિતેન્દ્રિય જિન"છે. (જ્ઞાનસ્વભાવ અન્ય અચેતન દ્રવ્યોમાં નથી તેથી તે વડે આત્મા સર્વથી અધિક, જુદો જ છે.) કેવો છે તે જ્ઞાનસ્વભાવ ? આ વિશ્વની (સમસ્ત પદાર્થોની) ઉપર તરતો (અર્થાત્ તેમને જાણતાં છતાં તે–રૂપ નહિ થતો), પ્રત્યક્ષ ઉદ્યોતપણાથી સદાય અંતરંગમાં પ્રકાશમાન, અવિનશ્વર, સ્વતઃસિદ્ધ અને પરમાર્થસત્–એવો ભગવાન જ્ઞાનસ્વભાવ છે.

આ રીતે એક નિશ્ચયસ્તુતિ તો આ થઈ.

(જ્ઞેય તો દ્રવ્યેન્દ્રિયો, ભાવેન્દ્રિયો તથા ઇંદ્રિયોના વિષયભૂત પદાર્થો અને જ્ઞાયક પોતે આત્મા–એ બન્નેનું અનુભવન, વિષયોની આસક્તતાથી, એક જેવું થતું હતું; ભેદજ્ઞાનથી ભિન્નપણું જાણ્યું ત્યારે તે જ્ઞેયજ્ઞાયક–સંકરદોષ દૂર થયો એમ અહીં જાણવું.)

હવે ભાવ્યભાવક–સંકરદોષ દૂર કરી (નિશ્ચય) સ્તુતિ કહે છે.

जो मोहं तु जिणित्ता णाणसहावाधियं मुणदि आदं ।
तं जिदमोहं साहुं परमट्ठवियाणया बेंति ॥३२॥
यो मोहं तु जित्वा ज्ञानस्वभावाधिकं जानात्यात्मानम्
तं जितमोहं साधुं परमार्थविज्ञायका ब्रुवन्ति ॥३२॥
જીતી મોહ જ્ઞાનસ્વભાવથી જે અધિક જાણે આત્મને.
પરમાર્થના વિજ્ઞાયકો તે સાધુ જિતમોહી કહે. ૩૨

ગાથાર્થ – [यः तु] જે મુનિ [मोहं] મોહને [जित्वा] જીતીને [आत्मानम्]પોતાના આત્માને [ज्ञानस्वभावाधिकं]જ્ઞાનસ્વભાવ પડે અન્યદ્રવ્યભાવોથી અધિક [जानाति]જાણેછે [तं साधुं] તે મુનિને [परमार्थविज्ञायकाः]પરમાર્થના જાણનારાઓ [जितमोहं]જિતમોહ [ब्रुवन्ति]કહે છે.

ટીકાઃ– મોહકર્મ ફળ દેવાના સામર્થ્ય વડે પ્રગટ ઉદયરૂપ થઈને ભાવકપણે પ્રગટ થાય છે તોપણ તેના અનુસારે જેની પ્રવૃત્તિ છે, એવો જે પોતાનો આત્મા–ભાવ્ય, તેને ભેદજ્ઞાનના બળ વડે દૂરથી જ પાછો વાળવાથી એ રીતે બળપૂર્વક મોહનો તિરસ્કાર કરીને, સમસ્ત ભાવ્યભાવક–સંકરદોષ દૂર થવાથી એકત્વમાં ટંકોત્કીર્ણ (નિશ્ચલ) અને જ્ઞાનસ્વભાવ વડે અન્યદ્રવ્યોના સ્વભાવોથી થતા સર્વ અન્યભાવોથી પરમાર્થે

જુદા એવા પોતાના આત્માને જે (મુનિ) અનુભવે છે તે નિશ્ચિયથી 'જિતમોહ જિન' (જેણે મોહને જીત્યો છે એવો જિન)છે. કેવો છે તે જ્ઞાનસ્વભાવ? આ સમસ્ત લોકના ઉપર તરતો, પ્રત્યક્ષ ઉદ્યોતપણાથી સદાય અંતરંગમાં પ્રકાશમાન, અવિનાશી, પોતાથી જ સિદ્ધ અને પરમાર્થસત્ એવો ભગવાન જ્ઞાનસ્વભાવ છે.

આ રીતે ભાવ્યભાવક ભાવના સંકરદોષને દૂર કરી બીજી નિશ્ચયસ્તુતિ છે.

આ ગાથાસુત્રમાં એક મોહનું જ નામ લીધું છે; તેમાં "મોહ" પદને બદલીને તેની જગ્યાએ રાગ, દ્વેષ, ક્રોધ, માન, માયા, લોભ, કર્મ, નોકર્મ, મન, વચન, કાય મૂકીને અગિયાર સૂત્રો વ્યાખ્યાનરૂપ કરવાં અને શ્રોત્ર, ચક્ષુ, ઘ્રાણ, રસન, સ્પર્શન–એ પાંચના સૂત્રો ઇંદ્રિયસૂત્ર દ્વારા જુદાં વ્યાખ્યાનરૂપ કરવા; એમ સોળ સૂત્રો જુદાં જુદાં વ્યાખ્યાનરૂપ કરવાં અને આ ઉપદેશથી બીજાં પણ વિચારવાં.

ભાવાર્થ :– ભાવક જે મોહ તેના અનુસાર પ્રવૃત્તિથી પોતાનો આત્મા ભાવ્યરૂપ થાય છે તેને ભેદજ્ઞાનના બળથી જુદો અનુભવે તે જિતમોહ જિન છે. અહીં એવો આશય છે કે શ્રેણી ચડતાં મોહનો ઉદય જેને અનુભવમાં ન રહે અને જે પોતાના બળથી ઉપશમાદિ કરી આત્માને અનુભવે છે તેને જિતમોહ કહ્યો છે. અહીં મોહને જીત્યો છે; તેનો નાશ થયો નથી.

હવે, ભાવ્યભાવક ભાવના અભાવથી નિશ્ચયસ્તુતિ કહે છે: –

जिदमोहस्स दु जइया खीणो मोहो हवेज्ज साहुस्स ।
तइया हु खीणमोहो भण्णदि सो णिच्छयविदूहिं ॥३३॥

जितमोहस्य तु यदा क्षीणो मोहो भवेत्साधोः ।
तदा खलु क्षीणमोहो भण्यते स निश्चयविर्भिदः ॥३३॥

જિતમોહ સાધુ તણો વળી ક્ષય મોહ જ્યારે થાય છે,
નિશ્ચયવિદો થકી તેહને ક્ષીણમોહ નામ કથાય છે. ૩૩

ગાથાર્થ – [जितमोहस्य तु साधोः] જેણે મોહને જીત્યો છે એવા સાધુને [यदा] જ્યારે [क्षीणःमोहः] મોહ ક્ષીણ થઈ સત્તામાંથી નાશ [भवेत्] થાય [तदा]ત્યારે [निश्चयविर्भिदः] નિશ્ચયના જાણનારા [खलु] નિશ્ચયથી [सः]તે સાધુને [क्षीणमोहः] "ક્ષીણમોહ" એવા નામથી [भण्यते]કહે છે.

ટીકા:– આ નિશ્ચયસ્તુતિમાં, પૂર્વોકત વિધાનથી આત્મામાંથી મોહનો તિરસ્કાર કરી, જેવો (પૂર્વે) કહ્યો તેવા જ્ઞાનસ્વભાવ વડે અન્યદ્રવ્યથી અધિક આત્માનો અનુભવ કરવાથી જે જિતમોહ થયો, તેને જ્યારે પોતાના સ્વભાવભાવની ભાવનાનું સારી રીતે અવલંબન કરવાથી મોહની સંતતિનો અત્યંત વિનાશ એવો થાય કે ફરી તેનો ઉદય ન થાય–એમ ભાવકરૂપ મોહ ક્ષીણ થાય, ત્યારે (ભાવક મોહનો ક્ષય થવાથી આત્માના વિભાવરૂપ ભાવ્યભાવનો પણ અભાવ થાય છે અને એ રીતે) ભાવ્યભાવક ભાવનો અભાવ થવાને લીધે એકપણું થવાથી ટંકોત્કીર્ણ (નિશ્ચલ) પરમાત્માને પ્રાપ્ત થયેલો તે "ક્ષીણમોહ જિન" કહેવાય છે. આ ત્રીજી નિશ્ચયસ્તુતિ છે.

અહીં પણ પૂર્વે કહ્યું હતું તેમ "મોહ" પદને બદલી રાગ, દ્વેષ, ક્રોધ, માન, માયા, લોભ, કર્મ, નોકર્મ, મન, વચન, કાય, શ્રોત્ર, ચક્ષુ, ઘ્રાણ, રસન, સ્પર્શન– એ પદો મૂકી સોળ સૂત્રો (ભણવાં અને) વ્યાખ્યાન કરવાં અને આ પ્રકારના ઉપદેશથી બીજાં પણ વિચારવાં.

ભાવાર્થ:– સાધુ પહેલાં પોતાના બળથી ઉપશમ ભાવ વડે મોહને જીતી, પછી જ્યારે પોતાના મહા સામર્થ્યથી મોહનો સત્તામાંથી નાશ કરી જ્ઞાનસ્વરૂપ પરમાત્માને પ્રાપ્ત થાય ત્યારે તે ક્ષીણમોહ જિન કહેવાય છે

હવે અહીં આ નિશ્ચય–વ્યવહારરૂપ સ્તુતિના અર્થનું કળશરૂપ કાવ્ય કહે છે:–

(शार्दूलविक्रीडित)

एकत्वं व्यवहारतो न तु पुनः कायात्मनोर्निश्चया -
न्नुः स्तोत्रं व्यवहारतोऽस्ति वपुषः स्तुत्या न तत्तत्त्वतः ।
स्तोत्रं निश्चयतश्चितो भवति चित्स्तुत्यैव सैवं भवे -
न्नातस्तीर्थकरस्तवोत्तरबलादेकत्वमात्माङ्गयोः ॥२७॥

શ્લોકાર્થ :– [कायात्मनोः व्यवहारतः एकत्वं]**શરીરને અને આત્માને વ્યવહારનયથી એકપણું છે** [तु पुनः]**પણ** [निश्चयात् न]**નિશ્ચયનયથી એકપણું નથી.** [वपुषः स्तुत्या नुः स्तोत्रं व्यवहारतः अस्ति]**માટે શરીરના સ્તવનથી આત્મા– પુરુષનું સ્તવન વ્યવહારનયથી થયું કહેવાય છે, અને** [तत्त्वतः तत् न]**નિશ્ચયનયથી નહિ;** [निश्चयतः]**નિશ્ચયથી તો** [चित्स्तुत्या एव] **ચૈતન્યના સ્તવનથી જ** [चितः स्तोत्रं भवति] **ચૈતન્યનું સ્તવન થાય છે.** [सा एवं भवेत्] **તે ચૈતન્યનું સ્તવન અહીં જિતેન્દ્રિય, જિતમોહ, ક્ષીણમોહ–એમ (ઉપર) કહ્યું તેમ છે** [अतः तीर्थकरस्तवोत्तरबलात्]**અજ્ઞાનીએ તીર્થંકરના સ્તવનનો જે પ્રશ્ન કર્યો હતો તેનો આમ નયવિભાગથી ઉત્તર દીધો; તે ઉત્તરના બળથી એમ સિદ્ધ થયું કે** [आत्म-अङ्गयोः एकत्वं न]**આત્માને અને શરીરને એકપણું નિશ્ચયથી નથી.૨૭**

હવે વળી, આ અર્થને જાણવાથી ભેદજ્ઞાનની સિદ્ધિ થાય છે એવા અર્થવાળું કાવ્ય કહે છે:–

(मालिनी)

इति परिचिततत्त्वैरात्मकायैकतायां
नयविभजनयुक्त्यात्यन्तमुच्छादितायाम् ।
अवतरति न बोधो बोधमेवाघ कस्य
स्वरसरभसकृष्टः प्रस्फुटन्नेक एव ॥२८॥

શ્લોકાર્થ :- [परिचित-तत्त्वैः]**જેમણે વસ્તુના યથાર્થ સ્વરૂપને પરિચયરૂપ કર્યું છે એવા મુનિઓએ** [आत्म-काय-एकतायां]**જ્યારે આત્મા અને શરીરના એકપણાને** [इति नय-विभजन-युक्त्या] **આમ નયના વિભાગની યુક્તિ વડે** [अत्यन्तम् उच्छादितायाम] **જડમૂળથી ઉખેડી નાખ્યું છે- અત્યંત નિષેધ્યું છે, ત્યારે** [कस्य] **ક્યા પુરુષને** [बोधः]**જ્ઞાન**[अध एव] **તત્કાળ** [बोधं] **યથાર્થપણાને** [न अवतरति]**ન પામે ? અવશ્ય પામે જ. કેવું થઈને ?** [स्व-रस-रभस-कृष्टः प्रस्फुटन् एकः एव]**પોતાના નિજરસના વેગથી ખેંચાઈ પ્રગટ થતું એકસ્વરૂપ થઈને.**

ભાવાર્થ :- નિશ્ચય-વ્યવહારનયના વિભાગ વડે આત્માનો અને પરનો અત્યંત ભેદ બતાવ્યો છે; તેને જાણીને, એવો કોણ પુરુષ છે કે જેને ભેદજ્ઞાન ન થાય ? થાય જ; કારણ કે જ્યારે જ્ઞાન પોતાના સ્વરસથી પોતે પોતાનું સ્વરુપ જાણે ત્યારે અવશ્ય તે જ્ઞાન પોતાના આત્માને પરથી ભિન્ન જ જણાવે છે. અહીં કોઈ દીર્ઘસંસારી જ હોય તો તેની કાંઈ વાત નથી .૨૮.

આ પ્રમાણે, અપ્રતિબુદ્ધે જે એમ કહ્યું હતું કે "અમારો તો એ નિશ્ચય છે કે દેહ છે તે જ આત્મા છે" તેનું નિરાકરણ કર્યું.

भक्ति

वीतरागी देव तुम्हारे जैसा जग में देव कहाँ ? ।
मार्ग बताया है जो जग को कह न सके कोई और यहाँ ।।टेक।।
है सब द्रव्य स्वतंत्र जगत में, कोई न किसी का काम करे ।
अपने-अपने स्वचतुष्टय में, सभी द्रव्य विश्राम करें ।।
अपनी-अपनी सहज गुफा में रहते पर से मौन यहाँ ।।१।।
भाव शुभाशुभ का भी कर्ता, बनता जो दीवाना है ।
ज्ञायक भाव शुभाशभ से भी, भिन्न न उसने जाना है ।।
अपने से अनजान तुझे भगवान बतावे देव यहाँ ।।२।।
पुण्य भाव भी पर आश्रित है, उसमें धर्म नहीं होता ।
ज्ञान भावमय निज परिणति से, बन्धन कर्म नहीं होता ।।
निज आश्रय से ही मुक्ति है, कहते श्री जिनदेव यहाँ ।।३।।

एक आत्म-भावना

कोई सहारा है नहीं, यों सोच मत जाना ।
चत्तारि शरणं पाठ पढ़ निज की शरण आना ।।
निज भावना भाते हुए, वैराग्य बढ़ाओ ।
सर्वत्र सुन्दर एक की ही, भावना भाओ ।।

मंगलाष्टक (संस्कृत)

[शार्दूलविक्रीड़ित]

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिश्वराः,
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः ।
श्री सिद्धान्तसुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥
श्रीमन्नम्र-सुरासुरेन्द्र-मुकुट-प्रद्योत-रत्नप्रभा,
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः ।
ये सर्वे जिनसिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥२॥
सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः ।
धर्मःसूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥३॥
नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतु-र्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ।
ये विष्णु प्रतिविष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥४॥
ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगता पंच ये,
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशला येऽष्टाविधाश्चारणाः ।
पञ्चज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः ,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥५॥
कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥६॥
ज्योतिर्व्यन्तर-भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रौप्याद्रिषु ।

इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥७॥
यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥८॥
इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्प्रदम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थङ्कराणां मुखात् ।
ये श्रृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थकामान्विता,
लक्ष्मीराश्रियते व्यपायरहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि ॥९॥

अमूल्य तत्त्व विचार

(हरिगीत छंद)

બહુ પુણ્ય કેરા પુંજથી, શુભ દેહ માનવનો મળ્યો,
તોયે અરે ! ભવચક્રનો, આંટો નહીં એક્કે ટળ્યો;
સુખ પ્રાપ્ત કરતાં સુખ ટળે છે, લેશ એ લક્ષ્યે લહો,
ક્ષણ ક્ષણ ભયંકર ભાવમરણે, કાં અહો રાચી રહો ?. ૧
લક્ષ્મી અને અધિકાર વધતાં, શું વધ્યું તે તો કહો ?
શું કુટુંબ કે પરિવારથી, વધવાપણું એ નય ગ્રહો;
વધવાપણું સંસારનું, નર દેહને હારી જવો,
એનો વિચાર નહીં અહોહો ! એક પળ તમને હવો. ૨
નિર્દોષ સુખ નિર્દોષ આનંદ, ત્યો ગમે ત્યાંથી ભલે,
એ દિવ્ય શક્તિમાન જેથી, જંજીરેથી નીકળે;
પર વસ્તુમાં નહિ મૂંઝવો, એની દયા મુજને રહી,
એ ત્યાગવા સિદ્ધાંત કે, પશ્ચાત દુઃખ તે સુખ નહીં. ૩
હું કોણ છું ? ક્યાંથી થયો ? શું સ્વરુપ છે મારું ખરું ?
કોના સંબધે વળગણા છે ? રાખું કે એ પરિહરું ?
એનો વિચાર વિવેકપૂર્વક, શાંતભાવે જો કર્યા,
તો સર્વ આત્મિક જ્ઞાનનાં, સિદ્ધાંત તત્ત્વ અનુભવ્યાં. ૪
તે પ્રાપ્ત કરવા વચન કોનું, સત્ય કેવળ માનવું ?
નિર્દોષ નરનું કથન માનો, 'તેહ' જેણે અનુભવ્યું;
રે ! આત્મ તારો ! આત્મ તારો ! શીઘ્ર એને ઓળખો,
સર્વાત્મમાં સમદ્રષ્ટિ ધો, આ વચનને હૃદયે લખો. ૫

શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર

અપૂર્વ અવસર

(ગુણસ્થાન આરોહરણ ક્રમ)

(શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર પ્રણિત)

અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે?
ક્યારે થઈશું બાહ્યાંતર નિર્ગ્રંથ જો ?
સર્વ સંબંધનું બંધન તીક્ષ્ણ છેદીને ,
વિચરશું કવ, મહત્પુરુષને પંથ જો ?
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે ? ॥૧॥

સર્વ ભાવથી ઔદાસીન્યવૃતિ કરી,
માત્ર દેહ તેં સંયમહેતુ હોય જો;
અન્ય કારણે અન્ય કશું કલ્પે નહીં,
દેહે પણ કિંચિંત્ મૂર્છા નવ જોય જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે ? ॥૨॥

દર્શનમોહ વ્યતીત થઈ ઉપજ્યો બોધ જે,
દેહ ભિન્ન કેવલ ચૈતન્યનું જ્ઞાન જો;
તેથી પ્રક્ષીણ ચારિત્રમોહ વિલોકિયે,
વર્તે એવું શુદ્ધસ્વરૂપનું ધ્યાન જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે ? ॥૩॥

આત્મસ્થિરતા ત્રણ સંક્ષિપ્ત યોગની,
મુખ્યપણે તો વર્તે દેહપર્યંત જો;
ઘોર પરીષહ કે ઉપસર્ગ ભયે કરી,
આવી શકે નહીં તે સ્થિરતાનો અંત જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે ? ॥૪॥

સંયમના હેતુથી યોગ પ્રવર્તના,
સ્વરૂપલક્ષે જિન આજ્ઞા આધીન જો;
તે પણ ક્ષણક્ષણ ઘટતી જાતી સ્થિતિમાં,
અંતે થાયે નિજસ્વરૂપમાં લીન જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે ? ॥૫॥

પંચ વિષયમાં રાગદ્વેષ વિરહિતતા,
પંચ પ્રમાદે ન મળે મનનો ક્ષોભ જો;
દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર ને કાળ, ભાવ પ્રતિબંધ વણ,
વિચરવું ઉદયાધીન પણ વીત લોભ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે ? ॥૬॥

ક્રોધ પ્રત્યે તો વર્તે ક્રોધ સ્વભાવતા,
માન પ્રત્યે તો દીનપણાનું માન જો;
માયા પ્રત્યે માયા સાક્ષી ભાવની,
લોભ પ્રત્યે નહીં લોભ સમાન જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૭॥

બહુ ઉપસર્ગકર્તા પ્રત્યે પણ ક્રોધ નહીં,
વંદે ચક્રી તથાપિ ન મળે માન જો;
દેહ જાય પણ માયા થાય ન રોમમાં,
લોભ નહીં છો પ્રબળ સિદ્ધિ નિદાન જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૮॥
નગ્નભાવ, મુંડભાવ સહ અસ્નાનતા,
અદંતધોવન આદિ પરમ પ્રસિદ્ધ જો;
કેશ, રોમ, નખ કે અંગે શૃંગાર નહીં,
દ્રવ્યભાવ સંયમમય નિર્ગ્રંથ સિદ્ધ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૯॥
શત્રુ મિત્ર પ્રત્યે વર્તે સમદર્શિતા,
માન અમાને વર્તે તે જ સ્વભાવ જો;
જીવિત કે મરણે નહિ ન્યૂનાધિકતા,
ભવ મોક્ષે પણ શુદ્ધ વર્તે સમભાવ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૦॥
એકાકી વિચરતો વળી સ્મશાનમાં,
વળી પર્વતમાં વાઘ-સિંહ સંયોગ જો;
અડોલ આસન ને મનમાં નહીં ક્ષોભતા,
પરમ મિત્રનો જાણે પામ્યા યોગ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૧॥
ઘોર તપશ્ચર્યામાં પણ મનને તાપ નહીં,
સરસ અન્ને નહીં મનને પ્રસન્ન ભાવ જો;
રજકણ કે રિદ્ધિ વૈમાનિક દેવની,
સર્વે માન્યા પુદ્ગલ એક સ્વભાવ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૨॥
એમ પરાજય કરીને ચારિત્રમોહનો,
આવું ત્યાં જ્યાં કરણ અપૂર્વ ભાવ જો;
શ્રેણી ક્ષપકતણી કરીને આરૂઢતા,
અન્ય ચિંતન અતિશય શુદ્ધ સ્વભાવ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૩॥
મોહ સ્વયંભૂરમણ સમુદ્ર તરી કરી,
સ્થિતિ ત્યાં જ્યાં ક્ષીણમોહ ગુણસ્થાન જો;
અંત સમય ત્યાં પૂર્ણ સ્વરૂપ વીતરાગ થઈ,
પ્રગટાવું નિજ કેવળજ્ઞાન નિધાન જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૪॥

ચાર કર્મ ઘનઘાતી તે વ્યવચ્છેદ જ્યાં,
ભવનાં બીજતણો આત્યંતિક નાશ જો;
સર્વ ભાવ જ્ઞાતા દ્રષ્ટા સહ શુદ્ધતા,
કૃતકૃત્ય પ્રભુ વીર્ય અનંત પ્રકાશ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૫॥

વેદનીયાદિ ચાર કર્મ વર્તે જહાં,
બળી સીંદરીવત્ આકૃતિ માત્ર જો;
તે દેહાયુષ આધીન જેની સ્થિતિ છે,
આયુષ પૂર્ણે, મટિયે દૈહિક પાત્ર જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૬॥

મન, વચન, કાયા ને કર્મની વર્ગણા,
છૂટે જહાં સકળ પુદ્ગલ સંબંધ જો;
એવું અયોગી ગુણસ્થાનક ત્યાં વર્તતું,
મહાભાગ્ય સુખદાયક પૂર્ણ અબંધ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૭॥

એક પરમાણુમાત્રની મળે ન સ્પર્શતા,
પૂર્ણ કલંક રહિત અડોલ સ્વરૂપ જો;
શુદ્ધ નિરંજન ચૈતન્યમૂર્તિ અનન્યમય,
અગુરુલઘુ, અમૂર્ત્ત સહજપદરૂપ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૮॥

પૂર્વ પ્રયોગાદિ કારણના યોગથી,
ઊર્ધ્વગમન સિદ્ધાલય પ્રાપ્ત સુસ્થિત જો;
સાદિ અનંત અનંત સમાધિ સુખમાં,
અનંત દર્શન, જ્ઞાન અનંત સહિત જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૧૯॥

જે પદ શ્રી સર્વજ્ઞે દીઠું જ્ઞાનમાં,
કહી શક્યા નહીં પણ તે શ્રી ભગવાન જો;
તેહ સ્વરૂપને અન્ય વાણી તે શું કહે ?,
અનુભવગોચર માત્ર રહ્યું તે જ્ઞાન જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૨૦॥

એહ પરમપદ પ્રાપ્તિનું કર્યું ધ્યાન મેં,
ગજા વગર ને હાલ મનોરથરૂપ જો;
તો પણ નિશ્ચય રાજચંદ્ર મનને રહ્યો,
પ્રભુ આજ્ઞાએ થાશું તે જ સ્વરૂપ જો.
અપૂર્વ અવસર એવો ક્યારે આવશે? ॥૨૧॥

પુજ્ય ગુરુદેવશ્રી કાનજીસ્વામીના યાત્રા સંસ્મરણ

શ્રવણબેલગોલા

શ્રવણબેલગોલા–એક ઐતિહાસિક તીર્થધામ

કર્ણાટક રાજ્યમાં આવેલું શ્રવણબેલગોલા દક્ષિણભારતનું લગભગ ૨૩૦૦ વર્ષ જૂનું ઐતિહાસિક તીર્થધામ છે અને જૈનધર્મના ગ્રંથો, સંસ્કૃતિ અને સ્થાપત્યનું પ્રસિદ્ધ કેન્દ્ર છે. આ નગરનું શ્રવણબેલગોલા નામ વિંધગિરિ (પહેલાં ઈન્દ્રગિરિ તરીકે ઓળખાતું) અને ચંદ્રગિરિ પહાડોની વચ્ચે આવેલ શ્વેત–તળાવ (કન્નડમાં બિલિ–ગોડ) ના કાંઠે મુનિરાજના ઉપદેશનું શ્રવણ કરવા આવતા શ્રોતાજનોને કારણે પડ્યું છે. વિંધગિરિ પર ૫૭ ફૂટ ઉન્નત અખંડ શિલામાંથી નિર્મિત ગોમટ્ટેશ્વર ભગવાન બાહુબલીની સાતિશય પ્રતિમા બિરાજમાન છે. આ પ્રતિમા ઈ.સ.૯૮૧માં શ્રી ચામુંડરાય દ્વારા પ્રતિષ્ઠિત કરાવવામાં આવી હતી, દર ૧૨ વર્ષે ભગવાન બાહુબલીનો મહામસ્તકાભિષેક થાય છે, જેનો લાખો ભાવકો લાભ લે છે. વિંધગિરિ પર્વત પર ચડવા માટે ૬૪૭ પગથિયાં છે. પર્વત ઉપર અન્ય નાના–મોટાં ૮ જિનમંદિરો છે.

વિંધગિરિની સામેની બાજુએ ચિક–બેટા (નાનો–પર્વત) ચંદ્રગિરિ પર્વત આવેલો છે. ચંદ્રગિરિનું નામ ઈ.સ. ની ૩ જી સદીમાં થયેલ ચંદ્રગુપ્ત મોર્યના નામ પરથી રાખવામાં આવેલ છે. આ પર્વત પર ચડવા માટે ૧૯૨ પગથિયાં છે. પર્વત ઉપર ઈ.સ.ની ૯મી સદીમાં નિર્માણ પામેલા નાના–મોટાં ૧૮ જિનમંદિરો છે. શ્રી નેમિનાથ ભગવાન જિનમંદિરમાં નેમિનાથ ભગવાનના જીવન પર આધારિત સુંદર ભિંતચિત્રો કોતરવામાં આવ્યાં છે. ખુલ્લા મેદાનમાં શ્રી ભરતેશ મુનિરાજની ભવ્ય પ્રતિમા છે. અહીંથી સામે વિંધગિરિ પર્વત પર બિરાજમાન ભગવાન બાહુબલીના અદ્‌ભૂત દર્શન થાય છે. ચંદ્રગિરિ પર્વતની પ્રાચીનતા ભદ્રબાહુ–ગુફા, ભદ્રબાહુ–ચરણપાદુકા અને ઈ.સના છઠ્ઠા સૈકામાં લખાયેલા શિલાલેખો પરથી સિદ્ધ થાય છે.

જિનમંદિરો અહીં "બસદિ અથવા વસતિ" તરીકે ઓળખાય છે. તળેટીમાં જૈનમઠની આસપાસ પ્રખ્યાત ભંડારા બસદિ, માનસ્થંભ, અક્કાન બસદિ, મંગા બસદિ, સિદ્ધાંત બસદિ, નગર જિનાલય તથા કલ્યાણી મંદિરો આવેલા છે.

શ્રવણબેલગોલા જૈન સંસ્કૃતિનું ધામ હોવાથી અહીં એક "રાષ્ટ્રિય પ્રાકૃત સંશોધન કેન્દ્ર" ની સ્થાપના કરવામાં આવી છે. આ સંસ્થા લગભગ ૬૦૦૦ જેટલાં તાડપત્ર તથા પાંડુલિપિની વૈજ્ઞાનિક પદ્ધતિથી જાળવણી કરે છે. પુસ્તકાલયમાં લગભગ ૨૦૦૦૦ શાસ્ત્રોનો ભંડાર છે. સંસ્થા દ્વારા જૈન દર્શન, ઈતિહાસ, કળા, સાહિત્ય તથા પ્રાકૃત ભાષા વિષયક શિક્ષણ પણ આપવામાં

આવે છે. અહીં પ્રાચીન જૈનાગમો–જેવા કે ગોમટ્ટસાર, તિલોયપણણત્તિ, આદિપુરાણ વગેરે પાંડુલિપિમાં ઉપલબ્ધ છે. જૈનમઠ દ્વારા સંચાલિત ધર્મશાળા અને ભોજનશાળાનું એક વિશાળ સંકુલ છે, જેમાં નૂતન " શ્રી કાનજીસ્વામી યાત્રિક નિવાસ" નો પણ સમાવેશ થાય છે. સંકુલની નજીક એક સંગ્રહાલયમાં શ્રી ભરત–બાહુબલીની કથા પર આધારિત ચિત્રો તથા મહામસ્તકાભિષેકમાં વપરાતા મહાકુંભ વગેરેનું સુંદર પ્રદર્શન રાખવામાં આવેલ છે.

વિક્રમ સંવત ૨૦૧૫ માં પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી દ્વારા શ્રવણબેલગોલાની પ્રથમવારની યાત્રા

મહા વદ ૯ની સવારમાં પૂ. ગુરુદેવ હાસનથી શ્રવણબેલગોલા આવી પહોંચ્યા. સ્વાગત બાદ તુરંત પૂ.ગુરુદેવ સંઘસહિત બાહુબલી ભગવાનની યાત્રા માટે વિંધ્યગિરિ પર્વત ઉપર પધાર્યા... ખૂબ જ રળિયામણો આ પર્વત લગભગ ૬૦૦ પગથિયાં ઊંચો છે, ને પા કલાકમાં ઉપર પહોંચી જવાય છે... ઉપર જઈને ૫૭ ફૂટ ઊંચા બાહુબલીનાથને નિહાળતાં જ ગુરુદેવ આશ્ચર્ય અને ભક્તિથી સ્તબ્ધ થઈ ગયા...ખૂબ જ ભાવપૂર્વક ફરી ફરીને એ વીતરાગી નાથને નિહાળ્યા....ને એ વીર–વૈરાગી બાહુબલીનાથના દર્શન કરી–કરીને ઘણો આનંદ વ્યક્ત કર્યો. ગુરુદેવની સાથે બાહુબલીનાથની યાત્રા કરતાં બેનશ્રીબેનને પણ ખૂબ જ ઉલ્લાસ અને ભક્તિભાવ જાગતા હતા. પ્રથમ બાહુબલી પ્રભુનું સમૂહપૂજન થયું...ત્યારબાદ પૂ. ગુરુદેવે બાહુબલી ભગવાનની ભક્તિ (ઐસે ઋષભનંદન દેખેં વનમેં....ઈત્યાદિ)કરાવી. પછી પૂ. બેનશ્રીબેને પણ ભક્તિ કરાવી હતી..

ત્યાર બાદ ગુરુદેવે ફરી ફરીને બાહુબલી ભગવાનનાં દર્શન કર્યા.. અને અનેકવિધ ભક્તિભર્યા ઉદ્‌ગારો કાઢ્યાં. પર્વત ઉપર બિરાજમાન બીજા અનેક ભગવંતો, શિલાલેખો વગેરેનાં પણ દર્શન કર્યા....આમ ઘણા આનંદ, ઉલ્લાસ અને ભક્તિભાવથી શ્રવણબેલગોલામાં બાહુબલી ભગવાનની યાત્રા કરીને સંઘ સહિત ગુરુદેવ નીચે પધાર્યા.

બાહુબલીનાથની યાત્રા કરાવનાર ગુરુદેવને નમસ્કાર હો.

બપોરે પ્રવચન વખતે પણ ગુરુદેવ બાહુબલી ભગવાનનો મહિમા વર્ણવીને યાત્રાનો હર્ષ વ્યક્ત કરતા હતાં. શ્રવણબેલગોલા ગામમાં પણ અનેક જિનમંદિરો છે, રાત્રે ચોવીસ ભગવંતોના મંદિરમાં ભક્તિ થઈ હતી.

ચંદ્રગીરીની યાત્રા

મહા વદ દશમની સવારમાં પૂ. ગુરુદેવ સંઘસહિત શ્રવણબેલગોલાની બીજી પહાડી ચંદ્રગિરિની યાત્રાએ પધાર્યા. આ પહાડી ઉપર લગભગ ૧૪ પ્રાચીન જિનમંદિરો, અતિ મહત્વના પ્રાચીન શિલાલેખો, તેમ જ ભદ્રબાહુસ્વામીની ગુફા છે. આ પર્વત ૫૦૦ મુનિઓનું સમાધિસ્થાન છે. એક મંદિરમાં પાર્શ્વપ્રભુના મોટા પ્રતિમાજી છે. બીજા એક મંદિરમાં– કે જે ચામુંડરાજાનું બંધાવેલું છે તેમાં ભદ્રબાહુ અને ચંદ્રગુપ્તના જીવન સંબંધી પ્રાચીન ચિત્રો કોતરેલા છે. પર્વત ઉપર આ મંદિર સૌથી જૂનું છે અને શ્રી નેમિચંદ્ર સિદ્ધાંત ચક્રવર્તીએ ગોમટ્ટસારની રચના આ મંદિરમાં કરી હતી. મંદિરોના

તેમની સન્મુખ પૂજન-ભક્તિ થયાં હતાં. અહીંના અનેક પ્રાચીન શિલાલેખોમાં- કે જે કન્નડી લિપિમાં છે, તેમાં કુંદકુંદાચાર્યદેવનો અતિ આદરપૂર્વક ઉલ્લેખ છે. એક શિલાલેખમાં તેઓશ્રીને "તત્કાલીન અશેષ તત્ત્વોના જ્ઞાતા" કહ્યાં છે. આ ઉપરાંત वंद्यो विभुर्भुवि न कैरिह कौण्डकुन्दः ઈત્યાદિ જે શિલાલેખ સમયસાર વગેરેમાં છપાયેલા છે, તે શિલાલેખ અહીંના પાર્શ્વપ્રભુના મંદિરમાં ડાબા હાથ ઉપર છે. તેનું ઘણા ભાવપૂર્વક ગુરુદેવે અને ભક્તોએ અવલોકન કર્યું હતું. ત્યારબાદ ભદ્રબાહુ સ્વામીની ગુફા જોઈ કે જેમાં ભદ્રબાહુ સ્વામીના પ્રાચીન ચરણકમળ છે, ત્યાં પણ દર્શન કરીને અર્ઘ્ય ચડાવ્યો.

જિનનાથપુરી

ચંદ્રગિરિ ધામની યાત્રા બાદ તેની બીજી બાજુ તળેટીમાં આવેલા જિનનાથપુર ગામમાં બે જિનમંદિરોના દર્શન કરવા ગુરુદેવ સંઘસહિત પધાર્યા હતાં. તેમાંથી એક મંદિરમાં તે પાર્શ્વનાથ પ્રભુ બિરાજે છે કે જેના ફોટાની સન્મુખ પૂ. ગુરુદેવે સોનગઢમાં પરિવર્તન કર્યું હતું.

બપોરે શ્રવણબેલગોલા ગામના બીજા પાંચ મંદિરોના દર્શન કરવા ગુરુદેવ પધાર્યા હતાં.. તેમાં અક્કનબસતી અને મંગાબસતી એ બે મંદિરો અક્કા અને મંગી (મોટી બહેન અને નાની બહેન) એ બે બહેનોએ બંધાયેલ છે. અક્કનવસતી-મંદિરમાં કસોટીના સ્તંભ ઉપર સુંદર પ્રાચીન કામગીરી છે. તે જોતાં જૈનધર્મના પ્રાચીન વૈભવનો ખ્યાલ આવે છે.
રાત્રે ભટ્ટારકજીના મંદિરમાં વિવિધ પ્રકારના જિનબિંબોના દર્શન કર્યા હતાં.

બાહુબલી પ્રભુની બીજી યાત્રા અને અભિષેક

મહા વદ ૧૧ના રોજ ફરીને વિંધ્યગિરિ ઉપર બિરાજમાન બાહુબલી ભગવાનની યાત્રા અર્થે ગુરુદેવ સંઘસહિત પધાર્યા. ગુરુદેવે ભાવપૂર્વક બાહુબલી પ્રભુના ચરણોનો અભિષેક કર્યો. યાત્રિકોએ પણ ભક્તિપૂર્વક અભિષેક કર્યો. આ અભિષેક સંબંધી ઉછામણીમાં તેમજ રથયાત્રા સંબંધી ઉછામણીમાં લગભગ દસેક હજાર રૂપિયા થયા હતા. આ રૂપિયાનો ઉપયોગ અહીંની યાત્રાની યાદગીરીમાં કરવામાં આવશે. અભિષેક બાદ ગુરુદેવે ચારે બાજુથી ફરી ફરીને બાહુબલીનાથને નયનભર નિરખ્યા... नीरखत तृप्ति न थाये.... બસ, જાણે ભગવાનને નિરખ્યા જ કરીએ! પછી ખૂબ ભક્તિ કરી... આમ બાહુબલી ભગવાનની બીજી યાત્રા અને અભિષેક કરીને ગુરુદેવ સાથે આનંદથી ભક્તિ કરતાં કરતાં ભક્તો નીચે આવ્યાં... બાહુબલી ભગવાનની આ બીજી યાત્રાથી ભક્તોને ઘણોં આનંદ થયો હતો. બપોરે પ્રવચનમાં ભેદજ્ઞાનના નિમિત્તોની દુર્લભતાનું વર્ણન આવતાં ગુરુદેવે કહ્યું: જુઓ, આ નિરાવરણ શાંત વીતરાગી બાહુબલી ભગવાન આ દુનિયામાં અજોડ છે, તે ભેદજ્ઞાનનું નિમિત્ત છે; ચૈતન્યશક્તિને ખુલ્લી કરીને ઊભેલા આ બાહુબલી ભગવાન સાક્ષાત્ ચૈતન્યને દેખાડે છે. વ્યાખ્યાન પછી દક્ષિણી બહેનોએ રાસપૂર્વક ભક્તિ કરી હતી.

ફોક્સ લાઈટમાં બાહુબલી દર્શન (ત્રીજી યાત્રા)

સાંજે થોડાં ભક્તો સહિત પૂ.ગુરુદેવ ફોક્સ લાઈટના પ્રકાશમાં બાહુબલી ભગવાનના દર્શન કરવા માટે ફરી વિંધ્યગિરિ ઉપર પધાર્યા. ગુરુદેવે ઘણા ભાવથી...ઘણી લગનથી...ભક્તિભીના ચિત્તે દર્શન કર્યા. શાંત વાતાવરણમાં ઝગઝગતી રહેલી એ વીર વીતરાગી સંતની મુદ્રા નિહાળતાં સૌને ઘણો આનંદ થયો અને પ્યારા બાહુબલીદેવ..જિનને વંદુ વાર હજાર...નાથને વંદુ વાર હજાર.... એ ભક્તિ પૂ. બેનશ્રીબેને ઘણી હોંશથી કરાવી.

એ રીતે ઉલ્લાસભરી ભક્તિપૂર્વક બાહુબલીનાથના દર્શન કરીને નીચે આવતાં શ્રવણબેલગોલાની જનતાએ અતિ ઉમળકાપૂર્વક ગુરુદેવને ગામમાં ફેરવીને સ્વાગત કર્યું. ગુરુદેવનું આવું ભાવભીનું સ્વાગત દેખીને ભક્તોને ઘણો હર્ષ થયો. લોકો કહેતા; જૈસે બાહુબલી ભગવાનકો દેખકર આપકો અતિશય આનંદ હુઆ, વૈસે હી હમકો કાનજીસ્વામીકો દેખકર અતિશય આનંદ હુઆ. આમ અતિશય આનંદ અને ભક્તિપૂર્વક બાહુબલી ભગવાનની યાત્રા થઈ.

વિક્રમ સંવત ૨૦૨૦ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી દ્વારા શ્રવણબેલગોલાની બીજીવારની યાત્રા

મહા સુદ છઠ્ઠ શ્રવણબેલગોલા પહોંચ્યા. લગભગ પંદર માઈલ દૂરથી યાત્રિકને શ્રવણબેલગોલાના પહાડ ઉપર બિરાજમાન બાહુબલીનાથના શિરોભાગના દર્શન થાય છે. રાત્રે જિનમંદિરમાં ચોવીસ ભગવંતો સન્મુખ ભક્તિ થઈ.

મહા સુદ સાતમની સવારમાં ગુરુદેવ સહિત ભક્તો યાત્રા માટે વિંધ્યગિરિ પહાડ પાસે પહોંચ્યા...પંદર-વીસ મિનિટમાં પહાડ ઉપર પહોંચીને જ્યાં બાહુબલીનાથને નિહાળ્યા...ત્યાં હર્ષાનંદથી સૌ સ્તબ્ધ બની ગયા...આ વીતરાગી બીમના દર્શને શાંતિની ને હર્ષની એટલી બધી ઊર્મિઓ જાગે છે કે ક્ષણભર તો વાણી તેને વ્યક્ત કરી શકતી નથી. ગુરુદેવ પણ સ્તબ્ધનયને ફરી ફરી એ પાવનમુદ્રાને અવલોકી રહ્યાં.

ત્યારબાદ બાહુબલી ભગવાનની બે પૂજા થઈ અને ગુરુદેવે તેમ જ બેનશ્રીબેને ભક્તિ કરાવી. એ રીતે આનંદપૂર્વક યાત્રા કરીને નીચે આવ્યાં, ત્યાં દક્ષિણદેશની જનતાએ ઉમંગપૂર્વક ગુરુદેવને ગામમાં ફેરવીને સ્વાગત કર્યું. સ્વાગત પુરું થતાં કન્નડ બાલિકાઓએ દીપક ને પુષ્પ વગેરેથી ગુરુદેવનું સન્માન કર્યું, તેમ જ કન્નડ ભાષામાં સ્વાગત-ગીત ગાયું. પાંચ વર્ષ પહેલાંની યાત્રા વખતે બાહુબલીપ્રભુના અભિષેકની ઉછામણીમાં જે દશહજાર રૂપિયા જેટલી રકમ થયેલી તેમાંથી અહીં ચાર રૂમનું એક મકાન બંધાયું છે, જેનું નામ **"શ્રી કાનજીસ્વામી યાત્રિકાશ્રમ"** છે. ગુરુદેવનો ઉતારો તેમાં જ હતો. ગુરુદેવની પધરામણી વખતે તેનું ઉદ્ઘાટન થયું હતું.

બપોરના પ્રવચનમાં ગુરુદેવે બાહુબલી ભગવાનની જીવનદશાનું અદ્‌ભૂત ભાવભીનું વર્ણન કર્યું. રાત્રે ફરીને પર્વત ઉપર જઈને સૌએ ફોક્સ લાઈટના પ્રકાશમાં બાહુબલીનાથની પાવનમુદ્રાના દર્શન કર્યા... અહા, ફરીફરીને દર્શન કરતાં અવનવા ભાવો જાગે છે. ગુરુદેવને પણ ખૂબ જ પ્રસન્નતા થતી હતી. અગાશીમાં બાહુબલીસ્વામીની મુદ્રા સામે મીટ માંડીને ગુરુદેવે ભાવભીના ચિત્તે અતિપ્રસન્નતાથી કહ્યું: વાહ! એમના મુખ ઉપર જુઓને ! કેવા અલૌકિક ભાવ તરવરે છે ! પુણ્યનો અતિશય ને પવિત્રતા પણ અલૌકિક....બંને દેખાઈ આવે છે. જ્ઞાન અંતરમાં એવું લીન થયું છે કે બહાર આવવાનો અવકાશ નથી. વીતરાગભાવમાં જ્ઞાન લીન થયું છે. મુખ ઉપર અનંત આશ્ચર્યવાળી વીતરાગતા છે; જાણે ચૈતન્યની શીતળતાનો બરફ !! અત્યારે દુનિયામાં એનો જોટો નથી. આવા-આવા અનેક ઉદ્‌ગારો ગુરુદેવે કાઢ્યાં. બાહુબલીનાથના દર્શનની ઊર્મિઓ વાણીમાં કઈ રીતે વ્યક્ત કરવી એ જાણે સૂઝતું ન હતું, પછી બાહુબલીપ્રભુની ઘણી ઘણી ભક્તિ થઈ. પૂ. બેનશ્રીબેને પણ અનેરા ઉમંગથી ભક્તિરસ રેલાવ્યો. ગુરુદેવ સાથે ફરીફરીને આ બાહુબલીનાથની યાત્રા કરતાં તેઓશ્રીને અને સમસ્ત યાત્રિકોને અપાર હર્ષોલ્લાસ થયો હતો. બાહુબલી દર્શનમાં ગુરુદેવનો આજનો પ્રમોદ કોઈ અનેરો હતો. આમ બહુ જ આનંદથી બાહુબલીનાથને નિહાળીને, ભક્તિ કરીને તથા બીજી યાત્રા પૂરી કરીને સૌ નીચે આવ્યા... અને બાહુબલીનાથના વૈરાગ્યજીવનની કથા સાંભળીને સૌ સૂઈ ગયા.

બીજા દિવસની સવારમાં ફરીને એ બાહુબલીનાથને ભેટવા ને એમના ચરણોનો અભિષેક કરવા સૌ યાત્રિકો ગુરુદેવ સાથે પહાડ પર પહોંચી ગયા. પૂજન બાદ મહાન ભક્તિથી ચરણાભિષેક થયો.

કહાનગુરુએ સુવર્ણકળશ વડે અભિષેકનો પ્રારંભ કર્યો, ત્યારે બેહદ હર્ષથી યાત્રિકો નાચી ઊઠ્યા હતાં. અભિષેક બાદ ગુરુદેવે ભક્તિ કરાવી હતી. "જંગલ વસાવ્યું રે સંતોએ..." એ ગીત વૈરાગ્યભાવથી ગવડાવ્યું હતું. ત્યારબાદ વિંધ્યગિરિ પર "બાહુબલીનાથજી ભલે બિરાજો જી..." ઈત્યાદિ ભજન વડે પૂ. બેનશ્રીબેને પણ ભક્તિ કરાવી હતી. આજની આનંદકારી યાત્રાના સ્મરણમાં હસ્તાક્ષર આપતાં બાહુબલીસ્વામીની સન્મુખ બેઠાં બેઠાં ગુરુદેવે લખ્યું છે કે "શ્રી બાહુબલી ભગવાનનો જય હો... આનંદામૃતનો જય હો..."

આમ ફરી ફરીને બાહુબલીનાથને ભેટીને, નિરખીને, અભિસીંચીને તથા સ્પર્શીને યાત્રા પૂર્ણ કરી, મંગલ ગીત ગાતાં ગાતાં સૌ નીચે આવ્યા. અનેક યાત્રિકો સામેની છોટી પહાડી-ચંદ્રગિરિ પર યાત્રા કરવા ગયા, ત્યાં અનેક પ્રાચીન મંદિરો જોયાં. કુંદકુંદાચાર્ય વગેરે સંબંધી શિલાલેખો જોયા અને ભદ્રબાહુ સ્વામીની ગુફામાં એમના સવા ફૂટ લાંબા ચરણો પણ જોયાં... દરેક ઠેકાણે દર્શન-પૂજન-ભક્તિ કર્યા.બપોરે ભટ્ટારકજીના મંદિરમાં જિનબિંબ દર્શન કર્યા. બાહુબલીસ્વામીના જીવનચિત્રો જોયા પછી પ્રવચનમાં ગુરુદેવે બાહુબલી ભગવાનનો ઘણો ઘણો મહિમા કર્યો.

વિક્રમ સંવત ૨૦૩૧ પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી દ્વારા શ્રવણબેલગોલાની ત્રીજીવારની યાત્રા

બેંગલોર શહેરમાં ચૈત્ર સુદ ૧૩ના મંગલ દિવસે ધામધૂમથી મહાવીર ભગવાનનો જન્મોત્સવ ઉજવાયો તથા મનોહર જિનમંદિરમાં અને સમવસરણ મંદિરમાં જિનેન્દ્ર ભગવંતોની મંગલ પ્રતિષ્ઠા થઈ. હિંદી–ગુજરાતી ભાષા સમજવાની મુશ્કેલી છતાં દક્ષિણ પ્રાંતના જિજ્ઞાસુઓએ ઘણાં જ પ્રેમથી ઉત્સવમાં ભાગ લીધો, ને પ્રભુના પંચકલ્યાણક દેખીને મુગ્ધ બન્યા.

ત્યારબાદ સંઘસહિત ગુરુદેવે શ્રવણબેલગોલામાં ધ્યાનસ્થ બાહુબલી ભગવાની યાત્રા કરી. અહો! વીતરાગ ધ્યાનમાં સ્થિત મુનિરાજ! જાણે ભક્તોના શિર પર હાથ ફેલાવીને મંગલ આશીર્વાદ દઈ રહ્યાં છે. મુનિરાજની અડગ આત્મસાધના દેખીને મુમુક્ષુને પણ આત્માને સાધવાની પ્રેરણા જાગે છે. અહો, પ્રભો! હજાર વર્ષથી કરોડો ભવ્યજીવોએ આપની પરમ શાંત વૈરાગ્યમુદ્રા દેખીને વીતરાગતાની તથા મોક્ષમાર્ગની પ્રેરણા મેળવી છે. આપ વિશ્વની વીતરાગી અજાયબી છો.

સાધક દશા કેવી અદ્‌ભુત હોય છે !
તે જોવું હોય તો જોઈ લ્યો બાહુબલીને.
સાધક સંસારથી કેવો અલિપ્ત હોય છે!
તે જોવું હોય તો જોઈ લ્યો બાહુબલીને.
ચૈતન્યપદમાં કેવી શાંતિ ભરી છે !
તે જોવું હોય તો જોઈ લ્યો બાહુબલીને.
સાધકો કેવા શૂરવીર હોય છે!
તે જોવું હોય તો જોઈ લ્યો બાહુબલીને.

ધન્ય બાહુબલી આતમ હિતમેં છોડ દિયા પરિવાર...કિ તુમનેં છોડા સબ સંસાર.
ધન છોડા વૈભવ સબ છોડા જાના જગત અસાર...કિ તુમનેં જાના જગત અસાર.

વારાંગ

કારકલથી વારાંગ ફક્ત ૨૪ કિ.મી. છે. અહીં ત્રણ જિનમંદિરો છે. જેમાં એક તો જલમંદિર છે. હોડકામાં બેસાડીને ખલાસી સામે કાંઠે લઈ જાય છે. હોડકામાં એક સાથે પાંચ વ્યક્તિને બેસાડે છે. હોડકામાં બેસીને સામે કાંઠે પહોંચતા ફક્ત 3–૪ મિનિટ જ થાય છે.

એક જ મંદિરમાં ચારે બાજુ શ્રી અનંતનાથ, શ્રી શાંતિનાથ, શ્રી પાર્શ્વનાથ અને શ્રી નેમિનાથ–તેમ ચારે બાજુ ખડ્‌ગાસને ચાર પ્રતિમાજી છે. આ ચારે ભગવાન શ્યામ આરસના ખડ્‌ગાસન ૬ ફીટના છે. ત્રીજા મંદિરમાં શ્રી નેમિનાથ પ્રભુ પદ્માસને છે. નીચેના ભાગમાં વચ્ચે ખડ્‌ગાસન સ્ફટિકની એક મૂર્તિ છે, તે સિવાય ૨૪–૨૪ તીર્થંકર ભગવંતોની બે લાઈન છે.વારાંગ તદ્‌ન નાનકડું ગામડું છે. મંદિર સિવાય ગામમાં કાંઈ નથી. સાંભળવા મુજબ વારાંગ તીર્થક્ષેત્રનો હમણાં ઘણો વિકાસ થયો છે.

મૂડબિદ્રી

આવાગમન	: રેલ્વે સ્ટેશનઃ મેંગલોર ૩૮ કિ.મી. બસ સ્ટેશનઃ મૂડબિદ્રી
પહોંચવાનો સરળ માર્ગ	: વેણૂર-કારકલ માર્ગ પરથી સડક રસ્તે
નજીકનું મુખ્ય શહેર	: મેંગલોર ૩૮ કિ.મી
નજીકના તીર્થ ક્ષેત્રો	: કારકલ ૧૮ કિ.મી, વેણૂર ૧૭ કિ.મી. ધર્મસ્થલ ૫૨ કિ.મી.

વેણૂરથી મૂડબિદ્રી ફક્ત ૨૭ કિ.મી. છે. આ સ્થળ અવશ્ય જવા જેવું છે. ભુલેચૂંકેય થાકીને કે સમયના અભાવે કોઈ સ્થળ પડતું મૂંક્વું નહીં. અહીં એક નાની એવી ધર્મશાળા છે, જેમાં ૭૫-૧૦૦ યાત્રિકો રહી શકે તેટલી વ્યવસ્થા છે. (છતાંય છેલ્લાં વર્ષોમાં નવી ધર્મશાળાઓ બંધાઈ હોય તો લેખકને ખબર નથી.) અહીંના મંદિરો અને શાસ્ત્રભંડારોનો વહીવટ ભટ્ટારકો કરે છે. આજે પણ ત્યાં તાડપત્ર ઉપર અંકિત થયેલા અનુપલબ્ધ ઘણાં ગ્રંથો ભંડારમાં સુરક્ષિત પડયાં છે; જેવા કે ધવલા, જયધવલા, મહાધવલા વિગેરે અનેક કિંમતી જૈન ગ્રંથો તાડપત્ર ઉપર લખેલા અહીંના શાસ્ત્રભંડારમાં છે.
અહીં કુલ ૧૮ જિનમંદિરો છે. તેમાં શ્રી ચંદ્રપ્રભુનું મંદિર જેને ત્રિભુવનતિલક ચુડામણી કહે છે, તે સિદ્ધાન્ત મંદિર તથા ગુરુમંદિર વિશેષ દર્શનીય છે.

મંદિર નં. ૧ : શ્રી ચંદ્રપ્રભુ ભગવાનનું મંદિર અથવા ત્રિભુવનતિલક ચુડામણી મંદિર : આ મંદિરમાં એક હજાર થાંભલા હતાં. આ મંદિર ઘણું જ પ્રાચીન અને વિશાળ હોઈને અવશ્ય દર્શનીય છે. અહીં માનસ્થંભજી પણ છે. શ્રી ચંદ્રપ્રભુજીની ઘણી મોટી પંચધાતુની પ્રતિમા ભવ્ય અને દર્શનીય છે. આટલી મોટી પંચધાતુની પ્રતિમા ભાગ્યે જ કોઈ સ્થળે જોવા મળે છે. જો કે મધ્યપ્રદેશમાં સાગર પાસે નવું તીર્થક્ષેત્ર "મંગલગિરિ" થાય છે, ત્યાં પંચધાતુની ૧૧। ફીટ ઉંચી શ્રી મહાવીર પ્રભુની ખડ્ગાસન પ્રતિમા મૂકી છે; જેનું વજન ૯ ટન છે. જેનું વર્ણન તીર્થક્ષેત્ર "મંગલગિરિ" માં લખેલું છે.

શ્રી ચંદ્રપ્રભુના આ મંદિરને "ત્રિભુવનતિલક ચુડામણી" મંદિર પણ કહે છે. આ ત્રણ માળનું મંદિર સન ૧૪૨૯માં એક કરોડ રૂપિયાના ખર્ચે તૈયાર થયું હતું તેમ કહે છે. તો આજે તેની શું કિંમત ગણવી તે જરૂર સૌએ વિચારવા જેવું છે. મૂળનાયક શ્રી ચંદ્રપ્રભુજીની સોનાની ખડ્ગાસન ૭ ફીટ ઉંચી ભવ્ય પ્રતિમા છે. તે સિવાય આ મંદિરમાં ૨૬ સ્ફટિક મણિના કિંમતી પ્રતિમાજી છે. તે સિવાય આ મંદિરમાં ઉપરના માળે સહસ્ત્રકૂટ જિનાલયમાં ધાતુની ૧૦૦૮ પ્રતિમા અત્યંત મનોહર છે.

મંદિર નં. ૨: શ્રી સિદ્ધાન્ત બસતી (મંદિર): આ મંદિરમાં ષટ્ખંડાગમ સૂત્રાદિ સિદ્ધાન્તગ્રંથો સુરક્ષિત છે. તેથી આ મંદિરને સિદ્ધાન્ત બસ્તી કહે છે. આ મંદિરની દરેક યાત્રિકોએ અવશ્ય મુલાકાત લેવી કે જેથી ભારતમાં બીજે ક્યાંય દર્શન ન કર્યા હોય તેવા કિંમતી પ્રતિમાજીના દર્શનનો અહીં લાભ મળશે.

મંદિર નં. ૩: ગુરુ બસતી અથવા સિદ્ધાન્ત ભવન : અગાઉ લખ્યાં મુજબ મંદિરને અહીં બસતી કહે છે. મંદિર કહેતાં જ નથી. આ મંદિર પણ વિશાળ છે, જે બે માળનું છે. આ મંદિરમાં મૂળનાયક શ્રી પાર્શ્વનાથ ભગવાન ખડ્ગાસન ૯ ફીટના પરમ શાંત મુદ્રાવાળા ભાવવાહી સૌમ્ય પ્રતિમાજી છે. નીચે આઠ વેદી છે. તેની ઉપર પાંચ વેદી છે. બીજે માળે ધાતુનું સહસ્ત્રકૂટ ચૈત્યાલય છે. તે સિવાય અહીં ચોવીસ ભગવાનનું મંદિર પણ છે. તેમજ સ્ફટિકના ચાર મોટા પ્રતિમાજી છે. ધવલા, જયધવલા, મહાધવલા વિગેરે મહાન પ્રાચીન ગ્રંથો તાડપત્ર ઉપર કન્નડલિપિમાં લખેલા ભોંયરામાં સુરક્ષિત રાખ્યા છે. તેનો ઉપયોગ ફક્ત દર્શન કરવા માટે જ છે, વાંચવા માટે નહીં. મૂડબિદ્રીના અગત્યના ત્રણ મંદિરોનું વર્ણન ઉપર મુજબ છે. બાકીના પંદર મંદિરોના નામ નીચે મુજબ છે.

(૧) હોસા બસતી (૨) વિક્રમશેઠી બસતી (૩)હિરી બસતી (૪) અમ્મનોર બસતી
(૫) વીરકેસ બસતી (૬) કોટી બસતી (૭)લિપ્પદ બસતી (૮) દેર મસેઠી બસતી
(૯) કલુ બસતી (૧૦) છોટી બસતી (૧૧)માધ્યસેઠી બસતી (૧૨) બૈકી બસતી
(૧૩) કેરે બસતી (૧૪) પડુ બસતી (૧૫)ભટ્ટારકજીનું મંદિર

દક્ષિણમાં ઘણી વખત વીજળી ચાલી જાય છે. આથી આવા સમયે બેટરી સાથે હોય તો જ ભગવાનના દર્શન થઈ શકે, માટે દક્ષિણની યાત્રામાં પાવરફુલ બેટરી સાથે હોવી ખાસ જરૂરી છે.

મૂડબિદ્રી બેંગલોરથી ૩૭૦ કિ.મી થાય છે. મૂડબિદ્રી જૈન કાશી તરીકે પ્રખ્યાત છે. આ ક્ષેત્ર ઐતિહાસિક અતિશય ક્ષેત્ર છે અને વિશ્વવિખ્યાત છે. અહીં જૈનોના લગભગ ૬૦ ઘર છે. ગુરુ બસતી અથવા સિદ્ધાન્ત બસતી એ અહીંનુ જૂનામાં જૂનું મંદિર છે. કહેવાય છે કે ઈ.સ. આઠમી સદીમાં શ્રવણબેલગોલાથી એક સાધુ અહીં આવ્યા હતા, તેમણે અહીં જંગલમાં વાઘ અને ગાયને એક સાથે પાણી પીતા જોયા; આથી તેમને એમ થયું કે અહીં કાંઈક હોવુ જોઈએ; તેથી તેમણે ત્યાંનું જંગલ સાફ કરાવ્યું, તો ખોદકામ કરાવતા ત્યાંથી ખૂબ મોટી શ્રી પાર્શ્વનાથ ભગવાનની ખડ્ગાસન મૂર્તિ નીકળી, જે કાળા પથ્થરમાંથી કોતરેલી હતી અને હજારો વર્ષ જૂની હતી. આ મૂર્તિની તે જ જગ્યાએ પ્રતિષ્ઠા કરાવી હતી, જેનું નામ ગુરુ બસતી અથવા સિદ્ધાન્ત બસતી કહેવાય છે.

મૂડબિદ્રીમાં ૧૮ મંદિરો સિવાય નીચે મુજબ અન્ય સ્થળો છે.

૧.સમાધિસ્થળ : સ્વર્ગીય મઠપતીઓની અઢાર સમાધિઓ છે, જે મંદિરથી એકાદ ફર્લાંગ દૂર છે. બે સમાધિ સિવાય અન્ય કોઈ સમાધિ ઉપર કોઈના નામ નથી.

૨.વીરવાણી : વિલાસ જૈન સિદ્ધાન્ત ભવન: આ શાસ્ત્રભંડાર સ્વ. પંડિત શ્રી લોકનાથજી શાસ્ત્રીજી મારફત શરૂ થયો હતો, જેમાં સેંકડો તાડપત્ર ઉપર લખેલા શાસ્ત્રો છે.

૩. શ્રીમતી રમારાની જૈન શોધ-સંશોધન ભવન : આ ભવનનું નિર્માણ સ્વ. સાહુજી શાંતિપ્રસાદજી દ્વારા થયું હતું. આ ભવનમાં અતિપવિત્ર, અમૂલ્ય તાડપત્ર ઉપર લખેલા જૈન પુરાણ, દર્શન ધર્મ, સિદ્ધાન્ત-ન્યાય, જ્યોતિષ આદિ જિનવાણી સંગ્રહ છે. દેશ-વિદેશથી લોકો આ ગ્રંથોના દર્શન-અભ્યાસ માટે આવે છે.

મૂડબિદ્રીના અન્ય મંદિરોનું વર્ણન :-

૧ શ્રી નેમિનાથ સ્વામી ગુરુ બસતી

૨ શ્રી પાર્શ્વનાથસ્વામી ગુરુ બસતી : આ મંદિર મોટું છે, જેમાં શ્રી પાર્શ્વનાથ પ્રભુ ખડ્ગાસન છે. તે સિવાય સ્ફટિકના ચાર પ્રતિમાજી છે. તે સિવાય આ મંદિરમાં બીજા નાના ભગવાન ઘણાં છે, જે જોતાં જાણે કે ભગવાનનો દરબાર ભરાયો હોય તેવું ભવ્ય લાગે છે. તે સિવાય અહીં પંચધાતુના નંદીશ્વર દ્વીપની રચના પણ છે. આ મંદિરમાં ગૃપ્ત ભંડાર જોવા મળ્યો, બાકી ક્યાંય આ તરફ મંદિરોમાં ગુપ્ત ભંડાર હોતા નથી.

૩ શ્રી આદિનાથ સ્વામી વિક્રમ સેઠી બસતી : આ મંદિર પણ પ્રાચીન છે,જુનું છે, જિર્ણોદ્ધારની જરૂર છે. લાઈનસર ચોવીસ તીર્થંકર ભગવંતો ખડ્ગાસને છે, જે પ્રાચીન છે. બહારના ભાગમાં માનસ્થંભ જેવા સ્થંભ ઉપર દેવ-દેવીઓ મૂકેલાં છે.

૪ શ્રી અરનાથ, શ્રી મલ્લિનાથ, શ્રી મુનિસુવ્રતસ્વામી સેટી બસતી :

આ મંદિરમાં શ્રી અરનાથ પ્રભુ પદ્માસને છે. તે સિવાય ચોવીસ ભગવાન પદ્માસને છે. બધી જ મૂર્તિઓ પ્રાચીન છે. મંદિરમાં નક્શીવાળા પથ્થરના અઢાર થાંભલા છે. મેડી ઉપર ત્રણ ભગવાન છે.

૫ શ્રી ચન્દ્રનાથસ્વામી બસતી :

આ મંદિરમાં અંદર ઊંડે-ઊંડે ભગવાન છે. તે સિવાય અહીં ધાતુની ઘણી મૂર્તિઓ છે.

૬. શ્રી શીતલનાથસ્વામી મંદિર :

૭. શ્રી પદ્મપ્રભુસ્વામી મંદિર :

શ્રી પદ્મપ્રભુજી સિવાય અહીં શ્રી સુમતિનાથ અને શ્રી સુપાર્શ્વનાથજી પણ છે. આ મંદિર ૪૦૦ વર્ષ જૂનું છે.

૮. શ્રી આદિનાથસ્વામી મંદિર :

અહીં બાર અંગ અને ચૌદ પૂર્વ શ્રુતયંત્ર પિત્તળ જેવી ધાતુમાં કોતરેલા છે. પંચધાતુનો સ્થંભ છે, જેના ઉપર પગલાં છે. પંચધાતુની નંદીશ્વર દ્વીપની રચના પણ છે. મૂળનાયક શ્રી આદિનાથ ભગવાન ખડ્ગાસન છે.

૯. શ્રી અનંતનાથસ્વામી-બેંકણ તીકરી બસતી

દરેક મંદિર ઉપર મંદિરના નામના બોર્ડ લગાવેલાં છે. આ મંદિરમાં લાઈટ પણ છે. મૂળનાયક શ્રી અનંતનાથસ્વામી છે, તે સિવાય બાજુમાં શ્રી પાર્શ્વનાથ પ્રભુ છે. બીજા સ્ફટિકના ચૌમુખી ભગવાન છે. ચૌમુખી અને વળી

ખડ્ગાસને સ્ફટિકના ભગવાન આ મંદિરમાં જ જોવા મળ્યાં. બીજા કોઈ ગામમાં સ્ફટિકના ચૌમુખી અને ખડ્ગાસન પ્રતિમાજી ક્યાંય જોવા મળતા નથી. તે સિવાય અહીં પંચધાતુના ખડ્ગાસન પ્રતિમાજી પણ છે. કન્નડ ભાષામાં ધાતુની પ્લેટ ઉપર બાર અંગ અને ચૌદ પૂર્વ કોતરેલા છે.

૧૦. શ્રી મલ્લિનાથસ્વામી મંદિર :

આ મંદિરમાં અંદર બહુ ઊંડે-ઊં ડે ભગવાનના દર્શન થાય છે.

૧૧. શ્રી અનંતનાથસ્વામી પડુ બસતી :

આ મંદિર આઠમી શતાબ્દીનું છે. મૂડબિદ્રીના કુલ ૧૮ મંદિરોમાં આ મંદિર સૌથી જૂનું છે. અહીં ત્રણ ભગવાન ખડ્ગાસન છે.

૧૨. શ્રી પાર્શ્વનાથ સમી ગુરુ બસતી :

આ મંદિરમાં લાઈટ છે. સ્ફટિકના ત્રણ ભગવાન છે, જેમાં બે ખડ્ગાસન અને એક પદ્માસન છે; તેમની ફરતી પંચધાતુની મૂર્તિઓ છે. અહીં મૂળનાયક શ્રી પાર્શ્વનાથ ભગવાન ખડ્ગાસન ૧૦ ફીટ ઊંચા છે. મૂડબિદ્રીમાં એક ધર્મશાળા છે, જે સામાન્ય છે. એક સાઈડમાં થોડી રૂમો છે. અમુક રૂમમાં પંખા તથા પલંગ છે. સામે મોટો હોલ છે.

વેણુર-અતિશયક્ષેત્ર

આવાગમન	:	રેલ્વે સ્ટેશન : મેંગલોર ૫૫ કિ.મી બસ સ્ટેશન : ધર્મસ્થલ ૩૫ કિ.મી
પહોંચવાનો સરળ માર્ગ	:	ધર્મસ્થલથી સડક રસ્તે
નજીકનું મુખ્ય શહેર	:	મેંગલોર ૫૫ કિ.મી., ધર્મસ્થલ ૩૫ કિ.મી.,
નજીકના તીર્થક્ષેત્રો	:	મૂડબિદ્રી ૨૭ કિ.મી., કારકલ ૪૫ કિ.મી., ધર્મસ્થલ ૩૫ કિ.મી., વારાંગ ૪૦ કિ.મી.

ધર્મસ્થલથી વેણૂર અતિશયક્ષેત્ર ૩૫ કિ.મી દૂર આવેલ છે. નદી કિનારે એક નાનકડું ગામ છે, ત્યાં નાની એવી ધર્મશાળા છે. (હાલ નવી થઈ હોય તો તેનો ખ્યાલ નથી.) અહીં શ્રવણબેલગોલાના ભટ્ટારક શ્રી ચારૂકીર્તિની પ્રેરણાથી ઈ.સ.૧૬૦૪માં શ્રી ચામુંડરાયના કુટુંબીજન શ્રી થીમરાજને શ્રી બાહુબલી ભગવાનની ૪૦ ફીટ ઉંચી પ્રતિમા બિરાજમાન કરેલ છે. તે સિવાય શ્રી થીમરાજને શ્રી શાંતિનાથ ભગવાનનું મંદિર પણ બંધાવેલ છે. તે સિવાય બીજા ચાર મંદિરો વેણૂરમાં છે. એમ કહેવાય છે કે ભૂતકાળમાં અહીં એક મંદિરમાં ૧૦૦૦ થી વધુ પ્રતિમાજી હતા. (હાલ ત્યાં કેટલા છે તેની ખબર નથી.) અહીં એક માનસ્થંભજી છે. એક જ કમ્પાઉન્ડમાં નાના-નાના ત્રણ મંદિરો છે. વેણૂરમાં ચોથા મંદિરમાં શ્રી બાહુબલીજીની ખડ્ગાસન મૂર્તિ છે. ગામમાં કોઈ જ ધણી-ધોરી નહીં હોઈને આ મૂર્તિ ખૂબ જ ડાઘી થઈ ગઈ છે. આ બાહુબલીજીની મૂર્તિ આરસની નથી, ચાલુ પથ્થરની છે. તેથી તેના ઉપર વરસાદ પડવાથી તે પ્રતિમાજી ઉપર ખૂબ જ કાળા ડાઘ પડેલાં છે. તેથી ભગવાનની મુદ્રા પણ સ્પષ્ટ દેખાતી નથી. મસ્તકથી પગ સુધી બધે જ કાળા ધાબા પડી ગયાં છે. પૂજારીને પૂછ્યું કે આમ કેમ છે ? તો તેણે કહ્યું કે રોજ

અભિષેક કેમ કરવો ? કેમ કે પ્રતિમાજી ૪૦ ફીટ ઊંચા છે. બાર વર્ષે અહીં અભિષેક થાય છે તેમ કહ્યું, બાકી તો પૂજારી દરરોજ પગ ઉપર એક ટબુડી પાણી રેડે છે, એટલે અભિષેક થઈ ગયો કહેવાય તેમ પુજારીએ કહ્યું.
વેણૂરમાં કુલ આઠ જૈનમંદિર છે, જે દર્શનીય છે.

કારકલ

આવાગમન	:	રેલ્વે સ્ટેશન : મેંગલોર ૫૩ કિ.મી. બસ સ્ટેશન : કારકલ
પહોંચવાનો સરળ માર્ગ	:	મૂડબિદ્રી તથા મેંગલોરથી સડક રસ્તે
નજીકના મુખ્ય શહેર	:	મૂડબિદ્રી ૧૮ કિ.મી., મેંગલોર ૫૩ કિ.મી.
નજીકના તીર્થક્ષેત્રો	:	મૂડબિદ્રી ૧૮ કિ.મી., હુમચા ૧૧૩ કિ.મી., વારાંગ ૨૪ કિ.મી

મૂડિબિદ્રીથી ૧૮ કિ.મી દૂર કારકલ આવેલું છે. અહીં તદ્ન નાનકડો પહાડ છે. ટેકરી કહો તો પણ ચાલે, જે ચઢતાં ફક્ત ૭-૮ મિનીટ થાય છે. ફક્ત ૧૮૦ પગથિયાં છે, તેથી સૌ કોઇ ચઢી શકે તેવું છે. ઉપર શ્રી બાહુબલીજી ભગવાન ખડ્ગાસન ૩૬ ફીટ ઊંચા છે. આ પ્રતિમાજી ઈ.સ. ૧૪૩૨ ના છે. આ પ્રતિમાજી વીર પાંડવ ભૈરવરાજને બનાવ્યાં હતાં. પહાડ ચઢતાં પહેલાં નીચે એક મંદિર છે. પહાડ ઉપર શ્રી બાહુબલીજીનું બીજુ મંદિર ગણાય છે. તે સિવાય પહાડ ઉપર બે બાજુમાં બે મંદિરો છે. આ રીતે અહીં કુલ ચાર મંદિરો છ .
તે સિવાય અહીં એક ૬૨ ફીટનો સળંગ એક જ પથ્થરમાંથી બનાવેલો માનસ્થંભ છે, પણ તે પોરંબદરી પથ્થરનો બનાવેલો હોઈને ઉપર વરસાદનું પાણી પડવાથી કાળો મસ થઈ ગયો છે. આખા ભારતમાં સળંગ એક જ પથ્થરમાંથી બનાવેલો ૬૨ ફીટનો માનસ્થંભ ફક્ત અહીં જ છે.

મંદિર નં. ૫ : શ્રી નેમિનાથ મંદિર :

ઉપર લખેલ માનસ્થંભજી જે કમ્પાઉન્ડમાં છે, તે જ કમ્પાઉન્ડમાં આ મંદિર છે. આ મંદિર ૫૦૦ વર્ષ જૂનું છે.૫ ફીટના શ્યામ આરસના શ્રી નેમિનાથ ભગવાન છે. આ મંદિર દર્શનીય છે.

મંદિર નં ૬: આ જ કમ્પાઉન્ડમાં ખડ્ગાસને ૩॥ ફીટના શ્રી ચંદ્રપ્રભુ ભગવાનનું મંદિર છે.

મંદિર નં. ૭ : ધાતુના ખડ્ગાસન પ્રતિમાજી છે.

મંદિર નં. ૮: આ મંદિર ઘણું જ સુંદર અને દર્શનીય છે. અહીં આરસના ચોવીસ તીર્થંકર ભગવંતો ખડ્ગાસને છે. સામાન્ય રીતે બધે ચોવીસ તીર્થંકરો પદ્માસને હોય છે, જ્યારે અહીં બધા જ ચોવીસ ભગવંતો ખડ્ગાસને છે. પંચધાતુના બાવન જિનાલય પણ છે.

મંદિર નં. ૯ : શ્રી ધર્મનાથ, શ્રી શાંતિનાથ અને શ્રી કુન્થુનાથ-ત્રણ ભગવંતો એક સાથે ખડ્ગાસન છે. વચ્ચેના ભગવાન બદામી આરસના છે. બંને બાજુના ભગવાન શ્યામ આરસના છે.

મંદિર નં. ૧૦. : આ મંદિરમાં શ્રી અનંતનાથ ભગવાન ખડ્ગાસને છે. આ મંદિરનું કોઈ ધણી-ધોરી નથી, જરા પણ સફાઈ નથી.

મંદિર નં ૧૧.: નાનકડી ટેકરી (પહાડ) ઉપર શ્રી અરનાથ, શ્રી મલ્લિનાથ અને શ્રી મુનિસુવ્રતનાથ-તેમ ત્રણ ભગવાન ખડ્ગાસને છે. જે ૪॥ ફીટના શ્યામ આરસના છે. આ મંદિરને ચૌમુખી મંદિર પણ કહે છે, કારણ કે ચારે બાજુ ચારે દિશામાં ત્રણ-ત્રણ ભગવાન છે અને ચારે દિશાના ત્રણે ત્રણ ભગવાન ૪॥-૪॥ ફીટના ખડ્ગાસને છે. આ મંદિર ઘણું જ મોટું છે. ૧૦૮ થાંભલા છે. આ મંદિર ૫૦૦ વર્ષ જૂનું છે. ભૈરવરાજ જૈનના રાજમાં આ મંદિર થયું હતું.

ખાસ નોંધ : અહીં કારકલમાં સાંજે ૬:૩૦ થી ૭.૦૦ વાગ્યે બધાં જ મંદિરો બંધ થઈ જાય છે. કારકલમાં કાજુના ઘણાં જ કારખાના છે, તેથી અહીં કાજુ ઘણાં જ સસ્તા મળે છે. નાની-મોટી સાઈઝ, સફેદ-ઝાંખા, તેમ જાત પ્રમાણે ભાવો હોય છે. છતાં પણ અહીં કાજુ જરૂરથી ઘણાં સસ્તા મળે છે. કારખાના પણ ઘણાં છે. તેથી ફરીને-કસીને-જોઈને લેતા આવડવું જોઈએ. રવિવારે બધાજ કારખાના બંધ હોય છે. તેથી રવિવારે કાજુ બિલકુલ મળતાં નથી. કારકલ પાસે જ ગ્રેનાઈટ પથ્થરના પહાડો પણ છે. આ ગ્રેનાઈટ ભારતભરમાં મોકલવામાં આવે છે.

श्री शान्तिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ स्तुति -(लावनी)

हे शान्ति-कुंथु-अरनाथ चित्त हर्षाया ।
प्रभु दर्शन कर निजदर्शन मैने पाया ॥ टेक॥
इन्द्रिय विषयों की सर्व वासना छूटी ।
मिट गयी स्वयं पर्याय दृष्टि प्रभु झुठी ॥
अक्षय ज्ञानानन्द स्वाद जिनेश्वर आया ॥१॥
चक्री इन्द्रादिक पद भी हेय सु- भासे ।
शाश्वत अद्भूत प्रभुता निजमाँहि प्रकाशे ॥
अविकारी चेतन पद स्वामी दर्शाया ॥२॥
ऐसी प्रभुता अन्यत्र न देय दिखाई ।
जिन मुद्रा ही दृष्टि सें आज समाई ॥
वह धन्य घड़ी जब प्रगटे भाव जगाया ॥३॥
अब नहीं चाह कुछ रही नहीं कुछ चिंता ।
प्रभु चरण शरण पा हुई सहज निश्चिंता ॥
निर्द्वन्द हुआ निष्काम भाव प्रगटाया ॥४॥
हो प्रभु ऐसा पुरुषार्थ परम प्रभु ध्याऊँ ।
तज सकल उपाधि बोधि समाधि पाऊँ ॥
आनंदित हो चरणों में शीश नवाया ॥५॥

निर्ग्रन्थ भावना

निर्ग्रन्थता की भावना अब हो सफल मेरी ।
बीते अहो आराधना में हर घड़ी मेरी ॥ ॥ टेक...॥
करके विराधन तत्त्व का, बहु दुःख उठाया ।
आराधना का यह समय, अतिपुण्य से पाया ॥
मिथ्या प्रपंचो में उलझ अब, क्यों करुँ देरी ? ॥ ॥ निर्ग्रन्थता...॥
जब से लिया चैतन्य के, आनन्द का आस्वाद ।
रमणीक भोग भी लगें, मुझको सभी निःस्वाद ॥
ध्रुवधाम की ही ओर दौड़े, परिणति मेरी ॥ ॥ निर्ग्रन्थता...॥
पर में नहीं कर्तव्य मुझको, भासता कुछ भी ।
अधिकार भी दिखें नहीं, जग में अरे कुछ भी ॥
निज अंतरंग में ही दिखें, प्रभुता मुझें मेरी ॥ ॥ निर्ग्रन्थता...॥
क्षण-क्षण कषायों के प्रसंग, ही बनें जहाँ ।
मोहीजनो के संग में, सुख शान्ति हो कहाँ ॥
जग-संगति से तो बढ़े, दुखमय भ्रमण फेरी ॥ ॥ निर्ग्रन्थता...॥
अब तो रहूँ निर्जन वनों में, गुरुजनों के संग ।
शुद्धात्मा के ध्यानमय हो, परिणति असंग ॥
निजभाव में ही लीन हो, मेटूँ जगत-फेरी ॥ ॥ निर्ग्रन्थता...॥
कोई अपेक्षा हो नहीं, निर्द्वन्द हो जीवन ।
संतुष्ट निज में ही रहूँ, नित आप सम भगवन् ॥
हो आप सम निर्मुक्त, मंगलमय दशा मेरी ॥ ॥ निर्ग्रन्थता...॥
अब तो सहा जाता नहीं, बोझा परिग्रह का ।
विग्रह का मूल लगता है, विकल्प विग्रह का ॥
स्वाधीन स्वाभाविक सहज हो, परिणति मेरी ॥ ॥ निर्ग्रन्थता...॥

भक्ति

हमकों भी बुलवालो स्वामी, सिद्धों के दरबार में । ॥टेक॥
जीवादिक सातों तत्त्वों की, सच्ची श्रद्धा हो जाये ॥
भेदज्ञान से हम कों भी प्रभु, सम्यक्दर्शन हो जाये ।
मिथ्यातम के कारण स्वामी, हम डुबे संसार में ॥ हमकों भी...॥१॥
आत्मद्रव्य का ज्ञान करें हम, निज स्वभाव में आ जायें ।
रत्नत्रय की नाव बैठकर, मोक्ष भवन को पा जायें ॥
पर्यायों की चकाचौंध से, बहते है मझधार में ॥ हमकों भी...॥२॥

भक्ति

जीयरा... जीयरा... जीयरा... जीयरा...
जीवराज उड़के जाओ सम्मेदशिखर में ।
भाव सहित वंदन करो, पार्श्व चरण में ॥ ।टेक॥
आज सिद्धों से अपनी बात होके रहेगी ।
शुद्ध आतम से मुलाकात होके रहेगी ॥
रंग रहित, राग रहित, भेद रहित जो ।
मोह रहित, लोभ रहित, शद्ध बुद्ध जो ॥ जीयरा.... ॥१॥
ध्रुव अनुपम अचल गति जिनने पाई है ।
सारी ऊपमाऐं जिनसे आज शरमाई है ॥
अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख, अनन्त वीर्य मय ।
अनन्त सुक्ष्म, नाम रहित, अव्याबाधी है ॥ जीयरा... ॥२॥
अहो ! शाश्वत सिद्धधाम तीर्थराज है ।
यहाँ आकर प्रसन्न चैतन्यराज है ॥
शुरु करें आज यहाँ आत्म साधना ।
चतुर्गति में हो कभी जन्म मरण ना ॥ जीयरा... ॥३॥

- चाहे कितनी भी प्रतिकूलता के प्रसंग बन जाएँ, सर्व जीवों में भावी सिद्ध ही देखेंगे उनसे राग - द्वेष नहीं करेंगे ।
- मेरे कर्म के उदय से अधिक अनुकूलता या प्रतिकूलता देने में कोई भी जीव सक्षम नहीं है, इसीलिए सबके प्रति समता का भाव ही रखेंगे ।
- पाप के उदय में भी कभी सच्चे धर्म के मार्ग से नहीं हटेंगे ।
- सदैव जिनधर्म में बताए हुए अनंत गुणमयी आत्म स्वरुप की उपलब्धि का पुरुषार्थ करेंगे ।
- प्रतिदिन निरंतर जिनवाणी के माध्यम से अपने निज रुप का चिंतन करेंगे और कम से कम सम्यक् दर्शन लेकर जिनेंद्र भगवान के सच्चे भक्त बनेंगे ।

शाश्वत आनन्दमयी स्वरुप को निहारते हुए सहज आनन्दित रहना ही आराधना है ।

श्री श्रुतस्कन्ध विधान

मंगलं सिद्ध परमेष्ठी मंगलं तीर्थंकरम् ।
मंगलं शुद्धचैतन्यं आत्मधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥
मंगल वर्धमानाय मंगलं गौतम सुऋषि ।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो महा मुनिवर मंगलम् ॥

(दोहा)

मंगलं पंच परमेष्ठी, जिन प्रतिमा जिनधाम ।
जय जयदम्बे दिव्यध्वनि, श्री जिनधर्म प्रणाम ॥

(चामर)

वीतराग श्री जिनेन्द्र ज्ञानरुप मंगलम् ।
गणधरादि सर्वसाधु ध्यान रुप मंगलम् ॥
जैनधर्म सर्वधर्म विश्वधर्म मंगलम् ।
वस्तु का स्वभाव ही अनाद्यनंत मंगलम् ॥
वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थंकर मंगलम् ॥
ज्ञानरुप ध्यानरुप श्री जिनेन्द्र मंगलम् ॥
सर्व सिद्ध अरहंत भगवंत मंगलम् ।
सर्व आचार्य अपाध्याय साधु मंगलम् ॥
सर्व जिनचैत्य चैत्यालय मंगलम् ।
सर्वज्ञ दिव्यध्वनि धर्म जिन मंगलम् ॥
आत्मकल्याण पुरुषार्थ भव्य मंगलम् ।
आत्मतत्त्व प्राप्ति का उपाय श्रेष्ठ मंगलम् ॥
श्री कुन्दकृन्द आचार्य देव मंगलम् ।
ज्ञान ध्यान पूर्ण वैराग्य भाव मंगलम् ॥
सर्व तीर्थंकर पंचकल्याण मंगलम् ।
श्रुतस्कन्ध विधान पूज्य मंगलम् ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री श्रुतपंचमी पूजन

स्याद्वाद मय द्वादशांग युत माँ जिनवाणी कल्याणी ।
जो भी शरण हृदय से लेता हो जाता केवलज्ञानी ॥
जय जय जय हितकारी शिव सुखकारी माता जय जय जय ।
कृपा कुम्हारी से ही होता भेद ज्ञान का सूर्य उदय ॥
श्री धरसेनाचार्य कृपा से मिला परम जिन श्रुत का ज्ञान ।
भुतबली मुनि पुष्पदंत ने षट्खंडागम रचा महान ॥
अंकलेश्वर में यह ग्रंथ हुआ था पूर्ण आज के दिन ।
जिनवाणी लिपि बद्ध हुई थी पावन परम आज के दिन ॥
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस जिन श्रुत का जय जयकार हुआ ।
श्रुत पंचमी पर्व पर श्री जिनवाणी का अवतार हुआ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुत षट्खंडागम अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री परमश्रुत षट्खंडागम अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री परमश्रुत षट्खंडागम अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

शुद्ध स्वानुभव जल धारा से यह जीवन पवित्र कर लूँ ।
साम्यभाव पीयूष पान कर जन्म जरामय दुःख हर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव का उत्तम पावन चंदन चर्चित कर लूँ ।
भव दावानल के ज्वालामय अघसंताप ताप हर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव के परमोत्तम अक्षत धवल हृदय धर लूँ ।
परम शुद्ध चिद्रूप शक्ति से अनुपम अक्षय पद वर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लुँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव के पुष्पो से निज अन्तर सुरभित कर लूँ ।
महाशील गुण केंं प्रताप से मैं कन्दर्प दर्प हर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव के अति उत्तम प्रभु नैवेद्य प्राप्त कर लूँ ।
अमल अतीन्द्रिय निज स्वभाव से दुखमय क्षुधा व्याधि हर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव के प्रकाशमय दीप प्रज्वलित कर लूँ ।
मोह तिमिर अज्ञान नाशकर निज कैवल्य ज्योति वर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव गन्ध सुरभि मय ध्यान धूपउर में भर लूँ ।
संवर सहित निर्जरा द्वारा मैं वसु कर्म नष्ट कर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ उत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव का फल पाऊँ मैं लोकाग्र वास कर लूँ ।
अजर अमर अविकल अविनाशी पद निर्वाण प्राप्त कर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ ऊत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्ध स्वानुभव दिव्य अर्घ्य ले रत्नत्रय सुपूर्ण कर लूँ ।
भव समुद्र को पार करुँ प्रभु निज अनर्घ्य पद मैं वर लूँ ॥
श्रुत पंचमी पर्व शुभ ऊत्तम जिन श्रुत को वन्दन कर लूँ ।
षट्खंडागम धवल जय धवल महा धवल पूजन कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(मरहठा माधवी)

श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ।
गूँजा जय जयकार जगत में जिनश्रुत जय जयकार का ॥
ऋषभदेव की दिव्य ध्वनि का लाभ पूर्ण मिलता रहा ।
महावीर तक जिनवाणी का विमल वृक्ष फलता रहा ॥
हुए केवली अरुश्रुतकेवलि ज्ञान अमर मिलता रहा ।
फिर आचार्यो के द्वारा यह ज्ञान दीप जलता रहा ॥
भव्यों में अनुराग जगाता मुक्ति वधू के प्यार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥१॥
गुरु परम्परा से जिनवाणी निर्झर सी झरती रही ।
मुमुक्षुओं को परम मोक्ष का पथ प्रशस्त करती रही ॥
किन्तु काल की घड़ी मनुज की स्मरण शक्ति हरती रही ।
श्री धरसेनाचार्य हृदय में करुण टीस भरती रही ॥
द्वारशांग का लोप हुआ तो क्या होगा संसार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥२॥
शिष्य भूतबलि पुष्पदंत की हुई परीक्षा ज्ञान की ।
जिनवाणी लिपिबद्ध हेतु श्रुत विद्या विमल प्रदान की ॥
ताड़ पत्र पर हुई अवतरित वाणी जन कल्याण की ।
षट्खंडागम महाग्रंथ करणानुयोग जय ज्ञान की ॥
ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी दिवस था सुर नर मंगलचार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥३॥
धन्य भूतबलि पुष्पदंत जय श्री धरसेनाचार्य की ।
लिपि परम्परा स्थापित करके नई क्रांति साकार की ॥
देवों ने पुष्पों की वर्षा नभ से अगणित बार की ।
धन्य धन्य जिनवाणी माता निज पर भेद विचार की ॥
ऋणी रहेगा विश्व तुम्हारे निश्चय का व्यवहार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥४॥

धवला टीका वीरसेन कृत बहत्तर हजार श्लोक ।
जय धवला जिनसेन सुऋषि कृत उत्तम साठ हजार श्लोक ॥
महाधवल है देवसेन कृत हैं चालीस हजार श्लोक ।
विजयधवल अरु अतिशयधवल नहीं उपलब्ध एक श्लोक ॥
षट्खंडागम टीकाएँ पढ़ मन होता भव पार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥ ५॥
फिर तो ग्रन्थ हजारों लिक्खे ऋषि मुनियों ने ज्ञान प्रधान ।
चारों ही अनुयोग रचें जीवों पर करके करुणा दान ॥
पुण्य कथा प्रथमानुयोग द्रव्यानुयोग है तत्व प्रधान ।
ऐक्सरे करणानुयोग द्रव्यानुयोग केमरा महान ॥
यह परिमाण नापता है वह बाह्य चरित्र विचार का ।
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ॥ ६॥
जिनवाणी की भक्ति करें हम जिन श्रुत की महिमा गायें ।
सम्यक् दर्शन का वैभव ले भेदज्ञान निधि को पायें ॥
रत्नत्रय का अवलम्बन लें निज स्वरुप में रम जायें ।
मोक्षमार्ग पर चलें निरन्तर फिर न जगत में भरमाये ॥
धन्य धन्य अवसर आया है अब निज के उद्धार का ।
धन्य भाग है आज हमारा जिनवाणी जयकार का ॥
श्रुत पंचमी पर्व अति पावन है श्रुत के अवतार का ।
गूँजा जय जय नाद जगत में जिन श्रुत जय जयकार का ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री परमश्रुतषट्खंडागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा ।

(दोहा)

श्रुत पंचमी सुपर्व पर करो तत्त्व का ज्ञान ।
आत्मतत्त्व का ध्यान कर पाओ पद निर्वाण ॥

इत्याशीर्वाद

मंगलाचरण

(ताटंक)

पूर्व भवों में षोडश कारण भव्य भावना प्रभु भायीं ।
प्रकृति तीर्थंकर यश बांधी जो अब नाथ उदय आयीं ॥
ज्ञानाभ्यास किया था जिसके फल में पाया केवलज्ञान ।
धनघातिया कर्म सब नाशे स्वतः हुए तीर्थेश महान ॥
स्वयं तैरते भव समुंद्र को तथा तिराते भव्यों को ।
इसीलिए तीर्थंकर कहलाते बोधित करते जीवों को ॥
समवशरण रचना होती है दिव्य ध्वनि खिरती तत्काल ।
वही दिव्यध्वनि जिनवाणी माँ कहलाती है परम विशाल ॥
तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि सुन उठती उर में ज्ञान हिलोर ।
प्रतिदिन चार समय सुन होता अंतर्मन आनंद विभोर ॥
मोक्षमार्ग भी लगता जैसे आया हो अत्यंत निकट ।
मानों कर्म श्रृंखला सारी हुई आज स्वयमेव विघट ॥
श्रुतस्कंध पावन विधान करने का भाव हुआ उत्पन्न ।
जिन श्रुत ज्ञान हृदय धारुँगा नहीं ज्ञान से रहुँ विपन्न ॥
दृढ़ चरित्र शक्ति हो उर में नहीं भाव हो प्रभु अवसन्न ।
आलोचना तथा प्रायश्चित सम्यक् हों न कभी अवच्छन्न॥
दिव्य ध्वनि श्रुत ज्ञान प्राप्त कर मैं सदैव ही रहुँ प्रसन्न ।
जिन ध्वनि की झंकार हृदय में झंकृत हो प्रभु छनन छन्न ॥
दिव्य ध्वनि श्रुत ज्ञान रुप की पूजन का जागा है भाव ।
इसका फल मैं यही चाहता प्राप्त करुँ निज शुद्ध स्वभाव ॥

स्थापना

(गीतिका)

श्रुतस्कंध विधान में श्रुत ज्ञान का वर्णन महान ।
भाग्य से इस काल में भी अल्प है यह विद्यमान ॥
द्वादशांग सु पूर्व चौदह आदि की कथनी प्रसिद्ध ।
भाव हृदयंगम अगर हो तो स्वतः हो पूर्ण सिद्ध ॥

तत्त्व का अभ्यास ही कलि काल में करणीय है।
शेष सब कुछ हेय है बस यही आचरणीय है॥

(दोहा)

जिनवाणी को नमन कर, करुँ तत्त्व का ज्ञान।
दिव्य ध्वनि उर झेलकर, करुँ आत्म कल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञान अत्र अवतर-अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञान अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्।

(राधिका)

पी कर्म चेतना जल प्रतिफल दुख पाया।
जन्मादि रोग का अंत न अब तक आया॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी।
समभावों की सरिता उर में लहरायी॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय जन्म-जरा, मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कर्म चेतना चन्दन भव दुःखदायी।
शुभ अशुभ विभाव न रंच कभी सुखदायी॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी।
समभावों की सरिता उर में लहरायी॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय संसारतापविनाशनायं चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

जड़कर्म चेतना के अक्षत ही भाये।
अक्षय पद के सन्मार्ग न कभी सुहाये॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी।
समभावों की सरिता उर में लहरायी॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कर्म चेतना पुष्प महादुखदाता।
कामाग्नि नाश बिन जीव नहीं सुख पाता॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी।
समभावों की सरिता उर में लहरायी॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु कर्मचेतना लेश नहीं सुखकारी ।
उदाराग्नि सदैव प्रबल अनंत दुखकारी ॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी ।
समभावों की सरिता उर में लहरायी ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जड़दीप कर्मचेतना मोहमय चंचल ।
क्रोधाग्नि आत्मघाती अनादि से पलपल ॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी ।
समभावों की सरिता उर में लहरायी ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय मोहन्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह कर्म चेतना धूप महा दुर्गन्धित ।
दश धर्मो की ही धूप महान सुगंधित ॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी ।
समभावों की सरिता उर में लहरायी ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

चेतना कर्मफल प्रतिदिन बंध बढांती ।
दुखमय चारों गतियों में सदा भ्रमाती ॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी ।
समभावों की सरिता उर में लहरायी ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

फल कर्मचेतना सुरुचि जीव की दुश्मन ।
कैसे अनर्घ्य पद हो जब तक है बंधन ॥
दिव्य ध्वनि की झंकार हृदय को भायी ।
समभावों की सरिता उर में लहरायी ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर-दिव्यध्वनि-सम्पन्न-परमश्रुतज्ञानाय अनर्घ्यपदप्राप्त्ये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वीरछंद)

दिव्य ध्वनि सम्पूर्ण झेलकर गणधर रच देते है सार ।
अंग तथा परिकर्म चूलिका पूर्व प्रकीर्णक भेद अपार ॥

द्वादश अंगपूर्व चौदह सब वर्णन करुँ चलुँ निज ओर ।
पुष्पांजलि अर्पित करता हूँ भक्तिभाव से हुआ विभोर ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावलि

(वीरछंद)

आचारांग रु सूत्र कृतांग रु स्थानांग रु समवायाँग ।
अरु व्याख्या प्रज्ञप्ति सुधर्म कथांग रु उपासकाध्ययनांग ।।
अन्तः कृतदशांग अनुत्तर अंग प्रश्नव्याकरण महान ।
विपाकांग अरु दृष्टिवाद ये अंग प्रविष्ट सुद्वादश अंग ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सोरठा)

पहिला आचारांग, मुनियों के आचरण का ।
समिति गुप्तिव्रत शुद्धि, का इसमें वर्णन महा ।।
सहस अठारह जान, इसके पद हैं ज्ञानमय ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ ।।१।।

ॐ ह्रीं श्री अठारह-हजारपदभूषित-प्रथम-आचारांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दूजा सूत्र कृतांग, ज्ञान विनय का कथन है ।
क्या है कल्प्य अकल्प्य, धर्मरुप व्यवहार का ।।
पद छत्तीस सहस्त्र, सूत्र कृतांग महान के ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ ।।२।।

ॐ ह्रीं श्री छत्तीस-हजारपदभूषित-द्वितीयसूत्रकृतांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीजा स्थानांग, देखशोध थलपर गमन ।
एक एक दो रुप, सबके अर्थ महान है ।।
पद ब्यालीस सहस्त्र, अर्थ समझिये भाव से।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री ब्यालीस-हजारपदभूषित-तृतीय-स्थानांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौथा समवायांग, द्रव्य क्षेत्र अरु भाव का ।
धर्माधर्माकाश, जीव असंख्य प्रदेशमय ।।
पद समवाय सुजान, एक लाख चौंसठ सहस ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री एक लाख चौसठ-हजारपदभूषित-चतुर्थ-समवायांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग पंचम है विज्ञानमय ।
साठ सहस्त्र है प्रश्न, जीवादिक उत्तर सहित ।।
पद इसके दो लाख, अट्ठाइस सहस्त्रयुक्त ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री दो लाख अट्ठाइस-हजारपदभूषित-पंचम-व्याख्याप्रज्ञप्ति-अंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञातृ धर्मकथांग, षष्टम अंग महान है ।
धर्म कथाएँ भव्य, बोधि प्राप्ति के हेतु हैं ।।
पाँच लाख पदयुक्त , छप्पन सहस प्रसिद्ध हैं ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री पाँच लाख छप्पन-हजारपदभूषित-ज्ञातृधर्मकथांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उपासकाध्ययनांग, सप्तम अंग सुश्रेष्ठ है ।
श्रावक धर्म विशेष, की है परम विवेचना ।।
पद हैं ग्यारह लाख, सत्तर सहस्त्र सुजानिये ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ ।।।७।।

ॐ ह्रीं श्री ग्यारह लाख सत्तर-हजारपदभूषित-सप्तम-उपासकाध्ययनांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अन्तःकृत दशांग, अष्टम में उपसर्ग जय ।
प्रति तीर्थंकर काल, दस दस अन्तःकेवली ।।
पद तेईस सुलाख, अट्ठाईस सहस्त्र हैं ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री तेईस लाख अट्ठाइस-हजारपदभूषित-अष्टम-अन्तकृतदशांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नवा अनुत्तरांग, प्रति तीर्थंकर काल में ।
दस-दस मुनि उपसर्ग, जीत अनुत्तर में गए ।।
पद बानवे सुलाख, चव्वालीस सहस्त्र हैं ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ ।।९।।

ॐ ह्रीं श्री बानवे लाख चव्वालीस-हजारपदभूषित-नवम-अनुत्तरांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रश्न व्याकरण अंग, दसवां प्रश्नोत्तर सहित ।
आक्षेप-विक्षेप, कथन व्याकरण आदि का ।।
पद तेरानवे लाख, सोलह सहस प्रधान हैं ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ।।१०।।

ॐ ह्रीं श्री तेरानवें लाख सोलह-हजारपदभूषित-दशम-प्रश्न-व्याकरणांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

यह विपाकसूत्रांग, एकादशम्, प्रसिद्ध है ।
पुण्य पाप फल आदि, का वर्णन सुविचारमय ।।

पद हैं एक करोड़ लाख चुरासी जानिये ।
चढ़ा अर्घ्य वसु द्रव्य, भाव सहित पूजन करुँ ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री एक करोड़ चौरासी लाख-पदभूषित-एकादशम-विपाकसूत्रांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बारहवाँ दृष्टिवाद, मिथ्यातम नाशक सहज ।
तीन शतक त्रय साठ मत सबका परिहार है ॥
एक शतक वसुकोटि, अढ़सठ लाख मिलाइये ।
छप्पन सहस सुपांच, भाव सहित पूजन करुँ ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री एक सौ आठ करोड़ अढ़सठ लाख छप्पन हजार पाँच पदभूषित द्वादशम-दृष्टिवादांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(वीरछंद)

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

ये ही द्वादश अंग ज्ञानमय, श्रुतकेवली हृदय में धार ।
मैं तो केवल अर्घ्य चढाऊँ, वे हो जाते भव के पार ॥
इकशत बारह कोटिलाख तेरासी सहज अट्ठावन पाँच ।
इनका भाव ज्ञान करने से क्षय हो जाती भव की आंच ॥

दृष्टिवाद के पाँच भेद

(वीरछंद)

दृष्टिवाद के भेद पाँच है, पहिला है परिकर्म महान ।
दूजा सूत्र तृतीय अनुयोग चतुर्थम भेद पूर्वगत जान ॥
पंचम भेद चूलिका जानो जय जय गणधर का श्रुत ज्ञान ।
द्वादशांग की अनुपम महिमा करता है सबका कल्याण ॥

(दोहा)

दृष्टिवाद का भेद है, यह पहिला परिकर्म ।
पाँचभेद वर्णन करुँ, पाऊँ उत्तम धर्म ॥
चन्द्र प्रज्ञप्ति सूर्य प्रज्ञप्ति जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति महान ।
द्वीप समूह प्रज्ञप्ति व्याख्या प्रज्ञप्ति परिकर्म प्रधान ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

भेद चंद्रप्रज्ञप्ति में, चंद्र आयु परिवार ।
ऋद्धि बिम्ब ऊँचाई गति, आदि कथन का सार ॥
पद छत्तीस सुलाखयुत, पाँच सहस्त्र महान ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से पाऊँ सम्यक् ज्ञान ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री छत्तीस लाख पाँच हजार-पदविभूषित-प्रथम-चन्द्रप्रज्ञप्तिपरिकर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

भेद सूर्य प्रज्ञप्ति में, आयु भोग उपभोग ।
ऋद्धि बिम्ब ऊँचाई गति, रवि परिवार सुयोग ॥
पाँच लाख शुभ युक्त पद, तीन सहस्त्र प्रमाण ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से पाऊँ सम्यक् ज्ञान ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री पाँच लाख तीन हजार-पदविभूषित-द्वितीय-सूर्यप्रज्ञप्तिपरिकर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति में, द्रह सरि नर तिर्यंच ।
भोगभुमि अरुकर्मभु, पर्वत आदि प्रपंच ॥
तीन लाख पच्चीस सहस्त्र, पद में है व्याख्यान ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से पाऊँ सम्यक् ज्ञान ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री तीन लाख पच्चीस हजार-पदविभूषित-तृतीय-जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिपरिकर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वीप समुंद्र प्रज्ञप्ति में सागर द्वीप प्रमाण ।
नानाभाँति पदार्थ का, कथन पूर्ण लो जान ॥
पद शुभ बावन लाख, है सहस्त्र छत्तीस प्रमाण ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से पाऊँ सम्यक् ज्ञान ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री बावन लाख छत्तीस हजार-पदविभूषित-चतुर्थ-द्वीपसमुंद्रप्रज्ञप्तिपरिकर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं व्याख्या प्रज्ञप्ति में धर्म-अधर्माकाश ।
भव्य अभव्य सुजीव का, कथन काल अविनाश ॥
पद चौरासी लाख युत, सहस्त्र छत्तीस महान ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से पाऊँ सम्यक् ज्ञान ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री चौरासी लाख छत्तीस हजार-पदविभूषित-पंचम-व्याख्या-प्रज्ञप्तिपरिकर्माय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये पाँचों परिकर्म के, भेद प्रसिद्ध महान ।
ज्ञान प्राप्ति के हेतु हैं, पद संख्या लो जान ॥

कुल पद एक करोड़ अरु, लाख इक्यासी सार ।
पाँच सहस्त्र मिलाइये, जिन आगम अनुसार ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री एक करोड़ ब्यालीस लाख पाँच हजार-पदविभूषित-पंचपरिकर्माय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सूत्र अधिकार

द्वितीय सूत्र अधिकार में, जीव अबंधक मान ।
अपलेपक कर्ता नहीं, तथा अभोक्ता जान ।
त्रयशत त्रेसठ मतों का, पूर्व पक्ष पहिचान ।
द्रव्य तथा पर्याय का पूरा कीजे ज्ञान ।.
पद अट्ठासी लाख हैं, आगम में व्याख्यान ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से, पाऊँ सम्यक् ज्ञान ॥

ॐ ह्रीं श्री अट्ठासी लाख-पदविभूषित-द्वितीय-सूत्र-अधिकाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीजे प्रथमानुयोग से, पुण्य कथा का ज्ञान ।
जो भी त्रेसठ शलाका, आदि हुए लो जान ॥
पद तो पाँच सहस्त्र है, पर है महिमावान ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भाव से, पाऊँ सम्यक् ज्ञान ॥

ॐ ह्रीं श्री पाँच सहस्त्र-पदविभूषित-तृतीय-प्रथमानुयोगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

चौथा भेद सूपूर्वगत चौदह भेद प्रसिद्ध ।
जो भी इनको जानते, हो जाते है सिद्ध ॥

(वीरछंद)

उत्पाद पूर्व अग्रायणी पूर्व वीर्यवाद अस्ति-नास्ति प्रवाद ।
ज्ञान प्रवाद रु सत्य प्रवाद सुआत्म प्रवाद सुकर्म प्रवाद ॥
प्रत्याख्यान विद्यानुवाद कल्याण प्रवाद सुप्राणावाय ।
किया विशाल लोक बिन्दु चौदह पूरब हैं ज्ञान प्रदाय ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सोरठा)

प्रथम भेद उत्पाद, पूर्व अनुठा जानिये ।
पुद्गल जीवोत्पाद, स्वरुपादि का कथन है ॥
जान वस्तुगत दस, दो सौ प्राभृत पूजिये ।
पद हैं एक करोड़ स्वकल्याण ही कीजिए ॥

जिनवाणी को जान, भक्ति सहित करिये नमन ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री एक करोड़ पदविभूषित प्रथम उत्पादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अग्रायणी सुपूर्व, दूजाभेद सुजानिये ।
स्वसमय का निर्देश, क्रियावाद की प्रक्रिया ॥
जान चतुर्दश वस्तु, दो सौ अस्सी प्राभृतम् ।
लाख छ्यानवे पद, महिमामयी विशाल हैं ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, निजस्वभाव दर्शन करुँ ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ २॥

ॐ ह्रीं श्री छियानवे लाख-पदविभूषित-द्वितीय अग्रायणीपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीजा वीर्यानुवाद, छद्मस्थों का कथन हैं ।
आत्मवीर्य परवीर्य, शक्ति केवली की महा ॥
जान वस्तुगत आठ, प्राभृत इकशतवसु नमूँ ।
सत्तर लाख सुपद, इन्द्रादिक की ऋद्धियुत ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, आत्मशक्ति की प्राप्तिहित ।
गाउँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री सत्तर लाख-पदविभूषित-तृतीय वीर्यानुवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अस्तिनास्ति प्रवाद, चौथा, नय के भेदयुक्त ।
अस्तिनास्ति पर्याय अरु पंचास्तिकाय का ॥
वस्तु अठारह जान त्रयशत अस्सी प्राभृतम ।
पद है साठ सुलाख सर्व विवेचन पूर्ण है ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, निजस्वरुप दर्शन करुँ ।
गाउँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री साठ लाख-पदविभूषित-चतुर्थ अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचमज्ञान प्रवाद पाँचों ज्ञानों का कथन ।
इन्द्रिय आदि विभाग, सर्वज्ञान के भेदयुत ॥

वस्तु बारह जान, दौ सौ चालीन प्राभृतम् ।
पद हैं एक करोड़ मात्र एक की कमी है ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज निजस्वरुप दर्शन करुँ ।
गाउँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री निन्यानबे लाख-निन्यानबे हजार नौ सो निन्यानबे पदविभूषित-पंचम ज्ञानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्टम सत्य प्रवाद, सत्य असत्य स्वरुपयुत ।
दस प्रकार का सत्य, वचनगुप्ति आदिक कथन ॥
वस्तु द्वादशजान, चालीस प्राभृत वन्दनम् ।
पद कुल एक करोड़ अरु छह में विस्तार है ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, आत्मशक्ति की प्राप्तिहित ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्री एक करोड़ छह पदविभूषित-षष्टम सत्यप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तम आत्मप्रवाद, आत्मद्रव्य का ही कथन ।
षटकायक सब जीव, अस्ति नास्ति के भंग बहु ॥
सोलह वस्तु सुजान, त्रयशत बीस सुप्राभृतम् ।
पद छब्बीस करोड़ सर्व विवेचन की कला ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, पूर्णज्ञान की प्राप्तिहित ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्री छब्बीस करोड़ पदविभूषित-सप्तम आत्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टम कर्म प्रवाद, कर्म बंध सत्ता उदय ।
थिति उदीरणाशक्ति, नाश प्रक्रिया जानिये ॥
बीस वस्तुगत जान, चार शतक प्राभृत नमूँ ।
पद हैं एक करोड़ अस्सी लाख प्रसिद्ध बहु ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज,आत्मतत्त्व दर्शन करुँ ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री एक करोड़ अस्सी लाख पदविभूषित- अष्टमकर्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

नवमा प्रत्याख्यान पापों के परिहार मय ।
तपव्रत नियम स्वरुप प्रतिक्रमण आराधना ॥
तीन वस्तुगत जान, छह सौ प्राभृत पूजिये ।
पद चौरासी लाख, पर द्रव्यों के त्यागयुत ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, ज्ञान सूर्य की ज्योतिहित ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ ९॥

ॐ ह्रीं श्री चौरासी लाख पदविभूषित-नवम प्रत्याख्यानपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दशम् विद्यानुवाद, रज्जु राशि क्षेत्र सब ।
मंत्र तंत्र समुद्घात सिद्धि विविध विद्यामयी ॥
वस्तु सुपंद्रह जान तीन शतक प्राभृत नमूँ ।
एक कोटि दस लाख पद, वसु महानिमित्तयुत ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, जिन श्रुत महिमा जानकर ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ १०॥

ॐ ह्रीं श्री एक करोड़ दस लाख पदविभूषित-दशम विद्यानुवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ग्यारह कल्याणवाद सूर्य चंद्र नक्षत्र सब ।
त्रेसठ पुरुष, चरित्र प्रभु के पंच कल्याणयुत ॥
जान वस्तुगत दश दो सौ प्राभृत पूजिये ।
पद छब्बीस करोड़ वक्र गति, गति फल सहित ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, निज वैभव दर्शन करुँ ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ ११॥

ॐ ह्रीं श्री छब्बीस करोड़ पदविभूषित-एकादशम कल्याणवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्राणावाद महान बारहवाँ तन स्वास्थ्यहित ।
अष्टांग आयुर्वेद प्राणायाम सुभेदयुत ॥
जान वस्तुगत दस दो सौ प्राभृत पूजिये ।
तेरह कोटि सुपद विषविद्या आयुष कथन ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, रत्नत्रय की प्राप्तिहित ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ १२॥

ॐ ह्रीं श्री तेरह करोड़ पदविभूषित- द्वादशम प्राणावायपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तेरह क्रिया विशाल काव्य शिल्प लेखन विद्या ।
कलाबहत्तर नर चौंसठ नारी जाति की ॥
जान वस्तुगत दस दो सौ प्राभृत पूजिये ।
नव करोड़ पद जान काव्य कला का है कथन ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, ध्रुवज्ञायक की प्राप्तिहित ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ १३॥

ॐ ह्रीं श्री नौ करोड़ पदविभूषित-त्रयोदशम क्रियाविशालपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

लोक बिन्दु शुभसार चौदहवाँ व्यवहार वसु ।
राशि गणित परिकर्म श्रुत सम्पत्ति त्रिलोकगत ॥
जान वस्तुगत दस दो सौ प्राभृत पूजिये
पद हैं बारह कोटि लाख पचास सुबीजयुत ॥
अर्घ्य चढ़ाऊँ आज, निजानंद की प्राप्तिहित ।
गाऊँ मंगलगान, जय जय दिव्यध्वनि परम ॥ १३॥

ॐ ह्रीं श्री बारह करोड़ पचास लाख पदविभूषित-चतुर्दशम लोकबिन्दुसारपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वस्तुगत-प्राभृत

(दोहा)

एकशत अड़सठ वस्तुगत प्राभृत तीन हजार ।
छह सौ अड़सठ जानकर करिये तत्त्व विचार ॥
लाख पचास रु पाँच पद पंचानवे करोड़ ।
चौदह पूर्व सुअर्घ्य दूँ भक्तिभाव उर जोड़ ॥

ॐ ह्रीं श्री सर्व एक सौ अड़सठ वस्तुगत तीन हजार छह सौ अड़सठ प्राभृतमय पंचानवे करोड़ पचास लाख पाँच पदभूषित चतुर्दशपूर्वाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचचूलिका

(दोहा)

पंचम भेद सुचूलिका दृष्टिवाद का भेद ।
पाँच भेद पहचानिये मैं हूँ पूर्ण अभेद ॥

(ताटंक)

जलगत थलगत मायागत अरु रुपगता आकाशगता ।
यह पाँचों ही भेद चूलिका दृष्टिवाद के भेद यथा ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(ताटंक)

प्रथम जलगता जल में चलना जलस्तंभन तप अतिशय ।
मंत्र तंत्र आदिक विवेचना की इसमें कथनी निश्चय ॥
पद दो कोटि लाख नौ उन्यासी सहस्त्र दो शतक सुपाँच ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्तिभाव से नाश करुँ भव दुख की आंच ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री दो करोड़ नौ लाख उन्यासी हजार दो सौ पाँच पदभूषित प्रथमजलगता चूलिकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीय थलगता थल के भीतर गमन शुभाशुभ का निर्णय ।
मंत्र तंत्र तप वस्तुकला विद्याओं की कथनी निश्चय ॥
पद दो कोटि लाख नौ उन्नासी सहस्त्र दो शतक सुपाँच ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्तिभाव से नाश करुँ भव दुख की आंच ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री दो करोड़ नौ लाख उन्यासी हजार दो सौ पाँच पदभूषित द्वितीयथलगता चूलिकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मायागता तृतीय में तो है इन्द्र जाल विद्या वर्णन ।
मंत्र तंत्र अरु तपाश्चर्य का इसमें है सम्पूर्ण कथन ॥
पद दो कोटि लाख नौ उन्नासी सहस्त्र दो शतक सुपाँच ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्तिभाव से नाश करुँ भव दुख की आंच ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री दो करोड़ नौ लाख उन्यासी हजार दो सौ पाँच पदभूषित तृतीयमायागता चूलिकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रुपगता में सिंह अश्व मृग आदिरुप परिणमन सुनय ।
चित्र काष्ठ लेपादि मंत्र तंत्रों का है वर्णन निश्चय ॥
पद दो कोटि लाख नौ उन्नासी सहस्त्र दो शतक सुपाँच ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्तिभाव से नाश करुँ भव दुख की आंच ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री दो करोड़ नौ लाख उन्यासी हजार दो सौ पाँच पदभूषित चतुर्थरुपगता चूलिकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है आकाशगता में वर्णन नभ में थल समागमन अभय ।
मंत्र तंत्र अरु तपाश्चर्य का अद्भुत वर्णन है निश्चय ॥

पद दो कोटि लाख नौ उन्नासी सहस्त्र दो शतक सुपाँच ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्तिभाव से नाश करुँ भव दुख की आंच ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री दो करोड़ नौ लाख उन्यासी हजार दो सौ पाँच पदभूषित पंचमआकाशगता चूलिकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचचूलिकाओं की कुल पद संख्या कहते मुनिवर ईश ।
दस करोड़ लाख अड़तालीस सहस्त्र छयानवे अरु पच्चीस ॥
सभी चूलिकाएँ मन भावन बतलाती आगम का साँच ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्तिभाव से नाश करुँ भव दुख की आंच ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री दस करोड़ अड़तालीस लाख छियानवे हजार पच्चीस पदभूषित पंचचूलिकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दृष्टिवाद के पाँचो भेदों की कुल पद संख्या लो जान ।
एक अरब वसु कोटि साठ हैं लाख सहस्त्र तीस प्रमाण ॥
पूर्ण अर्घ्य अर्पित करता हूँ श्रुतज्ञानी बन जाने को ।
भाव अर्घ्य हृदयंगत करके ध्रुव ज्ञायक पद पाने को ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री एक अरब आठ करोड़ साठ लाख तीस हजार पदभूषित पंचभेद परि कर्मसूत्र-प्रथमानुयोगपूर्वगत-चूलिकासहितदृष्टिवादाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अग्रायणी पूर्व के पाँच भेद

(वीरछन्द)

अग्रायणी पूर्व के जानो भेद पाँच है मुख्य प्रधान ।
अनुपूर्वी नाम प्रमाण वक्तव्य अर्थाधिकार लो जान ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(ताटंक)

अनुपूर्वी तीन भेद हैं पहिला पूर्वानुपूर्वी ।
दूजा पश्चतानुपूर्वी त्रय यथातथानुपूर्वी ॥
लोम विलोम तथा प्रतिलोम सुक्रम अक्रम कथनी व्यवहार ।
भेद तथा प्रतिभेद बहुत हैं सब कुछ ज्ञान वृद्धि आधार ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथम आनुपूर्वी त्रयभेदाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जिसके द्वारा अर्थ ज्ञान हो वह ही कहलाता हैं नाम ।
द्रव्य निमित्तिक क्रियानिमित्तिक आदि जाति वाचक हैं नाम ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री द्वितीय अर्थभेदाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

हैं प्रमाण के भेद बहुत से लौकिक लोकोत्तर बहुजान ।
स्वपर प्रकाशक भी कहलाता प्रमेय प्रमाता आदि प्रमाण ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री तृतीय प्रमाणभेदाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वक्तव्यता के भेद अनेकों स्याद्वाद से लो पहचान ।
शब्द अल्प हैं अर्थ अनंत वस्तु कथंचित् वक्तव्य जान ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्थ वक्तव्यताभेदाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्थाधिकार चतुर्दश भेद प्रकीर्णक

जो निश्चय होता है असको सदा कहा जाता है अर्थ ।
उसका जो अधिकार वहीं है विविध भाँति का कथन समर्थ ॥
अर्थाधिकार के भेद चतुर्दश सामायिक संस्तवन महान ।
तथा वंदना प्रतिक्रमण वैनयिक और कृतिकर्म प्रधान ॥
दश वैकालिक अत्तराध्ययन कल्प्याकल्प्य कल्प्य व्यवहार
महाकल्प्य अरु पुण्डरीक महापुण्डरीक निशिधका सार ॥
यहीं प्रकीर्णक चौदह कहलाते इनका स्वरुप लो जान ।
पंचमहाव्रतधारी मुनियों की होती इनसे पहिचान ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्
(ताटंक)

पहिला सामायिक समतामय संक्लेश निवृत्ति सुविधि विचार ।
सावद्य योग का सकल त्याग अरु काल भाव सब कथन सार ॥
हैं नाम थापना द्रव्यक्षेत्र उपसर्ग आदि में साम्यधरण ।
मन में ममत्व का अंश नहीं सम्यक् दर्शन सम्पूर्ण ग्रहण ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथम सामायिकप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुजा संस्तवन चतुर्विंशतिजिन वन्दन सविधि संस्थान नाम ।
प्रभु के अतिशय कल्याण पंच सबका इसमें वर्णन ललाम ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री द्वितीय संस्तवनप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तीजा वन्दना एक तीर्थंकर का अवलंबन शुभसंस्तुति ।
जिन चैत्यालय का कथन श्रेष्ठ वंदन से होती शुभ परिणति ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री तृतीय वन्दनाप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चौथा प्रतिक्रमण प्रमादरहित है सप्त भेद इसके महान ।
दैवसिक रात्रिक पाक्षिक चातुर्मासिक सांवत्सरिक जान ॥४॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्थ प्रतिक्रमणप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचम वैनयिक प्रकीर्णक में हैं विनयभाव के पंचभेद ।
दर्शन सुज्ञान चारित्र सुतप उपचार विनय निज की अभेद ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री पंचम वैनयिकप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

षष्टम दश वैकालिक में मुनि आचार आदि विधि गोचर की ।
सम्यक् हो बाह्य क्रिया सारी हो निरतिचार विधि यतिवरकी ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री षष्टम दशवैकालिकप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सप्तम कृतिकर्म प्रकीर्णक विधि पाँचों परमेष्ठी की पूजन ।
द्वादश आवर्त शिरौनतियुत प्रभु की प्रदक्षिणा आदि कथन ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तमकृतिकर्मप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टम उत्तराध्ययन में है बाईस परीषह कष्ट सहन ।
परकृत उपसर्ग जयी बनने की कला तथा फल का वर्णन ॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टम उत्तराध्ययनप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है नवम कल्प्य व्यवहार प्रकीर्णक योग्य आचरण योग्य क्रिया ।
दोषों के प्रायश्चित की विधि प्रख्यात साधु की सर्व क्रिया ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री नवम कल्प्यव्यवहारप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दसवाँ कल्प्याकल्प्य व्यवहार प्रकीर्णक द्रव्य क्षेत्र भव काल भाव ।
अनुसार योग्य अथवा अयोग्य मुनिराज आचरण शुद्धभाव ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री दशम कल्पाकल्पव्यवहारप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ग्यारहवाँ महाकल्प्य जानो संहनन शक्ति मुनिवर सुयोग्य ।
है द्रव्य क्षेत्र आदिक वर्णन सर्वथा भाव तजकर अयोग्य ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री एकादशम महाकल्प्यप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बारहवाँ पुण्डरीक भवनालय व्यंतर ज्योतिष कल्पाचार ।
देवों की उत्पत्ति का कारण व्रतदान आदि आचार ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री द्वादशम पुण्डरीकप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तेरहवाँ महापुण्डरीक इन्द्रादि प्रतीन्द्रों की उत्पत्ति ।
कारण तपध्यान आचरण का वर्णन है उत्तम व्रत परिणति ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री त्रयोदशम महापुण्डरीकप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

है भव्य निषिधिका चौदहवाँ प्रायश्चित तथा प्रमाद कथन ।
सबके गुण दोषों का वर्णन होता न कभी फिर भावमरण ॥ १४॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्दशम निषिधिकाप्रकीर्णकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अक्षर संख्या

(वीरछंद)

अंग बाह्य के चौदह भेदों की अक्षर संख्या लौ जान ।
आठ कोटि इक लाख वसु सहस एक शतक पचहत्तर मान ॥
पच्चीस लाख सहस्त्र तीन अरु तीन शतक अस्सी श्लोक ।
शेष रह गये पन्द्रह अक्षर अंग बाह्य के सहज विलोक ॥

ॐ ह्रीं श्री आठ करोड़ एक लाख आठ हजार एक सौ पचहत्तर अक्षरयुक्त चौदह भेद अंक अर्थात पच्चीस लाख तीन हजार तीन सौ अस्सी श्लोक पंद्रह अक्षर रुप अंग बाह्य श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्थलिगंज के २० भेद

भेद अर्थ लिंगज श्रुत के हैं उत्तम बीस महान प्रधान ।
है पर्याय, पर्यायसमास, अक्षर अक्षर समास है जान॥
पद अरु पद समास संघात, संघात समास सर्व को जान ।
प्रतिपत्ति, पतिपत्तिसमास तथा अनुयोग द्वार पहिचान ॥
अनुयोगद्वार समास तथा प्राभृत प्राभृत को भी लो जान ।
प्राभृत प्राभृत समास प्राभृत अरु प्राभृत समास पहिचान ॥

वस्तुवस्तु समास पूर्व अरु पूर्व समास बीस हैं जान ।
जिन श्रुत आगम के अगगिनती भेद असंख्य अनंत प्रमाण ॥
इसमें आवरणीय जोड़ दो तो ये श्रुतावरण के भेद ।
आगमचक्षु आवरण क्षयकर हो जाता है स्वयं अभेद ॥
ॐ ह्रीं श्री अर्थलिंगजबीसभेदसहितश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्रव्यश्रुत-भावश्रुत

जो शब्दों से होता है उत्पन्न ज्ञान वह है श्रुतज्ञान ।
एक द्रव्यश्रुत एक भावश्रुत दोनों ही श्रुतज्ञान प्रमाण ॥
पुद्गल द्रव्य रुप अक्षर का ज्ञान द्रव्यश्रुत का है ज्ञान ।
सुनने से उत्पन्न हुई पर्याय भावश्रुत ज्ञान महान ॥
परमागम तो हुआ द्रव्यश्रुत हुआ भावश्रुत निज अनुभव ।
मोक्षमार्ग में यही कार्यकर है अनुपम अपूर्व शिवभव ॥
मतिश्रुत ज्ञान सदा परोक्ष हैं केवलज्ञान सकल प्रत्यक्ष ।
एकदेश प्रत्यक्ष अवधि अरु मनपर्यय में मुनिवरदक्ष ॥
ॐ ह्रीं श्री द्रव्यश्रुत-भावश्रुतगर्भितश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

३ अक्षर भेद

लब्ध्यक्षर निवृत्यक्षर संस्थानक्षर हैं तीन विभाग ।
लब्ध्यक्षर श्रुत ज्ञान प्रमाण सुकेवल का अनंतवाँ भाग ॥
निरावरण है यह निगोदिया जीवों तक को होता हैं ।
अक्षर का अनंतवाँ है यह नित्योद्घाटित रहता है ॥
ॐ ह्रीं श्री त्रयअक्षरभेदप्ररुपकश्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पद भेद तीन

पद है तीन प्रकार अर्थ पद अरु प्रमाण पद मध्यम पद ।
जिन आगम में जिसका है व्यवहार वही है मध्यम पद ॥
अक्षर एक या कि दो अथवा तीन चार पाँच छह सात ।
जिसमें हो वह कहलाता है नाम अर्थ पद है विख्यात ॥
अक्षर रुप आठ हों जिसमें वह प्रमाण पद कहलाता ।
किन्तु नहीं इन दोनों का व्यवहार जिनागम में आता ॥

मध्यम पद की अक्षर संख्या सोलह अरब कोटि चौंतीस ।
लाख तिरासी सात सहस्त्र वसु शतक अठासी इक पद शीष ॥

ॐ ह्रीं श्री सोलह अरब चौग्तीस करोड़ तिरासी लाख सात हजार आठ सौ अठासी अक्षर पदभूषित एक मध्यमपदाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मूल एवं संयोगी अक्षर

प्राकृत भाषा चौंसठ अक्षर इनके संयोगी लो जान ।
इकवसु चउ चउ षट सत चउ चउ शून्य सात त्रय सात महान ॥
शून्य तथा नौ पाँच पाँच अरु इक छह एक पाँच लो जान ।
ये कुल बीस प्रमाण अंक है धन्य धन्य आगम श्रुतज्ञान ॥

ॐ ह्रीं श्री चौसंठ मूल अक्षर एवं एक सौ चौरासी लाख संख छियालीस पदम चौहत्तर नील चालीस खरब तिहत्तर अरब सत्तर कोटि पंचानवे लक्ष इक्यावन सहस्त्र छह सौ पंद्रह संयोगी अक्षरभूषित श्रुतज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रुतज्ञान के पर्यायवाची नाम-४१

(सोरठा)

पर्यायवाची नाम, जिन श्रुत ज्ञान महान के ।
प्रवचन, प्रवचनीय, प्रवचनार्थ अरु आत्मा ॥
गतियों में मार्गणता, परम्परालब्धि अनुत्तर ।
प्रवचन संनिकर्ष नयविधि, नयान्तर विधि ॥
भंग विधि विशेष प्रच्छाविधि शुभ नाम है ।
प्रच्छाविधिविशेष, तत्त्व, भूत, भव्य भविष्यत् ॥
अवतथ, अविहत, वेद, न्याय, शुद्ध, सम्यग्दृष्टि ।
हेतुवाद, नयवाद, प्रवरवाद, मार्गवाद हैं ॥
श्रृतवाद, परवाद, लौकिकवाद लोकोत्तरीय ।
अग्रय मार्ग, यथानुमार्ग पूर्व यथानुपूर्व है ॥
पूर्वानुपूर्व प्रसिद्ध सब मिल इकतालीस हैं ।
धन्य धन्य श्रुतज्ञान आत्मज्ञान का हेतु हैं ॥
पर्ययवाची नाम सब भाव सहित वन्दन करुँ ।
अर्घ्य चढ़ाऊँ पूर्ण बार बार वन्दन करुँ ॥

ॐ ह्रीं श्री एकतालीस पर्यायवाची नाम सहित श्रुतज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रुतज्ञान धारा

ऋषभदेव से महावीर तक हुए केवली अनगिनती ।
श्रुत केवलि भी हुए असंख्यों सबकी करता हूँ विनती ॥
तीन केवली बासठ वर्षो में श्री महावीर के बाद ।
गौतम गणधर श्री सुधर्मा जम्बूस्वामी प्रभु अविवाद ॥
ग्यारह अंग पूर्वदशधारी हुए श्रेष्ठ मुनिराज प्रधान ।
श्री विशाख प्रोष्ठिल, क्षत्रिय जय नाग तथा सिद्धार्थ महान ॥
श्री धृतिषेण विजय बुद्धिफल, अरु गंगदेव, सुधर्म महान ।
इकशत तेरासी वर्षो में ग्यारह धर्म प्रचारक जान ॥
दो सौ तीस वर्ष में ग्यारह अंग महाधारी मुनिराज ।
श्री नक्षत्र जयपाल, पाण्डु, ध्रुवसेन कंस, पाँचो ऋषिराज ॥
इकशत अष्टादश वर्षो में आचारांग ज्ञानपति जान ।
श्री सुभद्र यशोभद्र श्री यशोबाहु लोहाचार्य महान॥
अंगपूर्वधारी ऋषियों का फिर हो गया महान वियोग ।
अंश ज्ञान कुछ शेष रहा यह भी था भव्य भाग्य संयोग ।
कुन्दकुन्द धरसेनाचार्य सुपुष्पदंत श्री भूतबली ।
इसके बाद हुए आगम के पाठी बहुमुनि साधुबली ॥
पंचमकाल अंत तक जिन श्रुत आगम ज्ञान शेष रहता ।
मैं सबको वन्दन करता हुँ सबका अभिनन्दन करता ॥

ॐ ह्रीं श्री समस्त केवली-श्रुतकेवली ऋषिमुनिवर श्रुतज्ञानधारकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वर्तमान मुनिराज

(वीरछंद)

वर्तमान में तो ढ़ाई द्वीप में त्रय कम नौ करोड़ मुनिराज ।
भाव द्रव्य संयममय विचरण करते ध्यान लीन ऋषिराज ॥

ॐ ह्रीं श्री ढाई द्वीप संबंधी वर्तमान तीन कम नौ करोड़ मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

मुक्तिकाल एवं मुक्ति संख्या

छह महीना अरु आठ समय में छह सौ आठ मुक्ति पाते ।
ना जायें तो अन्तिम आठ समय में तो निश्चित जाते ॥
प्रथम समय में बत्तीस जाते दुजे जाते अड़तालीस ।
तीजे साठ चतुर्थ बहत्तर पंचम जाते चौरासी ॥
षष्टम में छयानवे मुक्त हो सप्तम में एकशत अरु आठ ।
अष्टम एकशतक वसु जगतें होतें मुक्तिपुरी सम्राट ॥
जो सर्वज्ञ ज्ञान में झलका उसको कहता है श्रुत ज्ञान ।
पर्याय क्रमबद्ध सदा यह दृढ़ निश्चय कर लो मतिमान ॥

ॐ ह्रीं श्री छह महीना आठ समय में छह सौ आठ सिद्धपद प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूर्णार्घ्य

(मत्तसवैया)

दिव्य ध्वनि है श्रुत ज्ञानरुप श्रुत ज्ञान चार अनुयोग रुप ।
इनका स्वाध्याय निरंतर कर लूँ भेदज्ञान पावन अनूप ॥
प्रथमानुयोग में पुण्य पाप फल का वर्णन है कथा सहित ।
करणानुयोग रचनात्रिलोक अरुकर्म प्रकृति की शक्ति अमित ॥
चरणानुयोग में श्रावक अरु मुनियों का कैसा हो चारित्र ।
द्रव्यानुयोग शुद्धात्म तत्त्व का वर्णन करता है परम पवित्र ॥
चारों अनुयोग कार्यकारी श्रुतज्ञान रुप भव दुखहारी ।
जो इन्हें समझता है सम्यक् वह जीव मुक्ति सुख अधिकारी ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग गर्भित
श्रुतज्ञानायपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(सोरठा)

जय जय जय श्रुत ज्ञान जयमाला वर्णन करुँ
पाऊँ सम्यक् ज्ञान यही प्रार्थना है प्रभो ॥

(वीरछंद)

भाते पूर्व भावना षोडश तब होते तीर्थंकर देव ।
प्राप्त अनंतचतुष्टय करते होती दिव्यध्वनि स्वयमेव ॥
खिरती है सर्वांग दिव्यध्वनि अनक्षरी पर अक्षर रुप ।
मेघ गर्जना सम ध्वनि होती सभी समझते निज अनुरुप ॥
सर्व महाभाषा अष्टादश लघु भाषा सात सौ महान ।
अर्द्धमागधी भाषा में जिनवाणी का उपदेश प्रधान ॥
छह छह घड़ी दिव्यध्वनि खिरती चार समय नित मंगलमय ।
गणधर इसे झेल रचते अंतर्मुहूर्त में श्रुत सुखमय ॥
शेष समय में गणधर स्वामी व्याख्या करते हैं सुविशाल ।
भव्यजीव इसको सुनकर शिवपथ पा लेते हैं तत्काल ॥
जितना दिव्य ध्वनि में आता उसका तो अनंतवाँ भाग ।
गणधर ने झेला फिर रच पाते उसका अनंतवाँ भाग ॥
यथाशक्ति कुछ वर्णन करके मुझको हर्ष अपार हुआ ।
परमभाव श्रुत ज्ञान प्राप्त हो तो फिर बेड़ा पार हुआ ।
मंगलमय जिनवाणी माता मुझको मंगलमय कर दो ॥
सम्यक् दर्शन उर में प्रगटे मुझको ज्योतिर्मय कर दो ॥
माँ मुझको आशीर्वाद दो जननी क्षीर न पियुँ कभी ।
आगे भी न किसी माता के आँसू गिरते लखूँ कभी ॥
तत्त्वों का निर्णय करते ही उर में जगे भेद विज्ञान ।
स्वपर विवेक प्राप्त होते ही मुझे प्राप्त हो सम्यक् ज्ञान ॥
फिर सम्यक् चारित्र प्राक्त कर मोक्षमार्ग पर करुँ प्रयाण ।
एक दिवस ऐसा हो माता मैं भी पाऊँ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकर दिव्यध्वनिसम्पन्न समस्तपरमश्रुतज्ञानाय महार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

(ताटंक)

श्री तीर्थंकर दिव्य ध्वनि की पूजन की है पुलकित हो ।
परमभाव श्रुतज्ञान प्राप्ति का अवसर पाऊँ हर्षित हो ॥
श्रुतस्कंध पावन विधान करने का उत्तम फल पाऊँ ।
लौकिक सुख की नहीं कामना पूर्ण अलौकिक सुख पाऊँ ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

शान्ति पाठ

परम शान्ति पाऊँ प्रभो, पाऊँ सम्यक् धर्म ।
रत्नत्रय की भक्ति से, नाशूँ सारे कर्म ॥
सकल जगत में शान्ति हो, सुखी रहें सब जीव ।
षट्कायक के जीव सब, दुखी न होय कदीव ॥
जीव मात्र पर क्षमा रख, पालूँ अपना धर्म ।
शुद्धात्मा का ध्यान धर, पाऊँ निश्चय धर्म ॥
यही भावना है प्रभो, घर-घर मंगल चार ।
पूर्ण शान्ति हो विश्व में, हो सबका अद्धार ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

क्षमापना

(रोला)

हुई ज्ञात अज्ञातभाव से भुलें सारी,
क्षमा करो प्रभु वीतराग जिनवर अविकारी ।
आह्वानन सुस्थापन का प्रभु ज्ञान नहीं है,
सन्निधिकरण क्रिया का भी कुछ भान नहीं है ॥
केवल विनय भक्ति से पूजा तुम्हें जिनेश्वर,
भुल चुक सब क्षमा करो हे प्रभु परमेश्वर ।
पूजन का फल यही चाहता हूँ हे स्वामी,
ध्याकर निज चैतन्यराज होऊँ शिवगामी ॥

(वीरछन्द)

मंगलमय भगवान वीर प्रभु मंगलमय गौतम गणधर ।
मंगलमय श्री कुन्दकुन्द ऋषि मंगल जैनधर्म सुखकर ॥
सर्व मंगलो में मंगल है श्रेष्ठ सर्व कल्याणमयी ।
श्री जिनधर्म प्रधान जगत में जिन शासन हो सर्व जयी ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

समाधि भावना

(कवि शिवरामजी कृत)

दिन-रात मेरे स्वामी, मैं भावना ये भाऊँ ।
देहान्त के समय में, तुमको ना भूल जाऊँ ।।टेक।।
शत्रु अगर कोई हों, संतुष्ट उनको कर दूँ ।
समता का भाव धर कर, सबसे क्षमा कराऊँ ।।१।।
त्यागूँ अहार पानी, औषध विचार अवसर ।
टूटे नियम न कोई, दृढ़ता हृदय में लाऊँ ।।२।।
जागें नहीं कषायें, नहिं वेदना सतावे ।
तुमसे ही लौ लगी हो, दुर्ध्यान को भगाऊँ ।।३।।
आतमस्वरुप अथवा, आराधना विचारुँ ।
अरहन्त सिद्ध साधु, रटना यही लगाऊँ ।।४।।
धर्मात्मा निकट हों, चरचा धरम सुनावें ।
वे सावधान रक्खें, गाफिल न होने पाऊँ ।।५।।
जीने की हो न वांछा, मरने की हो न ख्वाहिश ।
परिवार मित्र जन से, मैं मोह को हटाऊँ ।।६।।
भोगे जो भोग पहले, उनका न होवे सुमरन ।
मैं राज्य-सम्पदा या, पद इंद्र का न चाहूँ ।।७।।
रत्नत्रय का हो पालन, हो अंत में समाधि ।
'शिवराम' प्रार्थना यह, जीवन सफल बनाऊँ ।।८।।

कैसी सुन्दर जिन प्रतिमा...

कैसी सुन्दर जिनप्रतिमा है, कैसा सुन्दर है जिनरूप।
जिसे देखते सहज दीखता, सबसे सुन्दर आत्मस्वरूप॥ टेक॥

नग्न दिगम्बर नहीं आडम्बर, स्वाभाविक है शान्तस्वरूप।
नहीं आयुध नहीं वस्त्राभूषण, नहीं संग नारी दुखरूप॥१॥

बिन शृंगार सहज ही सोहे, त्रिभुवन मांही अतिशयरूप।
कायोत्सर्ग दशा अविकारी, नासादृष्टि आनन्दरूप रूप॥२॥

अर्हत् प्रभु की याद दिलाती, दर्शाती अपना प्रभुरूप।
बिन बोले ही प्रगट कर रही, मुक्तिमार्ग अक्षय सुखरूप॥३॥

स्वर्ग से सुन्दर अनुपम

स्वर्ग से सुन्दर अनुपम है, ये जिनवर का दरबार।
श्रद्धा से जो जीव ध्यावे निश्चित हो जाता भव पार॥
यही श्रद्धान हमारा, नमन हो तुम्हें हमारा।टेक॥

कभी न टूटे श्रद्धा तुम पर भगवान हमारी।
झुक जायेगी जीवन में प्रतिकूलता सारी॥
है विश्वास हमारा एक दिन छूटेगा संसार।
यही श्रद्धान.....॥१॥

निर्वांछक है भगवन, ये आराधना हमारी।
हुई दशा हमारी बस जैसी हुए तुम्हारी॥
रत्नत्रय का मार्ग चलेंगे मुक्तिद्वार।
यही श्रद्धान.....॥२॥

स्याद्वाद वाणी ही, भ्रम का अज्ञान मिटाये।
निज गुण पर्यायें ही, अपना परिवार बताये॥
है विश्वास हमारा एक दिन छूटेगा संसार॥
यही श्रद्धान.....॥३॥

लोकालोक झलकते, कैवल्य ज्ञान है पाया।
फिर शुद्धात्मा ही बस उपादेय बतलाया॥
मानो आज मिला मुझको मिलाये सिद्धालय।
यही श्रद्धान.....॥४॥

आत्म-कीर्तन

(सहजानन्द जी वर्णी कृत)

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम, ज्ञाता-दृष्टा आतमराम ।
मैं वह हूँ जो है भगवान, जो मैं हूँ वह है भगवान ।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यह राग वितान ॥
मम स्वरुप है सिद्ध-समान, अमित शान्ति सुख ज्ञाननिधान ।
किन्तु आश-वश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ॥
सुख-दुख दाता कोई न आन, मोह राग रुष दुख की खान ।
निज को निज पर को पर जान, फिर दुख का नहिं लेश निदान ॥
जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम ।
राग त्याग पहुँचूँ निज धाम, आकुलता का फिर क्या काम ॥
होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम ।
दूर हटो पर-कृत परिणाम, सहजानन्द रहूँ अभिराम ॥

आज हम जिनराज.....

आज हम जिनराज तुम्हारे द्वारे आये,
हाँ जी हाँ! हम आये आये ॥ टेक ॥

पुण्य-उदय से आज तिहारे, दर्शन कर सुख पाये।
देखे देव जगत के सारे, एक नहीं मन भाये ॥१ ॥

जन्म-मरण नित करते, काल अनन्त गमाये।
अब तो स्वामी जन्म-मरण का, दुखड़ा सहा न जाये ॥२ ॥

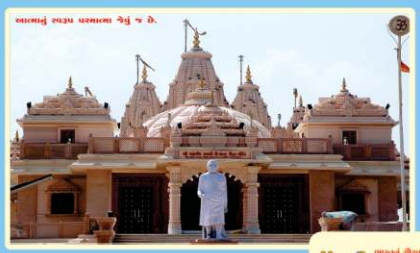
भव-सागर में नाव हमारी, कब से गोता खाये।
तुम ही स्वामी हाथ बढ़ाकर, तारो तो तिर जाये ॥३ ॥

अनुकम्पा हो जाय आपकी, आकुलता मिट जाये।
'पंकज' की प्रभु यही वीनती, चरण-शरण मिल जाये ॥४ ॥

'प्रभु उपकार'

आप मिले मानों मिली, मुक्ति ही साक्षात् ।
नित्य मुक्त शुद्धात्मा, अन्तर हुआ प्रत्यक्ष ॥







"ચૈતન્ય ધામ"





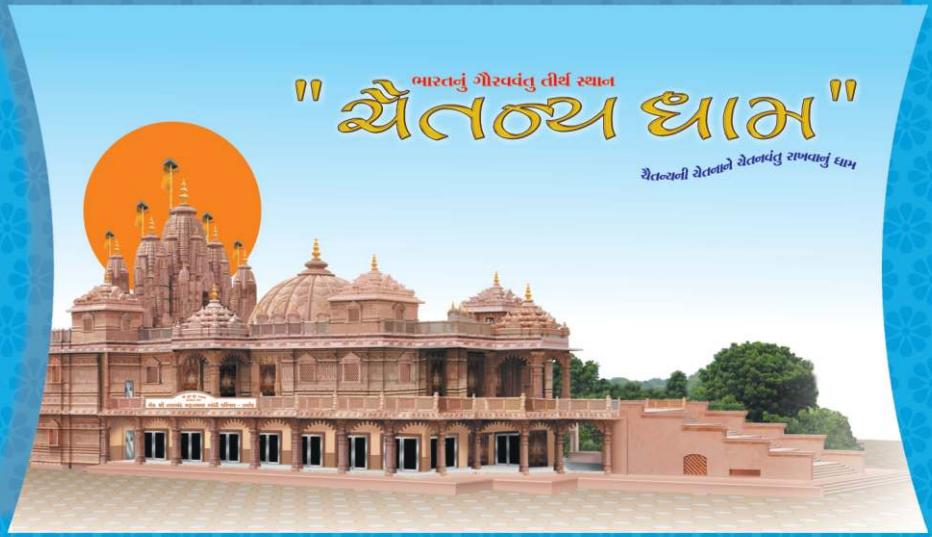


Devanshi Graphics - Kudasan-9624043356

ભારતનું ગૌરવવંતુ તીર્થ સ્થાન

"ચૈતન્ય ધામ"

ચૈતન્યની ચેતનાને ચેતનવંતુ રાખવાનું ધામ



अहो.... शाश्वत् तीर्थ स्वरुप शुद्धात्मा की आराधना का उत्साह जाग्रत होने पर ही तीर्थवन्दना सार्थक होती है ।

चिलोडा-हिंमतनगर नेशनल हाईवे नं. ४८,

मु. पो. धणप, जि. गांधीनगर

Mo.94092 74139 | Email : chaitanyadham@gmail.com

Website: www.chaitanyadham.com